THE WISE SAYINGS OF

# LALESHWARI

(LALLA - VAKYANI)

HINDI — ENGLISH EDITION

**PART I.**

S. N. CHARAGI,
B. A., L. T.
Srinagar, Kashmir.

The wise sayings
of

# LALESHWARI

(Lalla-Vakyani)

Hindi-English Edition

PART I.

*By*

S. N. CHARAGI B. A., L. T.

*Srinagar, Kashmir.*

Printed & published
by
TRUST PUBLISHING HOUSE
SRINAGAR.
*AT*
K. STANDARD PRESS SRINAGAR

1st. Edition 1000 1996 Price. Annas four.

# PREFACE

It is perhaps the first time in the history of Kashmir Literature that the philosophic and the spiritual works of Laleshwari, the great hermitess of Kashmir, better known as Lal Ded, are made available to the public both in Hindi and Urdu. The precious sayings of Lal Ded, the heroine of ancient religious culture in Kashmir, are a treasure of immense value for all. I consider myself very fortunate in having been able to collect a large number of her sayings in addition to those already published by Sir George Grierson, Dr. Lionel D. Barnett, Sir Richard Temple P. Anand Koul and Bhaskaranand's commentary published by the Research Department of the Kashmir Government. The sayings already current have been included in my four volumes, with an addition of over 240 new sayings, which lay hidden and unexplored so far. I must express my thanks to all friends who have been very kind and liberal in helping me in the collection of the old manuscripts of these spiritual jewels. Among the many friends who helped me besides getting old manuscript copies, with their valuable advices and expression of ideas on the meanings of the mystic sayings, may be mentioned the names of Pt Makund Ram of Chandragam, Swami Vidhadhar Ji Maharaj, Pt. Nila Kanth Sahib Wanchoo and Pt. Prithvi Nath Sahib 'Pushp'. No stone has been left unturned in making a thorough search throughout the length and

breadth of Kashmir Valley and whatever sayings have been procured are placed before the kind readers with a humble appeal to kindly favour me with any additional sayings that they may be able to supply and make suggestions for the improvement of the publications which shall be thankfully received and incorporated in the second edition.

S. N. Charagi.

अकुय ओंकार युस नाभि धरे
कुम्बय ब्रह्माण्डस स्वम गरे ।
अकुय मन्त्र युस च्यतस करे
तस सास मन्त्र क्याह् ज़न करे ॥ १ ॥

एक ओंकार को जिसने नाभिस्थान में धारण किया, अपने आपको जिसने ब्रह्माण्ड के समान समझा,एक ही मन्त्र 'ॐ' का जिसने चिंतन किया– उसको हज़ार मन्त्र से क्या काम है ? ॥

He from whose navel proceeds the one syllable of Aum, he who considers himself equal to the whole universe, he who bears in mind this one spell Aum' —— to him a thousand spells are of no good.

अब्यांसी सविकास लय वथू
गगनस सगुण म्यूल समिच्रटा ।
शून्य गोल तु अनामय म्वत्
युहुय उपदेश छुय भटा ॥ २ ॥

योगाभ्यास से संसार का प्रपंच ब्रह्म में लय हो जाता है, मानो सगुण शून्य अर्थात् निर्गुणमें लीन होजाता है शून्य भी जब विलीन होजाता है तो अनामय परमात्मा ही शेष रहता है – हे मनुष्य (ब्रहमण) सच्चा उपदेश यही है ॥

When by practices of Yoga the visible becomes invisible, the universe merges within the ether, then every-thing having gone to absorption there remains only the Supreme Being. This is, O Brahman, the true doctrine.

हासा बोल परिनम सासा
म्यं मनि वासा खेद् ना ह्यये ।
युद्वय शंकर बखच आसा
मकुरिस† स्वासा° मल क्याह प्यये ॥ ३ ॥

मुझे कोई मुंह हज़ार गालियां सुना दे मेरे मन में खेद् न होगा। यदि मैं शंकरभक्त हों। भला आईने पर मैल जमकर उसका कुछ बिगडता है ? ॥

Anybody may jeer me a thousand times, pain will never find abode within my heart. If I am a devotee of Shiva, how can a mirror be fouled if a few ashes fall upon it ?

अज़ान§ आय तु गछुन गछे
पकुन गछे दिन क्योह राथ ।
योरय आय तूर्य गछुन गछे
केंह न तु केंह न तु केंह न तु क्याह ॥ ४ ॥

अनादि से हम आए हैं और अनन्त में हमको जाना चाहिए। दिन और रात हमें इसी की ओर चलते रहना चाहिए। जहां से हम आए वहीं जाना भी चाहिए। कुछ नहीं कुछ नहीं यह संसार कुछ नहीं ॥

We came and came and have to go back. We must move on night and day. Where from we have come there must we go. It is nothing, it is nothing, nothing, nothing.

---

† Looking-glass ° ashes § Infinite or the beginningless.

अंसिय आंस्य तु अंसिय आसव
असिय दोर कर्य पतुवथ ।
शिवस सोरि नु ज्योन त मरुन
रवस[‡] सोरिय नु अतुगथ[†] ॥ ५ ॥

भूत में हम ही थे और भविष्य में हम ही होंगे। हमने ही अनादिकाल में दौर किए हैं। शिव का जीना मरना कभी समाप्त न होगा । न ही सूरज का उदय होना और अस्त होना रुक जाएगा ॥

We existed in the past and we shall exist in the future, we had pleasant times in the past. But death will never cease for Shiva and rising and setting will never cease for the Sun.

आयस ति स्योदुय त गछ़ ति स्योदुय
स्यंदिस होल म्यं कर्यम क्याह ? ।
बं तस आंसुस आगरय व्यंदुय[§]
व्यदिस तु व्यान्दिस[°] कर्यम क्याह ? ॥ ६॥

आई भी मैं सीधी ही और जाऊंगी भी सीधी ही मुझ सीधी सादी का कोई कुटिल क्या बिगाड सकता है ? मैं आगे से ही उससे परिचित थी। मुझ परिचय वाली और प्रेमी को वह क्या करसकता है ?

I came straight and shall go straight. I am straightforward, what can a crooked person do to me? I was known to Him from the very begining what will do He to me ,His acquaintance and dear one.

‡ The Sun. † Rising & setting. § Known. ° Dear one

अजपा गायत्री हम्स हम्स‡ जंपिथ्
अहं त्रांविथ सुय अद रठ ।
यंम्य त्रोव अहं सुय रुद पानय
ब न आसुन छुय उपदेश ॥ ७ ॥

गायत्री मंत्र का प्रत्येक सांस में जाप करो, अहं भाव को त्यागो और 'सो' अर्थात उस तत्वरूप ब्रह्मको ध्याओ जिस ने अहंभाव को त्यागा वही जीवित रहा 'मैं हूं' इस भाव को मिटोना ही सबसे बडा उपदेश है ।

Recite the Gayatri Mantra in every breath. Leave all attachment to the self and hold Him fast He only remains who leaves love for the self. The true doctrine is to leave self-love or 'I am'.

आयस कमि दिशि तु कमि वते
गछ़ह कमि वति कव ज़ानु वथ ।
अन्तिहि दाय§ लगि म्यं तते
छम छनिस फोकस कुस सन सथ ॥ ८ ॥

मैं किस देश से आई और किस रास्ते से, मैं किस रास्ते जाऊंगी और कैसे राह को पाऊंगी ? अन्तमें मुझे वहीं अच्छा उपदेश मिलेगा । मेरे इस शून्य सांस की क्या सत्ता है ? ॥

1 came from what quarter and by what road ? whence shall I go and how shall I know the way. In the end, I shall gain good counsel there, what substance is there in an empty breath ?

‡ In every breath § Good counsel

आयस वते गयस न वते
स्यमन्ज सोथे लूस्तुम दोह ।
चन्दस वुछुम हार न अथे
नावु तारस दिमु क्याह बोह ॥ ६ ॥

मैं ठीक रास्ते तो आई, पर ठीक रास्ते पर नहीं चली, सत्थू पर ही सूर्यास्त हुआ, जेब में हाथ डाला तो कोडी वी न पाई भला नाविक को पार लेजाने की क्या उज्रत दूं ?

I came by a way but did not return by that way. The day failed while I was yet walking on the embankment. I searched my pocket but could not find a single cowry. What shall I pay for the ferry-fee?

आगरय ग्रोजुम
वुगुवानि‡ डूर सोगुम ।
ओरके कृपाथि जगथ वुज़ुम
योर ति केंह म्यं सोरुम नो ॥१० ॥

मैं स्रोत अर्थात मुम्बा से ही गरजती रही, मैंने सैलाब के पानी से खेती को सींचा, परमात्मा की कृपा से मेरे मनमें जगत का ज्ञान उमड आया, अपनी ओर से तो मैं ने किसी वस्तु की भी धारणा न की ॥

I roared as a river does at the source and I irrigated the field with flood-water. By the mercy of the Supreme Being the world got awakened for me and as for myself I did not meditate on anything.

‡ The flood-water which does not last long.

असे प्वन्दे ज़ामे ज्वसे
न्यथुय करे स्नान तीर्थन ।
वहर्य वहरस नोनुय आसे
निशि छुय तु परज़ुनावतन ॥ ११ ॥

जो हंसता है, छींकता है, अंगडाई लेता है, खांसता है, नित्य तीर्थ स्थानों पर स्नान करता है और साल भर प्रकट रहता है, वह तेरे पास ही है, उसे पहचान तो सही ॥

It is He who laughs, sneezes, yawns, coughs. bathe ceaselessly at holy places and remains visible through out the year. Recognize Him, He is near you.

अन्दरिय आयस चन्दरय गारान†
गारान आयस हिहथन हिहथ ।
चुयय नाराण चुय अथु धाराण
चुयय माराण यिम कम विहथ ॥ १२ ॥

अन्दर से मैं चाँद को खोजते खोजते बाहर आगई और अपने जैसों को ढूंढती रही, अनुभव हुआ कि तू ही नारायण है और तू ही भिक्षुक के रूप में हाथ पसारता है, तू ही मारनेवाला भी है, तेरी यह लीला कितनी अद्भुत है ॥

I came out from the inner soul searching the moonlight. I tried to find out like ones. O, Narayan! You are all and You stretch forth your hand. You are also the destroyer and what are all these sports?

† Making a thorough search.

आंसुस कुनिय तय सांपनिस स्यठा
नज़दीख आंसिथ गयस दूर ।
ज़ांहिर बांतिन कुनुय ड्यूठुम
गयम ख्यथ च्यथ ५४ चूर ॥ १३ ॥

मैं केवल थी और अनेक होगई; नज़दीक होकर भी दूर हो गई, अन्दर और बाहर मैंने एक ही ब्रह्मको देखा, चोपन चोर मुझे खा पी कर चले ॥

I came all alone and became many. I was near Him and have become very distant. I found Him everywhere visible and invisible. Having eaten and drunk to the fill I have been deceived by fifty-four thieves.

अन्दर आंसिथ न्यंबर छोंडुम
पवनन रगन कंरनम सथ ।
ध्यानु किञ दय ज़ागि कीवल ज़ोनुम
रंग§ गव संगस° मीलिथ क्यथ ॥ १४ ॥

अन्दर होते हुए भी मैंने उसे बाहर ढूंढा, पवन ने मेरी रगों को तसल्ली दी; और ध्यान से मैंने जगतभर में परमात्मा को केवल जाना, यह सारा प्रपंच(रंग) ब्रह्म में लय ( मीलित ) हो गया ॥

Though within I searched for Him without. The vital airs satisfied my veins. Through meditation only I found God alone pervading the whole world. The world got merged into the union with the Supreme Being.

---

§ The world ° The Supreme Being

ओरु ति पानय योरु ति पानय
पोत वाने रोजि न जाह ।
पानय गुप्त तु पानय ज्ञाणी
पानय पानस मूद नु ज्ञाह ॥ १५ ॥

उधर भी वह स्वयं ही है और इधर भी स्वयं ही है, कभी भी वह पीछे नही रहनेका, आप ही वह गुप्त ( छिपा ) है और आप ही ज्ञाणी (अपने आपको जानने वाला) है, स्वयं वह कभी मरा नही अर्थात् वह अमर है

That side He is Himself and this side too He is Himself. He will never remain behind. He is Himself invisible and Himself Omniscient. He is Omnipotent and never dead to Himself.

ओरु ति पानय योरु ति पानय
पानय पानस छुनु मेलान ।
पृथम अच्युस नु मुलेह दानिय
सुय हा मालि चुय आश्चर ज्ञान ॥ १६ ॥

उधर भी आप ही है और इधर भी आप ही है, फिर भी आप ही अपने को नही मिलता, उसमें तो ज़रा-भर भी नहीं समा सकता, हे तात (मनुष्य) ! उसी आश्चर्य को तू विचार ॥

That side He is Himself and this side too He is Himself. He Himself does not join with Himself. At first not even a grain will penetrate into Him. That, O man ! is a wonder, meditate upon it.

उोंकार यॅलि लयि आ़नुम
वुहिय कोरुम पतुन पान।
श्यं वतु त्रॉविथ तु सथमार्ग रोटुम
त्यॅलि लल बं वांचुस प्रकाशस्थान ॥ १७ ॥

उोंकार को जब मैंने अपने आपमें लय किया; अपने शरीर को भस्म किया; और छेः रास्तों को तय करके सातवें अथवा सत्य के मार्ग को ग्रहण किया तो तब ही मैं लल प्रकाश के स्थान पहुंची ॥

I brought 'Aum' under my control by concentration. I burnt my body like a blazing coal. I gave up the six* paths and got to the seventh.° Then I Lalla reached the place of illumination.

कवु छुख दिवान अनिनुय बछ़
त्रुकय छुख़ अन्दरुय अछ़।
शिव छुय अत्य तय कुन मो गछ़
सहज़ु कथि म्यानि करतो पछ़ ॥ १८ ॥

क्यों व्यर्थ ही हाथों से टटोल रहा है? यदि तू बुद्धिमान् है तो अपने अन्दर प्रवेश कर, शिव तो वहीं है कहीं और उसकी खोज में न जा, हे ब्रह्मण मेरी इस बात पर तू विश्वास तो कर ॥

Why are you feeling with your hand like a blind person? If you are wise get inside. Shiva is there, do not go anywhere else. O. Brahman ! believe my word.

---

* Six chakras; or wrath, lust, desire, arrogance, dellusion and jealousy. ° The seventh and the highest station; or the truthful persons.

कुस हा मालि लूसुय नु पकान पकान ?
कुस हा मालि लूसुय न वोल्गान§ सुमेरु?
कुस हा मालि लूसुय नु मरान तु ज़्यवान ?
कुस हा मालि लूसुय नु करान न्यन्द्था? ॥१९

तात! कौन चलते २ नहीं थका? कौन सुमेरु को लाँघते २ नहीं थका? कौन मरते और जन्मते नहीं थका? कौन निन्दा कर २ नहीं थका?

Who, O man, is not tired of going and going? Who, O man, is not tired of going round Sumeru? Who, O man, is not tired of dying and being reborn? Who, O man, is not tired of backbiting?

ज़ल हा मालि लूसुय नु पकान पकान
सिरियि लूसुय न वोल्गान सुमेरु ।
चन्द्रम लूसुय नु मरान तु ज़्यवान
मनुष्य लूसुय नु करान न्यन्द्था ॥ २० ॥

तात! जल चलते २ (बहते २) नहीं थका, सूरज सुमेरु को लाँघते २ नहीं थका, चन्द्रमा मरते और जन्मते नहीं थका, और मनुष्य निन्दा करते २ नहीं थका।

Water in a river is not tired of going and going (flowing). The Sun is not tired of going round Sumeru. The Moon is not tired of dying aud being reborn and man is not tired of backbiting.

---

† To cross or go round.

कुस मारितय कसू मारन ?
मारि कुस तय मारन कस ? ।
युस हर् हर् त्रांविथ गर् गर् करे
अड् सुय मरे तु मारन तस ? ॥ २१ ॥

कौन मरेगा और किसको मारेंगे ? मरेगा कौन और मारेंगे किसे ? जो हर २ अर्थात् शिवके चिन्तन को छोड घर के धन्धों में फसेगा वही मरेगा और उसी को मारेंगे ।

Who will die and whom will they kill? Who will kill and who will be killed? He who leaves Shiva and increases his attachment to home, he will die and he will be killed.

कुस पुश तांय कस् पुशाञी
कम कोसम लांगिज़्यस पूज़े ।
कमि सर् गोड दिज़्यस जलधांनी
कव्सन् मन्त्र शंकर वुज़े[†] ॥ २२ ॥

कौन माली है और कौन है मालन ? कौन से फूलों से उसकी पूजा करें ? किस झील से उस पर जल चढाया जाय और किस मन्त्र से शंकर का ज्ञाग्ग हो ? ।

Who is the man and who the woman who bring flower wreathes? What flowers should be offered to Him in worship? From what lake should water be brought to be poured over his image. By what mantra will Shiva Himself be manifest?

† Awake, become manifest.

कुष पोष तिल दीफ जल ना गछ़े

युस सद्भाव गुरुकथ मनि ह्यये ।

शम्भुहस स्वरि पननि यछ़े

सथ दपिज़े सहज़ा क्रय ॥ २३ ॥

कुशा, फूल, तिल, दीफ, और जल की उसे ज़रूरत नहीं, जो सच्चे भाव से शम्भूका स्मरण करे, उसी की क्रिया को सच्ची क्रिया कहना

Kusha grass, flowers, sesame seed, lamp and water are not wanted, by him who has full confidence in the word of his guru. He who meditates of his own longing upon Shiva, that is the true action and he will attain bliss.

मन पुश तांय यछ़ पुशानी

भावुक्य कोसम लांगिज़्यस पूज़े ।

शीश रस गोड दिज़्यस ज़लधानी

छ़वपि मन्त्र शंकर वुज़े ॥ २४ ॥†

मन है माली और इच्छा है मालन, भावना रूपी फलोंसे उसकी पूजा करना, चन्द्रमा का अमृत रूपी रस का ही जल उस पर चढाना और मौनरूपी मन्त्र से ही शंकर को अपने अन्दर जगाना ॥

Mind is the man who brings wreaths of flowers and desire is the woman who brings the wreaths of flowers. Offer the flowers of devotion to Him. Pour over his Image the nector of the moon. Shiva will Himself be manifest by the mantra of silence.

† No. 22 is the questionaire and No. 24 is the answer.

गुर शब्दस युस यछ़ पछ़ भरे
ज्ञान वगिह रटि च्यथ तोरगस† ।
इन्द्रय शोमारिथ आनन्द करे
अदु कुस मरितय मारन कस? ॥ २५ ॥

गुरु के शब्द पर जो पूरा विश्वास धरे, ज्ञानरूपी लगाम से जो चित्तरूपी घोडे को रोके और जो इन्द्रियों का शमन करके आनन्द पाए तब भला कौन मरे और किसको मारे?

He who has love and confidence on the word of the Guru, he who controls the horse of mind by the bridle of knowledge, he who enjoys peace having subdued his senses, then who will die and whom will they kill?

केंह छिय न्यन्दरि हातिय वुदिय§
केंचन वुदथन न्यसर प्यथि ।
केंह छिय स्नान करिथ अपूतिय
केंह छिय गृह बंजिथ ति अक्रयि ॥ २६ ॥

कई तो निद्रालू होते हुए भी जाग्रत ही होते हैं और कई तो जाग्रत हुए भी निंद्रत ही हैं, कई तो स्नान करके भी अपवित्र ही हैं और कई तो ग्रहस्थ होते हुए भी अक्रिय (क्रया के बन्धनों से मुक्त) हैं ।

Some though asleep are awake and others though awake have gone to slumber. Some are unclean althogh they have bathed, others are free from action although they are busy in houshold cares.

† Horse § Awake

छ़ाडान लूसुस पांनिय पानस
छ्यंपिथ ज्ञानस वोत नु कुंह ।
लय करमस वांचुस मय खानस
बंर्य बंर्य बानु तु.च्यवान नु कुंह ॥ ३१ ॥

अपने आपको ढूंडते २ मैं तो हार गई, उस गुप्त ज्ञान तक कोई न पहुंचा, पर जब मैंने (अपने आपको उसी ब्रह्म में) लय किया तो मैं (ऐसे) अमृतधाम में पहुंची जहां प्याले तो भरे पडे हैं और उन्हें पीता कोई नहीं।

I searched for myself and wearied myself in vain, but no one has reached that hidden Knowladge. I then absorbed myself in it and reached the abode of nector. I found there many filled jars but none drinking from them

ज़ञन ज़ायेय रुत्य[†] तय कुतिय[§]
केरिथ वुदरस बहु क्लेश ।
फीरिथ द्वार भज़ीन वांत्य तोतुय
शिव छुय क्रूठ तय चेन उपदेश ॥ ३२ ॥

जननी से अच्छे और बुरे दोनों उत्पन्न हुए, दोनों ने उस के पेट को बडीपीडा पहुँचाई, संसार में फिर कर हम पुनः उसी स्थान पर पहुंच गए, शिव की प्राप्ति कठिन है इसलिए इस उपदेश को जान लो।

Good and bad were all born from their mother causing many a pang to her (mothers) womb. Again and again they came there at the door Shiva is very difficult to be found, therefore meditate on this doctrine.

† Good or comely § Bad or full of sap.

नाथ ना पान ना पर ज़ोनुम
सदा यि बोदुम† अकुय देह ।
चय बो वो चय म्युल ना ज़ोनुम
चह कुस बो कस छुह संदेह ॥ २९ ॥

नाथ! मैंने न अपने आपको जाना न पराये को, सदा ही शरीरकी एकताको ही दृष्टिमें रखा, 'तू–मैं' और 'मैं–तू' ऐसा मिलाप मैंने नहीं जाना, तू कौन है और मैं कौन? यही तो मेरे दिल में संदेह है ।

Lord! I have not known myself or the others I always loved this body alone. That 'You are I' and 'I am You', and these are joined together, I did not know. I doubt as to who I am and You are.

चह ना बो ना ध्येय ना ध्यान
गय पानय सर्वक्रिय मशिथ ।
अन्यव ड्यटुख केंह ना आनिय
गय सत लय पर पंशिथ ॥ ३० ॥

न तू है न मैं, न ब्रह्म है न ध्यान! सब क्रियायें स्वयं ही भूल गईं, अन्धों को तो कुछ भी नहीं सूझा, पर सज्जन पर (ब्रह्म) को देखकर (उसी में) लय हो गए

There is no You and no I, no object of contemplation nor even contemplation. All actions have been lost in forgetfulness. The blind folk did not find any meaning in this, but when the wise saw the Supreme they became lost in Him.

† Lored or mortified

**कन्दयव गृह त्यांज़ि कन्दयव वनवास**
**युथुय छुख तु त्युथुय आस ।**
**मनस धैर्य रठ सांपज़ख़ सुवास**
**क्या छुय मलुन सूर तय सास ॥ २७ ॥**

कई शरीरधारियों ने घर त्यागे कइयों ने वन, तू जैसा है वैसा ही रह, मन में धीरज धर कर ही तू कृतार्थ होगा, राख और मट्टी मलने की ज़रूरत ही क्या है।

Some have abondoned home and some have abondoned hermitage. You remain as you are. Bring your mind under subjection and you will attain peace. What use is it to rub ashes and clay on your body.

**गगन छुय भूतल छुय**
**छुय दयन पवन तु राथ ।**
**अर्घ चन्दुन पोष पोज़ छुय**
**छुय सकल तांय लांगिज़िय क्याह ? ॥ २८**

आकाश तो तू ही है, पृथ्वी भी तू ही है, दिन पवन और रात भी तू ही है, अर्घ, चन्दन, फूल, और जल भी तू ही है, तू ही सब कुछ है तो भला तुझ पर चढायें क्या ?

You are heaven and You are the earth. You are the day, the air, and the night? You are the rice, the sandal, the flowers and the water, You are everything and what can I offer to you.

दमादम करमस दमनहाले
प्रज़ल्योम दीप† तु ननेयम ज़ाथ ।
अन्दर्युम प्रकाश न्यबर छोटुम
गटि रोटुम तु करमस थफ ॥३३॥

धीरे धीरे मैं ने साँस को अन्दर ही रोके रखा तो ( मेरे अन्दर ज्ञानका ) प्रज्वलित हो उठा और मेरी असलीयत प्रकट हो गई । अन्दर का प्रकाश मैं ने बाहर छिटका दिया और अंधेरे में ही मैं ने उसे पाया और पकडे रखा ॥३३॥

Slowly I stopped my breath inside. By doing so the lamp of my knowledge blazed up in me and to me real nature became known. I brought forth my inner light and in the darkness I caught hold of the reality and held it fast. 33.

दीव वटा देवर§ वटा
हेरि बोन छु एकवाठ ।
पूज़ कस करख हूतु बटा ।
कर मनस तु पवनस* संघाठ ॥३४॥

देव ( की मूर्ति ) भी पत्थर की है और देवालय भी पत्थर का ही है, ऊपर से नीचे तक एक ही वस्तु अर्थात पत्थर है । रे मूढ ब्रह्मण ? तू किसको पूजेगा तू [ केवल ] मन और आत्मा को एक कर ॥३४॥

An idol is made of stone and a temple too is made of stone. Both above and below ( the temple and the idol ) there is one stone. Which of those would you worship, O foolish Pandita ? Bring about union between the mind and the soul.

†Lamp of knowledge § Temple * Soul.

दिन छ्यज़ि तु रज़न† आसे
भूतल गगनस कुन विकासे ।
च'न्दुर्यराह ग्रोसुन मावसे
शिव पूज़न ग्वाह चित्त आत्मसे ॥३५॥

दिन डूबेगा और रात आयेगी, भूमि आकाश की ओर फैलेगी अमावस्याको राह को चन्द्रमा ने ग्रस लिया । अपने विचार से आत्मा को जान लेना ही शिव को सची पूजा है ॥ ३५ ॥

The day will be extinguished and the night will come. The surface of the earth will extend towards the heaven. On Amawasi the moon swallowed up the eclipse. To understand the real self through the illumination of mind is the true worship of Shiva. 35 .

द्वादशान्त मण्डल यस देवस थ'जुय
नासिक पवन अनाहत रव ।
स यस कल्पन *आन्तह च'जिय
स्वयम देव तु अर्चुन कस ॥३६॥

ब्रह्मरंध्रको जिसने शिव का स्थान जाना, प्राणवायुके (प्रवाहके साथ २ जिसने अनाहद को सुना , और जिसकी वासनाएँ अन्दर ही अन्दर मिट गईं — वह तो स्वयं ही देव है , शिवरुप है फि पूजा काहे को ? ॥ ३६ ॥

He who recoginzes Brahma Rundra as the abode of the Supreme, he who understands the sound of breath rising from the heart into the nose, he whose thoughts about his own self have fled away , he recognizes himself as the Supreme therefore whom should he worship ? 36.

†Night, darkness: vanity, * Thoughts about ones own self

प्रथय तीर्थन गछान सन्या'स्य
ग्वारीन स्वदर्शनु म्युल ।
चित्ता पीरिथ मव निष्*पथ आस
डेशख दूर द्रमुन न्यूल ॥३७॥

सन्यासी लोग हर तीर्थ पर सुदर्शन (परमात्मा) की तलाश में जाया करते हैं। रे चित्त ! (मन) तू निशपथ न हो --- भटक न जा। दूर का सब्ज़ा गहरा नीला दिखाई पढता है ॥३७॥

An ascetic wanders from holy place to holy place in search of the union between himself and the Supreme. O my soul ! study through the mystery and be not unbelieving that God is near you. The further you look the more green will seem the bed of grass .37 .

मकुरस ज़न मल चोलुम मनस
अदुह म्य' ल'बुम ज़नस ज़ान ।
सुय'लि ड़यूठुम निशि पानस
सोरुय सुय†ता'य बो नो केंह ॥ ३८ ॥

मेरा मन दर्पणकी तरह निर्मल हो गया और सारा मल दूर हुआ। तब मैंने आत्मा का परिचय पाया और लोगों में विख्यात हुई। उसीको जब मैंने अपने पास(अपने ही रुप में) देखा तो ज्ञात हुआ कि सब कुछ वही है और 'मैं' कुछ भी नहीं ॥ ३८॥

The impurity of my mind fled away as dust from a mirror. Then did I realize the self and gained reputation among the people. When I saw that He was near me, then I realized that all is 'He' and 'I' am nothing.38.

* Go astray. †The supreme.

ललबो लूसस छ़ाढान तु ग्वारान[§]
हल म्य' करमस रसान श'तिय।
वुछुन हयोत्मस ता'य डीठिमस बरन
म्य'ति कल *गनेयि ज़ि ज़ोगुमस त'तिय॥३६॥

मैं लल (परमात्मा को) खोजते २ थक गई। मैंने तो सैंकडों प्रयत्न किए। जब मैं ने(उसके निवासपर) उसको ढूंढा तो किवाडों को बन्द पाया। परन्तु मेरी उत्सुकता बढती गई और मैं वहीं धरणा मार बैठी ॥३६॥

I Lalla wearied myself seeking and searching for Him. I laboured hard beyond my strength.I began to look for Him but found the doors bolted. In my longing for Him became fixed and I patiently waited there to gaze upon Him. 39 .

मल वोन्दि ज़ालुम
जिगर मोरुम।
त्यलि लल नाव द्राम
यलि द्ल्य त्रा'विमस त'तिय ॥ ४० ॥

दिलकी मैल को मैंने जला दिया और मनको मैंने दमन किया। तब मेरा नाम लल प्रसिद्ध हुआ जब मैं वहीं (उसके आगे) धरणा मार बैठी ॥ ४० ॥

I burnt all foulness from my soul and I slayed my heart full of desires. Then did my name of Lalla spread abroad, when I sat just there with bended knee .40.

§Searching * Longing, keen desire,

य'म्य लूभ मनमथ मद्ँ मोरुन
तिमय मा'रिथ तु लोगुन दास ।
य'मिय सहज़ ईश्वर गोरुन
त'मिय सोरुय व्युन्दुँन* सास†॥ ४१ ॥

जिसने लोभ , काम और अहंकार को वश किया और अपने आप को दासरूप में समझा । जिसने 'सहज़' ईश्वरकी खोज की, उसी ने सारे संसारको मट्टी ( के बराबर )समझा ॥ ४१ ॥

He, who has slain desire, lust and pride and after slaying these highway robbers, has made himself the servant of all, has searched out the real Lord , he has found out that every thing in this world is ashes. 41 .

यथ सरि सर्षप–फल ना व्य'चे§
तथ सरि सकलो पोञ च्यन् ।
मृग सृगाल गा'ण्डय ज़लहस्ती
ज्यन ना ज्यन त ता'तिय प्यन ॥ ४२ ॥

इस सर में सरसों का बीज तक नहीं समा सकता, तो भी इस में से सभी जीव पानी पीते हैं । इस में मृग, सयार, गेंडे और समुद्री हाथी जन्मते हैं और गिर मरते हैं ॥ ४२ ॥

It is a lake so tiny that a mustard seed can not find any room in it, yet from it all creatures drink water. In this lake do deer, jackals, rhenoceros and sea elephants keep falling and falling as soon as they are born. 42 .

---

* Has understood † Ashes § Can be accomodated.

चलु चिलु वोन्दस भय मो भर
चांञ च्यन्त करान पानय अनाद† ।
च्य' को ज़नन्य§ ख्योद हरिय कर
केवल तसुन्दुय तोरुक नाद ॥ ४३ ॥

हे चन्चलचित्त ! दिल में भय को स्थान न दे । परमात्मा स्वयं ही तुम्हारा चिन्तन करता है । तुझे किसतरह ज्ञान होगा और कब तेरी क्षुधा दूर होगी ? केवल उसीके बुलावे (अनुग्रह) की देर है ॥ ४३ ॥

Ah restless mind! have no fear in thy heart. God Himself is taking your care. How shall you attain Knowledge and when shall hunger fall from you? Depend therefore only upon Him for salvation and wait for His call. 43.

गाल गडिन्यम बोल पडिन्यम
दंप्यन्यम तिह यस युथ रोचे ।
सहज़* कुसुमव पूज़ करिन्यम
बो अमलांञ कस क्याह म्वचे ॥ ४४ ॥

चाहे कोई मेरी निन्दा करे चाहे प्रशंसा । जिसे जो पसंद आए सो कह डाले । फूलोंसे चाहे भले लोग पूजा भी करें (मुझे क्या?) मैं तो अम्लान (सुखदुखसे न्यारी) हों किसी को ऐसा करने से क्या लाभ ? ॥ ४४ ॥

Let any one jeer or cheer me. Let all say what they like. Let good persons worship me with flowers. I am pure, what can they gain by doing this. ? 44.

† The beginingless. §By what means *Good persons

नाभिस्थानस च़ित जलवंजी
ब्रह्मस्थानस शिशिरून मुख़।
ब्रह्माण्डस छय नद वहवंजी
तवय तुरून हूह हाह गवतोत॥ ४५॥

नाभिस्थान में तो दधकती हुई (जठर) अग्नि है और ब्रह्मस्थान में ठंडक। ब्रह्माण्डसे प्राण अपानरुपी नदी बहती रहती है। इसी लिए "हू" सर्द है और 'हा' गर्म॥ ४५॥

The region of the naval is very hot by nature and the region of brahma rundra icy cold. From brahma-rundra proceeds the flowing river. Therefore huh is cold and hah is hot. 45.

चिदानन्दस ज्ञान प्रकाशस
इमौ च्यूनुय तिम जीवन्ती मुक्ती।
विषमिस† संसारनिस पाशस
अबुद्धयव गणडशत् शत दितिय॥ ४६॥

चिदानन्द और ज्ञानस्वरुप ब्रह्म को जिनहोंने चीन्हा, वह जीवनमुक्त हैं। संसाररुपी विषम(कठिन)फांसी में मूर्खों ने सैंकडों गांठ लगा दिए॥४६॥

They who have gained experience of the Knowledge light of that self which is compact of pure spirit and of bliss, they while yet alive have gained release from births. But the ignorant people have added hundreds of knots to the tangled net of continued rebirth. 46.

† Intricate, tangled § The ignorant people.

त्रयि न्यंगि सराह सरिय सरस
अकि न्यंगि सरस अर्शस† जाय।
हरमुख कौंसर अख सुम§ सरस
सति न्यंगि सरस शून्याकार॥ ४७॥

तीन वार मैंने सरको भरा हुआ पाया, एक वार उसकी जगह आक
पर देखी। एक वार तो हरमुखसे कौंसरनाग तक एक पुल भी
देखा। सात वार संसार को शून्यमें लय होते देखा॥ ४७॥

I found three times a lake overflowing. Once
remember having seen the lake in the firmament
remember having seen over a bridge from Harmu
to Kaunsar. I remembar seven times having seen
whole universe a void. 47.

तन्त्र गल्य तांय मन्त्र म्वचे
मन्त्र गोल तांय म्वतुय चित्त।
चित्त गोल तांय केंह ति ना कुने
शून्यस शून्याह मीलिथ गव॥ ४८॥

तन्त्र गलने पर मन्त्र रह जायेंगे। मन्त्र भी लय होंगे तो चित्त
जायेगा। चित्त का भी विलय होगा तो कुछ भी नहीं रहेगा। शून्य
में मानो शून्य मिलजायेगा॥ ४८॥

Holy books disappeared and then only the mys
formula remained. The mystic formula disappea
and the mind remained. When the mind disappea
nothing was left anywhere. A void became merge
to the void.

† Heaven. § Bridge.

भान† गोल तांय प्रकाश आव ज़ूने
चन्द्र गोल तांय म्वतुय चित्त ।
चित्त गोल तांय केंह ति ना कुने
गय भूर,भुव:, स्वर मीलिथ क्यथ ॥ ४९ ॥

सूरज अस्त हुआ तो चान्द निकल आया। चान्द भी छिप गया ता चित्त शेष रहा। चित भी लय हुआ तो कुछ न रहा। भू, भुव, स्व: ब्रह्म में लय होगए ॥ ४९ ॥

When the sun disappeared then came the moon-light. When the moon disappeared then only mind remained. When mind too disappeared then nothing was left anywhere. Earth, ether, sky all got merged in to Brahma. 49 .

मूढव डीशिथ तु पंशिथ लाग
ज़ोर तु कोल ओतवोन ज़डरूप्य आस ।
युस यिय दपिय तस त्युथ बोल
सुय छुय तत्वविद्स§ अभ्यास ॥ ५० ॥

सब जानकर भी तू मूर्ख सा रह, देखकर भी अंधा ज्यों रह, सुनकर भी बहरे की चाल रह। तू जडरुप जैसा रह और जो जैसा तुझसे कहे, उसका वैसा मान ले। बुद्धिमान लोग इसी चाल से चलकर (अभ्यास करके) सब तत्व को जानते हैं ॥ ५० ॥

Though you have Knowledge be as a fool. Though you can see be as blind. Though you hear be as one deaf. In all things be as a non - sentient block. What ever anyone may say to you, say the same to him. It is this that is the true practice for obtaining the Knowledge of the basal truths.50.

---

† The sun. § The Knowledge of the basal truths.

अव्यच़ारी पोथ्यन छि हव मालि परान
यिथु तोतु परान[†] 'राम' पंजरस ।
गीता परान तु हीथा लभान
पंरम गीता तु परान छस ॥ ५१ ॥

हे तात ! अविचारी लोग पोथियों को उसी प्रकार पढते है जिस प्रक
पंजरे में तोता राम राम । गीता पढकर वह उसी का वहाना पाते
(दिखावा करते है) । मैं ने गीता पढी है और पढती भी हूं ॥ ५१ ॥

The thoughtless are reading books, O father! just as parrot repeats 'Rama, Rama' in the cage. They re the Bhagwad Gita having a pretext to do so. I ha read the Bhagwad Gita and am still reading it. 51.

आंचार हांज़नि हुन्द् गयाम कनन
नढ्यं[§] छिवु तु हयंयिव मा ।
ति बूज़ लक्यव तिम रूद्य वनन
चेनुन छुवु तु चीनिव मा ॥ ५२ ॥

आचार शक्ति का आवाज़ मेरे कान में आई, यहां सब कुछ नष्वर
इसे न खरीदो । यही(आवाज़) दानाओं ने सुनी और वे कहते रहे
समझना है तो समझलेना ॥ ५२ ॥

The words of the 'Achar shakhti' sounded in my ea that everything here is perishable, donot go,in for i This voice was heard by wise and they said. This is hint, take it and act upon it,52.

† The parrot repeats 'Rama, Rama' without understanding. § Litera lotus-stalk. Here it refers to perishable material world that which not last long.

आंचारि बिचारि व्यचार् वोनुन
प्राण तु रुहन[†] हयायिव मा ।
प्राणस बंज़िथ मज़ा चुहुन
नदुर्य छिव तु हयायिव मा ॥ ५३ ॥

आचारशक्ति ने विचार की बात कही प्राण और अपाण का ध्यान रखना चाहिये। प्राणोंको सेवन करके उनका मज़ा चखो। संसार नापायदार (नष्वर) है, इसमें न फंसो ॥ ५३ ॥

'Achar shakhti' said after due deliberation that one should understand outward & inward vital airs, and by proper practices of the same should see the results. This world is perishable, do not be deluded.53.

इमय श्यं[§] च्यं तिमय श्यं म्यं
श्यामगला च्यं ब्योन टोठ्स छुह ।
इहुय भिन्नाभेद् च्य तु म्यं
चु शन स्वांमी बो श्यांयि मुषिस ॥ ५४ ॥

हे ईष्वर! (नीलकन्ठ) जो छः आपके हैं वही मेरे भी हैं। आप से अलग हो मैं संकट में पडी। आप और मुझ में तो यही भेद है कि आप 'छः' के स्वामी हैं और मैं इन 'छः' की भटकाई हुई हूं ॥ ५४ ॥

As you have six. I too have the same six. With out you, o God of dark blue Throat, I have fallen into misery. This is the only difference between you and me. You are the master of the six, while I have been led astray by the same six.54.

---

† Literally onion & garlick but here translated as breathing in and breathiug out. § Six is reference to five senses and mind.

ख्यथ गॅरिडथ ना शमि मानस
आन्त[†] इमव लाव तिम गय खसिथ ।
शास्त्र बूज़िथ छु यमभंग क्रूरय[§]
सु न प्रोच़ ताय धन्या लूस्थि[*] ।। ५५ ।।

खाने और कपडे पहनने से मन वश नहींहोता । झूठी आशा को जिन्ह ने त्यागा उनही का उद्धार हुआ । शास्त्र को सुनकर जिनको विदि हुआ कि यमराज भयानक है और जिनपर झूठी-आशा देने वाल विश्वास नहीं करता, वही शान्ति प्राप्त करते हैं ॥ ५५॥

By eating and apparelling the mind does not ge peace. Those have gone up, who have given up a false hopes. When they learn from the scriptures tha the fear of yama is terrible and when the lender doe not trust them, then alone they live at peace.55.

ज़ल थमवुन हुतवह ठुरनावुन
उर्ध्व–गमन परिवज़िथ चर्यथ ।
काठ धेनि दुद् श्रमावुन
अन्तिह सकलु कपट चर्यथ ।। ५६ ।।

बहते हुए जल को रोकना, बढती हुई आग को टंडा करना, अप पाओं पर आकाशपर चलना, एक लकडी की गायसे दूध दुहने क प्रयत्न करना - यह सब बातें कपट भरी हैं और व्यर्थ हैं ॥ ५६॥

To stop flowing- water, to cool a raging fire, t walk on ones feet in the sky, to labour at milking wooden cow, are all in the end base jugglery.56.

† False hopes. § Terrible. * At peace.

चित्त तुरग गगनि भ्रमवोन
निमेषि अकि छ़िरिड योजनलछ़ ।
चैतन्य वगि† यम्य नु रटिथ ज़ोन्
प्राण अपाण फुटरिथ परखच्य ॥ ५७ ॥

मनरुपी घोडा गगन में भ्रमण करने वाला है (और) निमेष भरमें लाखों याजन सफर काटता है। यदि मनुष्य इस घोडेको चेतनरुपी लगाम से न रोकता तो उसकी सब इंद्रियां वेकार हो जाती हैं ॥ ५७ ॥

The steed of the thoughts travels over the sky and traverses a hundred thousand leagues in a twinkling of the eye. If a man does not know how to control the horse by the bridle of consciousness, then the wheels(of the chariot)of his outward and inward vital air burn into pieces. 57.

तूरि सलिल§ खव्ट ताय तूरि
हयम्य त्रिगय ब्यन अब्यन विमर्शा ।
चैतन्य रव भाति सब समे
शिवमय चराचर ज़ग पश्या ॥ ५८ ॥

सर्दी ने पानी का रुप छिपा लिया और उसे यख बनाकर तीनरुपों को प्रकट किया। विमर्श (सोच विचार) से देखा जाय तो इन में कोई भेद नहीं । जब चेतन रुपी सूरज इनपर चमकता है तो यह सब समान दीखते हैं और सारा चराचर जगत शिवमय भासता है ॥ ५८ ॥

When the cold obtains mastery over the water, the water is turned into ice or snow. Thus there are three diffrent forms of the same but on deep thinking we find that they are not diffirent. When the sun of consciousness shines then the three become one and all animate and inanimate objects, in fact the whole univere is seen as only Shiva. 58.

† The bridle of consciousness § Water.

कुस बब तय कसु मांजी
कंमी लांजी बांजीबठ ।
कोल्य गछ़क[†] कुहं नो बब कुहं नो मांजी
ज़ानिथ कवु लांजिथ बांजीबठ[§] ॥ ५९ ॥

कौन है बाप और कौन है मां ? किसने तेरे साथ प्रेम किया ? समय आ
पर तुम जाओगे तो न तेरा कोई बाप होगा न माता होगी,
जानकर तुम क्यों प्रेम बढाते हो ? ॥ ५९ ॥

Who is father and who mother? Who made friendship with you? One day you will go and then none is father and none mother. Knowing this why have you contracted friendship with them. 59.

ख्यनु ख्यनु करान कुन नो वातख़
न ख्यनु गछ़ख अहंकारी ।
सोमुय ख्यं मालि सोमुय आसख
समि ख्यनु मुचुरनय बरञन[*] तारी ॥ ६० ॥

बार बार खाने से किसी ठिकाने पर न पहुंचेगा और न खाने से
अहंकारी बनेगा। हे तात। समरीति से खायेगा तो समभाव से रहे
और असली द्वार भी खुल जायगा ॥ ६० ॥

By overeating you will not achieve anything and by not eating at all you will be conceited and you will consider yourself a great ascetic. Eat moderately' o Father! and you will be moderate. By eating moderately the doors will be unbolted for you. 60.

† Die. § Friendship or attacoment. * Doors.

केंचन दित्यथम गुलाल यचय
केंचन ज़ोन्थम नु दिनस वार।
केंचन छुञथम नाल्य ब्रह्म हचय
भगवान चानि गंच नमस्कार ॥ ६१ ॥

कइयों को तो कई सन्तानें दीं, कइयों को देना तूने उचित न समझा। कइयों के गले तू ने ब्रह्म हत्यारुपी पाप की फांसी डाली ! हे भगवन तुम्हारी मायाको नमस्कार है ॥ ६१

To some you gave many sons, for some you did not find the opportune moment for giving a child. Some you haltered with a daughter. O Lord! I adore your greatness. 61.

कन्डयो करख कन्डे कन्डे†
कन्डयो करख कन्डी विलास§
भूगुय मीठिय दितिथ यय कन्डे
अथ कन्डि रोज़ि सूर न तु सास ॥ ६२ ॥

हे शरीरधारी यदि तुझे (हर समय) शरीर की ही लगी रहेगी और इस शरीर को ही तू सजाता रहेगा, इसे म ठे २ भोगोंसे पुष्ठ करता रहेगा तो (याद रख) यह शरीर मट्टी में मिल ही जायगा ॥ ६२ ॥

O. Possessor of body! if you talk of body at every time, if you are busy in adorning your body, if you give sweet feasts to this body, of this body there will remain neither dust nor ashes. 63.

† Body § Adorn.

स्वमनु गारुन† मंज़ यथ कन्डे
यथ कन्डि दपान स्वरुप नाव।
लूभ मूह च़लिय शूभ थियि कन्डे
यथ कन्डि तीज़ तय सोर प्रकाश ॥ ६३

सच्चे मन से उस(ब्रह्म) को इस शरीर में खोज ले। इस शरीर का न
(परमात्म) स्वरप है। लोभ मोह की निवृति पर इस शरीर में शो
आएगी और इस से ज्ञाणका प्रकाश होगा ॥ ६३ ॥

Search Him(God) in this body with a good hea
The name of this body is the Impersonal Supae
Being. When greed and ignorance will be dispell
then this body will acquire beauty, and then w
come the light and lustre of true Knowledge in t
body. 63.

कालन काल जोल युदवय च्यं गोल
वांन्दिय गह वा वांन्दिय वनवास।
जांनिथ सर्व गथ प्रभू अमोल
युथुय ज़ानख त्युथुय आस ॥ ६८ ॥

यदि तूने समय पर मायाजाल का नाश किया तो गृहस्थ और वनव
को समान ही जान। यदिप्रभू की अलौकिक गति सर्वव्यापक जान
तो फिर जैसा जानेगा वैसा ही बनेगा ॥ ६८ ॥

If in course of time you have destroyed or bro
ght under control all your desires, then it is immat
rial whether you live a homelife or a forest life.
you realize that the Supreme Lord is omnipresent an
limitless, then as you know, so will you be. 64.

† Search God.

केंच़न रंञ छय शिहिज बूनी
नेरव न्यबर शुहुल करव ।
केंच़न रंञ छय बरु प्यठ हूनी
नेरव न्यबर ज़ंग स्यंयव ।
केंच़न रंञ छय अद्ल तु वद्ल
केंच़न रंञ छय ज़ाद्ल छ़यय ॥ ६५ ॥

कइयोंकी स्त्रियां चिनार की तरह शीतलस्वभाव हैं, जिनके साये में हम विश्राम कर सकते हैं। कइयोंकी स्त्रियां द्वारपर ठहरे हुए कुत्तेकी तरह हैं जो समीप पाते हो हमारी टांग काट खाते हैं । और कइयोंकी स्त्रियां झगडालू हुआ करती हैं और कइयोंकी तो छेदवाले छप्पर जैसी हैं ॥ ६५ ॥

Some have wives like a shady chinar tree, if one goes out, he can cool himself under the shade. Some have wives like a bitch at the door, if one goes out he shall get his leg bitten. Some have qnarralsome wives always causing confusion and some have wives like the shade of a grass-roof full of holes.65.

आमि पनु सोद्रस नावि छस लमान
कति बोज़ि द्य म्योन म्यति दियि तार ।
आम्यन टाक्यन पोञ ज़न शमान
ज़ुव छुम ब्रमान गरु गछ़ु हा ॥ ६६ ॥

मैं (श्वासोऽश्वासरूपी) कच्चे (नाज़ुक) धागेसे (संसाररूपी) समुद्रमें जीवनरुपी नावको खींच रही हूं। काश! दई मेरी सुनता और मझे पार लंगाता। मैं वैसेही गलती रहती हूं जैसे कि कच्ची मिट्टीकी थालियों में पानी जज़ब होता है । मेरी आत्मा अपने घर जानेके लिए मचल रही है ॥ ६६ ॥

I am towing a boat upon the ocean with an unt-

wisted thread. May God hear me and carry me ove
I slowly waste away as water wastes in goblets of u
baked clay. My soul is in a dizzy whirl,I wish I coul
reach my home. 66

कालिय सथ कोल गछ़न पातासी
अकालिय ज़लमालु वर्षन प्यन ।
मामस टांक्य तय मसकी प्यालि
ब्रह्मण तु च्रांली इकवट ख्यन ॥ ६७॥

कालक्रम से सात कुल पातालमें जाएंगे (नष्ट होंगे) और कलियुग
अकाल वर्षा होगी। ब्राह्मण और चांडाल मिलकर मांस और शरा
का मज़ा लेंगे । ६७॥

The time is coming, when seven generations wi
sink down to hell, when untimely showers of rai
will fall and when brahmans and sweepers will tak
together plates of flesh and cups of wine. 67.

कुनिरय बोज़ख कुनि नो रोज़क
कुनिरन कोरनम हानियाकार ।
कुनुय आसिथ दोन हुन्द जंग गोम
सुय बेरंग† गोम करिथ रंग§ ॥ ६८॥

'एकान्त' का कीर्तन सुनेगा तो कहींका न रहेगा । 'एकान्त' होने
ने तो मुझे कलंकित किया। अकेलो होते हुए भी दो कीजंग हुई
वही निराकार मुझे साकार बनाकर चला गया ॥ ६८॥

If you think of loneliness then you will remai
nowhere. The loneliness has turned me into the univ
erse. Being alone it became the quarrel of the two
That Formless Being went away after givin me a
form (shape) .68.

† Supereme Being. § Body form,

अटनुच सन दि्थ थावन मटन
लूभु बोछि बोलन ज्ञानुच गीत ।
फटय फटय नेरन तिम कति वटन
लकय मालि छख पूर कड पथ ॥ ६९ ॥

(जो लोग) एक जगह से माल छीनकर दूसरी जगह धरते हैं वही लोभ के अंधे ज्ञानके गीत गाते हैं और लोगों को दिखावा करके छलते रहते हैं। भला वह इस संसार में क्या लेंगे? तात! यदि तू प्रबुद्ध है तो इन कामों से बाज़ आ ॥ ६९ ॥

Stealing property at Attan they carry it to Mattan and through excessive craving for greed recite the hymns of religion. They make themselves conspicuous and they can never gain. If you are wise, O, father turn your steps back. 69.

पर तु पान यम्य सोमुय मान
यम्य हिहुय मोन दिन क्योह राथ[†]।
यमिसुय अद्वय मन सोम्पुन
तमिय डयठुय सुरगुरुनाथ ॥ ७० ॥

जिसने अपना आप और पराया एक समझा, जिसने दिनराथको समान समझा। जिसकी दृष्टिमें द्वैतका भाव मिट गया, उसीने गुरुराज शंकर का साक्षात्कार किया ॥ ७० ॥

He who deeems himself and another as the same, he who deems the day and night as alike, he whose miind has become free from duality, he verily has seen the Lord of the Lords. 70.

---

† The day refers to joy and night to sorrow.

पवन प्रिथ यस अनि वगे
तस बोन स्पर्शि बोछि न क्लेश ।
ति यस करुन अन्तिह तगे
संसारस सुय ज्यथि नेछ[†] ॥ ७२ ॥

जो श्वासोष्वासरुप घोडे को लगाम देकर मन वश में रख सकता उसे भूख और पयास छू तक नहीं सकते। अतंकाल तक जो ऐसे ही सके उसका जन्म सफल है और वह इस संसार में सुखी है ॥ ७१

He who inhales rightly the vital airs and cont esthem with the bridle,him neither hunger nor thi can touch. He who can do this unto the end, his b in this universe is fortunate. 71.

पानस लांगिथ रुदुख म्यं चुह
म्यं चुह छ़ाडान लूस्तुम दोह ।
पानस मंज यंलि डयठुख म्यं चह
म्यं च्य त पानस दयतुम छ़ोह[§] ॥ ७२ ॥

मुझ मोहके तू छिप गया। तेरी तलश में मेरा दिन बीता। मैं तुझे अपने आप में पाया। तुझसे मिलनेपर मैं फूले न समाई ॥ ७२

You remain absorbed in yourself and hidd from me. I passed the whole day in your searc When I saw you within myself, I gave to y and myself the unrestrained rapture of jo 72.

[†]Lucky good. § Ecstasy, great joy.

मनस तु भवसरस छु तु
कोप नेरिता नार छोख ।
ल्यख लज्यतांय बो ना कुने
तुलि तुल तांय तुलू ना केंह ॥ ७३ ॥

अपने मनको ही संसार रुपी सागर समझ ले, यदि तू इसे वश में न रखेगा तो कोप में (तेरे मुहं से) अपशब्द निकलेंगे- जैसे कि आग से चिंगाडियां छूटती हैं। यह शब्द रहेंगे परन्तु मैं नही रहोंगी । यदि इनको सचाई की तुला में तोला जाय तो इनका वज़न कुछ भी नहीं होगा ॥ ७३ ॥

Look upon yonr mind as the ocean of existance. If yon donot keep it under control, but let it loose, then angry words will issue from your mouth in rage, as fire causes wounds. These words will remain but I will be nowhere. If they are weighed in the scales of truth, their weight is nothing.73.

यव तुर चलि तिम अम्बर हथता
बोछि यव गलि तिय आहार अन ।
चिता स्व पर विचारस प्यता
छन्तन यि दीह वन कावन ॥ ७४ ॥

जिनसे सर्दी दूर हो वही कपडे पहन । जिससे भूख दूर हो उतना ही अन खा । हे चित्त! सदा सुविचार(आत्मस्वरुप और ब्रह्म के चिन्तन) में लगा रह और इस देह को वन पशुओंका आहार जान ॥ ७४ ॥

Use only such apparel as will cause the cold to flee. Eat only so much food as will stop hunger. O mind! try to discern Self and the Supreme and recognize this body as the food for forest crows .74.

संसार् नाम्य ताव तंच़य
मूढन किचुय तावुन् आये ।
ज्ञाण मुद्रा† छय यूगियन किचुय
सु यूग कलि§ किञ परज़न् आये ॥ ७५ ॥

ससांरनामी गर्म कडाही मूढोंके लिए तपाई हुई है। ज्ञाणकी मु तो ज्ञाणियोंके ही लिए है। इस मुद्रा को योगाभ्याससे ही पहचा जाता है ॥ ७५ ॥

The world is just like a hot frying pan, w ich is heated for the foolish. The essence of tr Knowledge is for the yogis and He is recogniz only by constant practices of yoga.75.

सोबूर छुय ज्युर मरुच़ त् नूनय
ख्यन् छुय टयोठ त ख्ययस कुस ? ।
सोबूर छुय सोनसुन्द टूरुय
मोल छुय थोद त हयंयस कुस ॥ ४६ ॥

सब्र या धैर्य ज़ीरा, मिर्च और निमक की न्याई है, जो खा में कडुऐ हैं। भला इन्हें कौन खाए। धैर्य(क्या है मानो सोने का टूर है जो बहुमूल्य है। भला इसे खरीदे कौन ॥ ७६ ॥

Patience is like zira, pepper and salt It i bitter to taste; who will take it? Patience is jus like a golden bowl; it is very costly and who will purchase it?

† Hidden knowledge § Strong and constant practice.

स्वर्गु जामु लांविथ अलख्य† प्रोवुम
दग ललुनावुम दयि सुंजि प्रये ।
पोत ज़नि वंथिथ मोत वुज़ुनोवुम
चेन्तु मालि कुलिस प्यठ न्यंन्दुर छय ७७

स्वर्गीय (अलौकिक) वस्त्रोंको त्याग कर मैं ने अलख (सन्यास) को अपनाया। परब्रह्म के प्रेममें मैंने वेदनाए सहीं। प्रातःकाल उठकर ही मैंने उसे जगा दिया। हे तात! जाग भी ज़रा, वृक्षपर (ससंारके प्रपंचमें) तू सोया पडा है ॥ ७७॥

I gave up the rich celestial garments and took to a fakir's rags. In His love I bore the pain. Early in the morning before dawn I woke Him up. O father! take this as a hint, why do you sleep on a branch of a tree.77.

साहथब छु बिहिथ पानय वानस
सारियि मंगान केंछ़ाह दि ।
रोट§ नो कांसिहुन्द रोछ़थ नो वानस
यि च्यं गछ़िय ति पानय नि ॥ ७८ ॥

परमात्मा खुद स्वयं दूकानपर बैठा है। सभी कुछ देनेको कहते हैं। रुकावट किसीकी नहीं, नहीं किसीकी दूकानकी रखवाली है। जो तू चाहे, स्वयं ही ले जाना ॥ ७८॥

He Himself is sitting as a dealer at the shop. All are asking for something. There is none to stand in any one's way. One may take anything he likes; there is no guard on the shop, whatever you want take that yourself.78.

† Sanyasi § Hinderence.

संसारस मंज़ बाग क्यथ शां रोज़य
रोज़िय परम् शिव शम्भू अघूर
लोलि मंज बाग बय ललुनावन
जिगरस मंजबाग करस गूर् गूर ।। ७९ ।।

ससांर में किसतरह रहूंगी ? यहां तो परमशिव ही रहेगा उसीको मैं गोद्में लालन करुंगी और अपने हृद्य में उसे झुलाऊंगी ।। ७९ ।।

How shall I remain in this universe? T Supreme Lord Shiva alone will remain here will take Him in my lap and sing a lullaby a will seat Him and love Him in the warm corr of my heart.79.

शिन्यस[†] लु रवस[§] अंथ्य कुस रेट
कुस हर्थके रटे वाव ।
युस पांच़ इन्द्रय चंटिथ च़ले
सुय रटे गटे रव[*] ।। ८० ।।

शून्य और सूरज को कौन पकड सकता है? वायूको क पकड सकता है? जो पांच इंद्रियों (के विषयों) को काटकर भ जायगा वही अंधेरेमें सूरज को (प्रकाश को) पा सकता है ।।८

Who can catch with hand the void and t sun? who can catch the wind? One who ca subdue the five senses, he can catch the sun darkness i.e. can realize the Supreme Being.80.

† Void § Sun * Sun, here the Supreme light.

दोद् क्या ज़ानि यस नो बने
गमुक्य जामु[†] हा वंलिथ तने ।
गरु गरु फीरुस प्यंयम कने
ड्यूठुम नु कांह ति पननि कने ॥ ८१ ॥

जिसपर न बन आय, वह दर्दकी कया जाने ? मैं तो वेदना(गम) का लिबास पहन कर घर घर उसकी तलाश में फिरी, और हर जगह मुझ पर पत्थर बरसे (मेरा अनादर हुआ) । किसी को भी मैंने अपने पक्षमें न पाया ॥ ८१ ॥

He cannot understand the troubles of others, who is never himself involved in one. I went from door to door, putting on the garments of grief. I was pelted with stones everywhere and did not find any sympathiser who could side me or console me.81.

हहु[§] निशि हाह द्राव शाह क्या गवुय
हुहस तु हाहस शाह चुँय ज़ान ।
रुहु निशि मोर द्राव क्याह वुछुय
क्याह रुद् बाकय क्याह गव फान ॥८२ ॥

'हह' से 'हाह' निकला तो साँस कया हुआ ? 'हह' और 'हाह' प्राण, अपान को तू सांस जान ले। आत्मा जब शरीर से निकल पडा तो क्या देखा ? शेष क्या रहा और नष्ट क्या हुआ ? ॥ ८२ ॥

'Hah' came out of 'Hah' and what is breath ? Understand that 'hah' and 'hah' is the breath. When the soul seperates from the body what is seen? What is left behind and what has disappeared?82.

---

† Garments of grief put when aggrieved in his seperation.
§ 'Hah' and 'Hah' refer to inhaling and exhaling of breath.

शहनि हुन्द शिकार बाज़ कवु ज़ाने
हांठ कवु ज़ाने पोतरय दोद ।
शमहुच कदुर लश कति ज़ाने
मंछय कति ज़ाने पोम्पुरुच गथ ॥ ८३ ॥

शेरनी का शिकार बाज़ को क्या मालूम ? बांझ स्त्री को मां की ममता का क्या ज्ञाण ? लशकी लकडी शमा (दीपक) की कद्र क्या जाने ? और (बेचारी) मखी परवानेकी गतिको क्या समझे? ॥८३॥

What can a hawk understand the prey of a lioness? What idea can a barren woman form of maternal love? What can a kairoo piece of wood understand the value of a candle-stick ? Where does a fly know the self - sacrifice of a moth ? 83.

लूभ मारुन सहज़ व्यचारुन
द्रोग† ज़ानुन कल्पन§ लाव ।
निशि छुय तु दूर मो गारुन
शून्यस शून्याह मीलिथ गव ॥ ८४ ॥

लोभ को मारकर आत्मस्वरुप का विचार कर। दुर्लभ (परमात्मा का ज्ञान) को जान ले और कल्पना करना (खयाली पुलाव पकानना) छोड दे। वह तो तेरे समीप है उसे दूर न जान। वह मानो शून्य में शून्ये समा गया है ॥८४॥

Slay all desires and meditate on the nature f the self. The Knowledge of the Supreme is rare "nd of great price; abondon all your vain imainings. He is nearby donot search for him afar. A void has become emerged with the void.

† Difficult to be got. § Vain imaginings or building castles in the air.

खमथ थलि थलि तापीतन
तापीतन उत्तम उत्तम देश ।
वरुण मथ लूकु गरु ऑंचितन
शिव छुय क्रूठ तय चेन उपदेश ॥ ८५ ॥

सूरज क्या थल थलको (हर एक वस्तु को) प्रकाशित नहीं करता ? क्या वह केवल अच्छे अच्छे देशों को ही चमकाता है? क्या वायू घर घर में प्रवेश नहीं करती ? इस उपदेश पर चिन्तन कर कि शिव की प्राप्ति (ज्ञाण) तो बहुत ही कठिन है ॥ ८५ ॥

Does not the sun cause everything to glow everywhere? Does it cause to glow only good lands? Does not Varuna enter every home? Hardly in truth is Shiva to be found and therefore meditate on this doctrine.85.

ये गुरा परमेश्वरा
सद्भाव† भाव तु म्यं वुह ।
जु ज़नि उपनेय कन्दापुरा
हह कवु तुरुन तु हाह कवु तोत ॥ ८६ ॥

गुरुदेव! आप परमगुरु(ईश्वरस्वरुप)हैं । कृपया मुझे सच्ची विद्या समझाइए । प्राण अपान दोनों एक ही स्थानसे पैदा होते हैं तो 'हह' क्यों सर्द है, और 'हाह' क्यों गर्म ? ॥ ८६ ॥

O my teacher! You are as God to me. Kindly explain to me the inner meaning of the Reality. There are two breathings both, rising from the bulb. Why then is 'Hah' cold and 'Hah, hot?86.

† Tbe Supreme Knowledge.

अनाहत स्वस्वरुप शून्यालय
यस नाव ना वर्ण ना रुप ना गोत्र ।
अहं निनाद बिन्द तु यवोन
सुय दीव अश्ववार प्यठ चेडयस ॥ ८७

सदा ही शून्यमें रहनेवाले 'अनाहद' का न कोई नाम है, न रं
न रुप है और न गोत्र । वह स्वयं ही 'नादबिन्दु'आदि की ध्वनि
बदलता रहता है । वही एक देवता है जो उस पर सवार हो
॥ ८७ ॥

The ever unobstructed sound, whose abo
always in the void and who has no name,
colour, no shape and no lineage; he is the s
for the dot created by His own reflection.
alone is the God that will mount upon him.

वाक मनस कोल अकोल ना अते
छोपि मोदरे अति ना प्रवेश[†] ।
रोज़न शिव शक्त ना अते
स्वतुयय[§] कुहं तु सुय उपदेश ॥ ८८ ॥

मन को समझा कि वहां पर उच्चकुल या नीचकुल का भेद नहीं।
पर मौनमुद्रा का प्रवेश नहीं । न वहां शक्ति रहती है न शिव ।
कुछ शेष रहे वही उपदेश है ॥ ८८ ॥

Tell your mind that there is no highness
lowness (family distinction) there. There is
entrance there either by silence or by my
attitude. Neither Shiva nor Shakhti remain th
and if anyone remains that is the true doctrine.

† Entrance § What remains behind.

वोथू रैणया अर्चुन सखर
अथि अल्त पल्त वखुर हथथ ।
योदवनय ज़ानख परम पद[†]
अन्तर हिशीखर ख्यंशीखर हथथ ॥ ८६॥

उठ देवी! पूजा की तैयारी कर पूजा का सारा सामान हाथ में ले । यदि तू ब्रह्मपद को जानले तो तान्त्रिक देवियों के साथ बठकर पूजा कर ॥ ८६ ॥

Arise, O. Lady! make preparation for the worship keeping in hand all the peraphernalia of worship. If you know the highest Eternal Syllable, then take and eat them in company with Tantric worshippers. 89.

शिाव वा केशव वा जिन वा
कमलज़नाथ[§] नाम दारिन युस ।
म्यं अबलि कांस्यतन भवरुज़*
सुह वा सुह वा सुह वा सुह ॥ ६० ॥

शिव हो, केशव हो वा जिन हो। कमलज़नाथ (विष्णु) ही क्यों न उसका नाम हो (जो कुछ भी उसका नाम हो) मुझ अबला की भवरुजा (संसारिक पीडा) को वह दूर तो करे, चाहे शिव हो केशव हो, जिन हो या विष्णु हो ॥ ६० ॥

Whether He bears the name of Shiva, or Keshav or Jin or the Lotus-born Lord, He may take away from me, a poor woman, the disease (attachment) of the world. Then He may be He or He or He or He. 90.

† Brahma § Vishnu. * Attachment to the world.

सहज़स शम† तु दम§ नो गछे
इलि नो प्रावख मुक्तिद्वार ।
सलिलस लवन ज़न मीलिथ ति गछे
तोति छु दुर्लभ सहज़ु विचार ॥ ९१ ॥

सहज़(ईश्वर) हमसे शम या दमकी अपेक्षा नहीं रखता केवल इ
मात्र से ही तू मुक्तिका द्वार नहीं पाएगा चाहे तू पानी में निम
तरह भी उसके ध्यान में लय हो, परन्तु उसका विचार क
(पहचानना) कठिन ही है ॥ ९१ ॥

God does not require from us meditati
and austerities. By mere wish you cannot rea
the door of final release. You may be absorb
in His contemplations as salt is absorbed
water, even then it is very difficult to disc
the nature of the Supreme. 91.

संसारस आयस तपसे
बोधप्रकाश लोबुम सहज़ ।
मर्यम न कुहं तु मरु नु कांसे
मरु नेछ‡ तु लसु नेछ ॥ ९२ ॥

संसार में मैं आई और तपस्यासे मुझे आत्मबोध हुआ । कोई
तो मुझे क्या ? मैं मरूं तो किसी को क्या ? मैं मरी तो अच्छा
है और जीवित रही तो फिर भी अच्छा है ॥ ९२ ॥

I came into the world of birth and rebir
and through asceticism gained the self illumina
ing light of Knowledge. If any one dies, it is naug
to me and if I die it is naught to any one.
is good if I die and it is good if I live long. 9

† Meditation § Austerities ‡ Good.

हथ कंरिथ राज्य फेरिना
दिथ करिथ तृपि† ना मन ।
लूभ विना ज़ीव मरि ना
ज़ीव न्यथ मरिताय सुय छुय ज्ञान ॥ ९३ ॥

राज्य पाकर उसका शासन करने से तो मन नहीं मरता, नहीं वह किसीको दान देकर तृप्त (शांत) होता है। निर्लोभी (निष्काम) मनुष्य तो अमर है, जो जीवित होते हुए भी मुरदा जैसा रहता है, वही सच्चा उपदेश है ॥ ९३ ॥

If you get a kingdom and rule it, there will be no respite, and if you give it to another, still there is no content in your heart. The soul that is free from desire will never die; if, while it is yet alive, it dies, then that alone is the true Knowledge. 93.

शील§ तु मान* छुय पोञ क्रञिय‡
म्वछि यंम्य रोट मल्लयुद्ध वाव ।
होस्तुय युस मस्तवालु गंडे
तिह यस तगे सु अदु निहाल ॥ ९४ ॥

शील और मानकी (एक साथ) रक्षा करना टोकरे में पानी धरना है। जो शक्तिशाली वायुको मुष्टी में बंद कर सके, हाथी को अपने सिर के बालसे बांधे, वही शायद ऐसा करनेमें निहाल (सफल) हो सकता है ॥ ९४ ॥

Integrity and high repute are but water carried in a basket. If some mighty man can grasp the wind with his fist, if he can tether an elephant with a hair, he may be successful and may retain integrity and high repute. 94.

† Attain contentnent. § Integrity. * High repute. ‡ A basket full of holes that cannot retain water.

शिव गुर ताय केशव पलनस
ब्रह्मा पाइर्यहथन वोलस्यस।
योगी योगकलि पर्ज़ॊन्यस
कुस देव अश्ववार प्यठ चेडयस ॥ ९५॥

शिव घोडा है, विष्णु काठी और पायदानपर ब्रह्मा है। योगीजन योगकी कला से इसे पहचानते हैं। कौन देव है जो इस (घोडे) पर चढ सकता है ॥ ९५॥

Shiva is the horse and Vishnu is the saddle and upon the stirrup is Brahma. The Yogi recognizes Him by the art of his Yoga. Who is the god that will mount upon him (horse) as the rider? 95.

श्य† वन चॊटिथ शशिकल वुज़ुम
प्रकृत हुज़ुम पवनु सॊतिय।
लोलकि नारु—स्त्य वॊलिञ्ज बुज़ुम
शंकर लोबुम तमिय सॊतिय ॥ ९६ ॥

(कामक्रोधादि) छः वनोंको पार करके (ब्रह्मरन्ध्रस्थ) चन्द्रकला जा उठी और (प्राणायामसे नियमित) पवन प्राणवायु द्वारा मैंने प्रकृ सारे संसार को भस्म कर डाला। प्रेमकी आग से मैंने अप कलेजेको भून डाला। तभी तो शंकरको मैंने पालिया ॥ ९६ ॥

I cut my way through the six forests (by controlling my vital airs) and then I awoke the digit of the moon. The whole material world dried up within me. I parched my heart with the fire of love for Him, and then did I find Shiv by doing so. 96.

† Lust, anger, desire, dellusion, conceit and mind.

सय मातारुप्य पय दियें
सय भार्या रुप्य करि विशेश[†] ।
सय माया–रुप्य अन्ति ज़ुव हथये
शिव छुय क्रठ तय चेन उपदेश ॥ ९७ ॥

वही मातारुप से दूद देती है, वही भार्यारुपसे विशेश रुप धारण करती है। मायारुप धर कर वही अन्त में संहार करती है। शिव दुर्लभ है अतः इसी उपदेशका चिन्तन कर ॥ ९७ ॥

The same woman is a mother and gives milk to her baby. The same woman is a wife and has her special character. The same woman is a deceiver and ends your life. Hardly in sooth, is Shiva to be found, therefore meditate on the doctrine.97.

सोय शील[§] छय पटस तु पीठस
सोय शील छय उत्तम देश ।
सोय शील छय फेरवुनिस ग्रटस
शिव छुय क्रठ तय चेन उपदेश ॥ ९७ ॥

वही शिला सडक पर है और वही पीठमें, उसी से पवित्र स्थान बनते हैं। पुनः वही पत्थर घूमनेवाली चक्की का पाठ है। शिव तो दुर्लभ है अतः इसी उपदेश का चिन्तन कर ॥ ९८ ॥

The same stone is in the road, in the pedastal and in the sacred place. The same stone is the turning mill. Shiva is very difficult to be obtained, take this as a hint for your guidance & meditate upon this doctrine. 98.

† A special character § Stone.

लल ब चायस स्वमनु बागु बरस
वुछिम शिवस शक्त मीलिथ तु वाह ।
तति लय कारुम अमृत सरस
ज़िन्दय मरस तु म्यं करि क्याह ॥ ९९॥

मैं लल अपनी आत्मारुपी उपवन मैं घुसी । अहो! वहां शिवको श
से मिला हुआ पाया । वहीं मैंने अमृतसर में अपने आपको लय कि
अब मैं जीवित होते हुए भी मरी हुई सी हूँ, भला मुझे कोई क्या
सके? ॥ ९९ ॥

I, Lalla, entered through the door of the gard of my soul. Lo! I saw there Shiva and Shakhti seat together. I became absorbed there in the lake of ne or. Even though alive, I shall be dead and what c existence do unto me? 99.

लरः लजुम मंज मांदानस
अंन्दय अन्दय कंरिमस तंकियतु गाह ।
सु रोज़ि यति तय बो गछु पानस
वोञ गव वानस फालव दिथ ॥ १०० ॥

मैदान के मध्यमें मैं ने एक मकान बनवाया और उसको चा
ओरसे सजाया वह तो यहीं रहेगा और मैं चली जाऊंगी मा
दूकानदार दूकानको बन्द करके चला जाय १००

I contsructed a house in the middle of a plai and I decorated it on all sides with many a beautif and precious things. The house will remain he and I shall have to go, just as a shop keeper close his shop and goes away. 100.

THE END.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| In Verse 5 | line 10 | read for | But death | - | But life and death |
| In Verse 6 | line 11 | read for | begining | | beginning |
| „ „ | „ 12 | „ „ | will do He | | will He do |
| „ „ 21 | „ 5 | „ „ | मरेगा | | मारेगा |
| „ „ 23 | „ 4 | „ „ | सथ | | सुय |
| „ „ 24 | „ 3 | „ „ | शीश रस | | शशि रसु |
| „ „ „ | „ 4 | „ „ | छ्वपि | | छुपि |
| „ „ 25 | „ 11 | „ „ | subdned | | subdued |
| „ „ 31 | „ 10 | „ „ | Knowladge | | Knowledge |
| „ „ 30 | „ 2 | „ „ | सर्षक्रिय | | सर्वु क्रय |
| „ „ 33 | „ 6 | insert | before | | प्रज्वलित |
| „ „ 35 | „ 4 & 7 | read for | शाव | | शिव |
| „ „ 36 | „ 7 | „ „ | गहे | | गई |
| „ „ 39 | „ 5 | „ „ | „ | | „ |
| „ „ 43 | „ 1 | „ „ | चिलु | | चित्तु |
| „ „ 45 | „ 8 | „ „ | naval | | navel |
| „ „ 57 | „ 12 | „ „ | tbe | | the |
| „ „ 58 | „ 1 | „ „ | तूरि | | तरि |
| „ „ 60 | „ 7 | „ „ | दूार | | द्वार |
| „ „ 65 | „ 8 | „ „ | „ | | „ |
| „ „ „ | „ 14 | „ „ | qnarrelsome | | quarrelsome |
| „ „ 70 | „ 6 | „ „ | दूैतका | | द्वैतका |
| „ „ 74 | „ 1 | „ „ | तुर | | तर |
| „ „ 85 | „ 4 | „ „ | शाव | | शिव |
| „ „ 89 | „ 7 | „ „ | बठकर | | बैठकर |

Printer

Some of the Publications of the

# TRUST PUBLISHING HOUSE

(An institute for encouraging Hindi Literature)

MAHABIR BAZAR, SRINAGAR.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | Lalla Vakyani. | Hindi-English Edition | I | 0 - 4 |
| 2. | ,, ,, | Urdu Edition | I | 0 - 2 |
| 3. | ,, ,, | ,, ,, | II | 0 - 2 |
| 4. | ,, ,, | ,, ,, | III | In the Pr |
| 5. | Shree Rama wani | Hindi Edition | | 0 - 3 |
| 6. | Shree Krishna wani | ,, ,, | | 0 - 3 |
| 7. | Shree sundar wani | ,, ,, | | 0 - 3 |
| 8. | Nitya Karma Vidhi | ,, ,, | | 0 - 1 |
| 9. | Richkam | Sanskrit ,, | | 0 - 2 |
| 10. | Bhawani Sahasranam | ,, ,, | | 0 - 2 |
| 11. | ,, ,, | Urdu ,, | | 0 - 1 |
| 12. | Mahimnapar | Sanskrit ,, | | 0 - 0 |
| 13. | ,, | Urdu ,, | | In the Pr |
| 14. | Panchastavi | Sanskrit ,, | | Do |
| 15. | ,, | Urdu ,, | | 0 - 1 |
| 16. | Ragnyastotra | Hindi - Urdu ,, | | 0 - 1 |
| 17. | Vatka - Pooja | Urdu ,, | | 0 - 0 |
| 18. | Life of Rishi Pir | ,, ,, | | 0 - 1 |
| 19. | ,, ,, Nund Rishi | ,, ,, | | 0 - 1 |

K. N. Charag

Proprie

the

USE

ture)

R.

0 - 4 - 0
0 - 2 - 6
0 - 2 - 6
In the Press
0 - 3 - 0
0 - 3 - 0
0 - 3 - 0
0 - 1 - 6
0 - 2 - 6
0 - 2 - 0
0 - 1 - 0
0 - 0 - 9
In the Press
Do
0 - 1 - 0
0 - 1 - 0
0 - 0 - 9
0 - 1 - 6
0 - 1 - 6

. Charagi

Proprietor

Published by
P. Kashi Nath Charagi
Managing Proprietor
TRUST PUBLISHING HOUSE
Shalayar, Habba Kadal, Srinagar.

Printed at Shri Durga Press
Srinagar.

**Published by:-**

*Pt. Kashi Nath Charagi Managing Proprietor*

*Trust Publishing House Mahavir Bazar, Srinagar.*

*and*

**Printed by:-**

*S. S. BROCA*

*at*

*Brocas Artistic Press, Srinagar.*

ہے منش تم رحمت کی رسی بٹتے ہو۔ اس رسی کے پکڑنے سے ہے منشر یہ سنسار روپی جہاز آگے نہیں چل سکتا ہے۔ یعنی ایسا کرنے سے تمہارا ادھار نہیں ہو سکتا ہے۔ پرماتما نے جو تمہارے نصیب میں لکھا ہے۔ وہ ہرگز کوئی بھی نہیں ٹال سکتا ہے ؂

ما چھتہ کوٗہ چھوٗی لگمت پٔرمِش [1]
کوٗہ گوٗئے اَپزٕ مِس پٔزٕ [2] لوٗک بروٗنتھ
ڈٕ شہ بوزٕ دُش کٕ ننگ پٔرٕ [3] ڈھرمِس
پینہ گژھٕ ھنہ زٕنہٕ مرنٕس کرونت [4] (۲۰۰)

ہے من! تمہیں دوسروں کا نشہ کیوں لگا ہے۔ یعنی وشیوں پر کیوں موہت ہوا ہے۔ تم نے جھوٹ کو کیوں سچ سمجھا ہے۔ تمہاری کم سمجھی نے تمہیں دوسروں کے دھرم پر راغب کیا ہے۔ اور تمہارا جینا اور مرنا ہمیشہ جاری رہا ؂

(۱) وشیوں میں پھنسنا (۲) جھوٹ یعنی اگیان ۔ سچ یعنی گیان ۔
(۳) دوسروں کے دھرم میں راغب ہونا (۴) جینا مرنا جاری رہنا ۔

اندرم گٹہ کار ژٹِت تہ ودلم
ژٹِت تہ دیوٹس تتی چاک (197)

میں نے ایک لمحہ بھر بھی آشا دھارن نہیں کی۔ نہ ہی میں نے بال بھر کا بھروسہ کیا۔ میں نے اپنے ہی واکھیہ رُوپی نشہ پی لیا یعنی اُن پر اچھی طرح دھیان دیا جس سے کہ میں نے اندر کے اگیان کو پکڑ لیا۔ اور اپنے آپ کے اندھکار کو دُور کیا۔ یعنی اگیان سے گیان حاصل کیا ؛

ہیچوِ ہارِ نجہ پشٔی کان گوم
ایکٔ چھان پیوم پھترِ راز وانے
منزِ باگ بازرس کلفہ رُس وان گوم
تیرتھہ رَست پان گوم کُس مالہ زانے (198)

لکڑی کی کمان میں مجھے گھاس کا تیر ملا۔ اِس گُنبد والے عالی شان محل کے لئے مجھے ایک ناتجربہ کار ترکھان مِلا۔ مجھے بازار کے بیچ میں ایک دُکان مِلا۔ جس کا کوئی قُفل نہیں ہے۔ میرا شریر ایسا ہے۔ کہ کسی تیرتھ پر اشنان نہیں کیا ہے۔ ہے پیارے کون میری اس بات کو سمجھ سکے ؛

ہامنشہ کیاز چھکُ وُٹھان سکہ لُور
اُمہ رکھہ ہا مالہ پیچھی نہ نادٔ
لیو کھٹی یہ نارانِ گرمنہ رکھے
تہ مالہ پچھی نہ پھیرت کانہہ (199)

شو ایک مایا جال پھیلا کر بیٹھا ہے۔ اور اسی جال میں سب جیووں کو پھنسایا ہے۔ اگر تم نے زندگانی میں اُس کے دیکھنے کی تلاش نہ کی۔ تو کب مر کر اس لئے اپنے من میں وچار کر۔ آتمہ سروپ کو جان لے۔

شِو چھُوئی تھلہ تھلہ روزان
مَو زان ہندُ تہ مُسلمان
تُرک ہے چھُکھ تہ پان پرزان
سوی چھے صاحبس سیتہ زانی زان (۱۹۵)

شو ہر ایک جگہ ویاپک ہے۔ تم تعصب کو چھوڑ کر ہندو اور مسلمان میں بھید نہ رکھو۔ اگر تم دانا ہو۔ تو آتمہ سروپ کو پہچان لو۔ آتمہ سروپ کا پہچاننا ہی پرماتمہ سروپ کا جاننا ہے۔

سُون درادُ وہیتہ مل گو وچھت
یلہ مہ انیلہ دیوتمس تاو
گُتر زان گیس لولہ وگلت
یلہ کٹھکش ڈرل نشہ رو دراو (۱۹۶)

سونا بھٹی سے نکل آیا اور سب میل جل گیا۔ جب کہ میں نے آتما کو آگ میں گرم کیا۔ میں اُس کے پریم میں برف کی طرح پگھل گئی۔ جیسے کہرا شو سورج کے نکلنے پر دور ہوتا ہے۔

پیچھس رُت نو میاس پتس شُرتس ارمس
شُمس ہہ للہ چُپلنوی واکھ

ط۱ ہر ایک جگہ ویاپک ہے۔ ط۲ دانا ط۳ اگیان دور ہو گیا۔ ط۴ یخ۔
ط۵ اگیان ط۶ گیان روپی سورج ط۷ پیچھے نہیں ہٹی ط۸ لمحہ بھر
ط۹ پیچھے نہیں چھوڑا ط۱۰ اپنے واکھیہ روپی گیان کو پی لیا۔

شِو شِو کَران ہمسہ گتھ سوریتِ
رُوزِت وِوہ ہاری دِان کھوراتِ
لاگہ رستُ اُدَے یُشہ مَن گرِتِ
تَس نِت پرسن سورگر ناتھہ (۱۹۲)

شِو کا نام زبان پر لانا راجا ہمس کے راستے کو یاد رکھنا دِن اور رات گرہست دہرم کا ودہی پوروک پالن کرنا اپنے من کو دوئی کا بھاؤ ہٹانا نِشکام کرم کرنا جس نے ایسا کیا۔ اُسی پر شمبو خوش ہے ؛

شِنیُوک میدان گُڈم پانس
ہہ للہ رُوزم نہ بُدھ نہ ہوش
وِزِی سَپنِس پانی پانس
اَدہ کہہ گَلہ پھول للہ پمپوش (۱۹۳)

میں نے شونیہ کے ویران میدان میں سفر کیا۔ مجھ للہ کو نہ ہی ہوش تھا۔ نا ہی عقل بدھ کا سنے رہی۔ مجھ میں خود ہی آتمہ گیان پیدا ہوا۔ تب میرا گیان روپی کمل کھلا۔ جیسے کیچڑ میں سے کمل پھول کھلتا ہے ؛

شِو چھوئی زاوِل زال واہراوِت
کرنزن منز چھوئی تارت کتھ
زندہ نے وُچھہن اَدہ کِتہ مرِت
پانہ منز پان کڑ وِژارِت کتھ (۱۹۴)

ط۱ دوئی کا بھاؤ مٹا کر ط۲ واقف ط۳ سر میں کمل کا کھلنا ط۴ مایا جال
ط۵ جیوں کو ط۶ پھنسایا ہوا۔ ط۷ جان لینا۔

رونے سے تمہاری بینائی ہی ختم ہوگی۔ رونے سے تمہیں کبھی بھی پرماتما نہیں ملیگا۔ اپنے من کو صاف کر پھر وہ آسانی سے مل سکتا ہے۔ اس طرح چلانے سے کوئی فایدہ نہیں۔ جیسے گیدڑ بھبکیاں بے سود ہیں ؛

دُچھان تہ بہ چھَس سارِسِیُ اندر
دُچھُم پرَزلان سارِسِیُ منز
بُوزِت تہ رُوزِت وُچھ ہرِس
گھرُ چھُوئ تسہُندی بہ کوہ لَل (۱۹۰)

میں نے دیکھا اور اپنے آپ کو ہر ایک کے اندر پایا۔ میں نے پرماتما سروپ کو بھی ہر ایک کے اندر پرکاشماں دیکھا۔ سُن کر ٹھہر کر اُس ایشور کا درشن کر۔ یہ اُس کا ہی گھر ہے۔ میں کون لل ہوں ؛

شِو شِو کران شِو نو تو چلِے شے
گھو کھنڈہ زالک منِس شِو آسے
گِھو نیو دہِس نہ ہیمہ وُر آسے
گھو نیَ دہِس نہ کھِنہ وُرِ کا نسے (۱۹۱)

صرف زبان سے شِو شِو بولنا شِو خوش نہیں ہوتا۔ اگر شِو تمہارے من میں واس کرے گا۔ تو تم گھی کی طرح چمکیں گے۔ تم اپنے شریر کو گھی دے دو۔ جس سے کہ یہ طاقت ور بن جائے۔ اگر تم اپنے شریر کو نہیں دو گے۔ تو اور کسی کو دیدے ؛

حلے۔ پرسن ہونا۔ حلے اور کسی کو دینا۔

لِکھا تہ تھُوکا پٹھہ شیرہ شرم
نِندیا سپنیم پتھہ بر ونٹھ تالن
لل چھس کلِ ژانہہ نو ژہنم
آدہ یلہ سپنس ورپہ ہے کیاہ (۱۸۷)

میں نے گالیاں اور تھوکنا اپنے سر پہ لینا برداشت کیا شروع سے آخر تک میں بدنام ہُوئی۔ میں لل ہوں اور خواہشات کبھی بھی میرے سے دُور نہیں ہُوئیں۔ ابدیسا جب میں مکمل ہُوئی تب مجھ میں کچھ بھی نہیں سمایا یعنی کسی کی بات کا اثر نہیں ہوا۔

لژ کاسی شیت نِواری
تر نہ زلہ کرِئی آہار
یہ کُم اُپدیش کُرئی ہو تہ بٹا
اچیتن وٹس چیتن کتھہ دِیون آہار (۱۸۸)

یہ تمہاری شرم اور سردی کو دُور کرتا ہے۔ کیونکہ ہوس کے پشم سے تم اپنے شریر کو ڈھانپتے ہو۔ یہ بیچارا گھاس پھُوس کھاتا ہے اور پانی پیتا ہے۔ سُورکھ پنڈت! یہ تمہیں کس نے اُپدیش کیا۔ کہ ایک بے جان پتھر کیلئے ایک جیتا جاگتا بھیڑ قربان کرنا چاہئے۔

وُڈہ بیتی گاشس ہو مرِئ
وُڈہ مدان ہیلی نہ ژانہہ
ہن کر صفا ژیرہ اکہ ہیلی
یمو شالہ ٹینگو نیری نہ کنہہ (۱۸۹)

۱ شروع سے آخر تک ۲ خواہش ۳ برداشت ۴ شرم ۵ سردی
۶ گھاس پھُوس ۷ بے جان ۸ جاندار۔

سے چھید ڈالا۔ تب میں کہیں، جا کے ٹٹھ کالنے لگی۔ مطلب یہ کہ بہت سے تکالیف کے بعد آدمی ٹھہکانے لگتا ہے یعنی عرفان حاصل کرتا ہے

لولکہ نارہ ہلہ لولہ للہ ناوُم
مرتنے مولیس تہ رذریس نہ زرے
رنگہ تہ ہنا پراچی کیاہ نہ رنگ ہودُم
بوزیُن ٹرلم کیاہ سَنہ کرے (۱۸۵)

مجھ لل نے پریم روپی اگنی کو اپنے ہر ذرے میں برداشت کیا مرنے سے پہلے ہی میں مرگئی۔ بڑھاپا نہیں دیکھا اپنے بے رنگ ذات پر میں نے کیا کیا رنگ نہیں دکھائے۔ یعنی اگر یاں ہیں میں نے کیا کچھ نہ کیا۔ میں سب کچھ ہوں۔ یہ سب بھول گئی۔ یعنی اہسم بھاؤ کو بالکل ترک کیا ؂

لیتن ہُند ماز لاریوم وتن
اگنی ہاوُنم اکیچی ہتا وتھ
ییم ییم بوزن تم کو نہ مَتن
للہ بوز شتن کوانی ہاکتھ (۱۸۶)

میرے پیروں کا ماس سڑکوں میں چمٹ گیا۔ یعنی مجھے تیرتھوں کو پھرتے پھرتے (اُس کی تلاش میں) پیروں کی چمڑی بھی گھس گئی۔ آخر مجھ کو گیوال ادم ہی نے اُس ایشور کا رستہ دکھایا۔ جو شخص بھی یہ بات سُنے گا۔ وہ کیوں نہ اُس کے پریم میں دیوانہ بنے گا۔ لل نے سینکڑوں سنگ بدلے صرف ایک ادم پر دھیان دیا ؂

ط۱ اپنے بے رنگ ذات ط۲ ٹٹولنا ط۳ ایک ہی اومکار ط۴ پرماتما

ط۵ ایک ہی اومکار

لَلہ گور بۄہہ ماندہ پھٹکُن ڈُچھم
ششؔ کلٕ واتِم[۱] پاذَن تان
گیانٕکہ امرتہٕ پرگرت برِم
توٗتھی موہرِم اندٕہ ونٕدٕہ[۲] تان (۱۸۲)

مجھ لل نے گورو مہاراج کو برہم رندر کے اوپر دیکھا جس سے گیان کا پرکاش میرے پاؤں تک پہونچا۔ میں نے اپنی بدھی کو گیان روپی امرت سے بھر دیا اور مکمل طور سے میں نے لالچ کو بھی چھوڑ دیا:۔

لَل بوٗ دراِیس کپسہ پوشہ ہیچی
کاڑٕ تہٕ دوٗنٕ کرنَم یڈٕ لتھ[۳]
تہِ یلہ کھارنَم زاوُج تانٕ ہی
ووٗرٕ واتہ گیم الہانٕ ژی لتھ (۱۸۳)

میں لل عالم وجود میں ایسی بے لوث آئی جیسے کپاس کے ڈوڈے سے پھول بیلنے والے اور پینجے نے مجھے بہت پایمال کیا۔ دُھنکی نے ڈور کے ذریعے باریک باریک ریشوں میں علیحدہ کیا۔ اس کے بعد جولاہے نے مجھے اوندھے لٹکا دیا

دھوبہ یلہ چھاوُنس دیوبہ کَنہ پیٹھٕ
سَزٕ تہٕ صابن مژِہنَم یژٕ
سیچہ یلہ پھرِنم ہنہ ہنہ کاتٕری[۴]
اَدٕ للہ میہ پراوُم پرمہ گتھ[۵] (۱۸۴)

دھوبی نے سنجی اور صابن مل کر پتھروں پر دے پٹکا۔ اس کے بعد میرے ہر ایک حصے کو درزی نے جب کینچی سے کتر کر سوئی

[۱] چاندنی کی کلا یعنی گیان [۲] ہمیشہ کیلئے [۳] پامال کرنا [۴] چھلنا کھانا [۵] عرفان حاصل کرنا

لُس نُن نیرے سُوفِٹ کریرے
رِکھیتون دِیتون تچھس (۱۷۹)

میں ننگی گلیوں اور کوچوں میں پھرتی رہی۔ اور زبان سے کچھ بھی نہیں بولی۔ جو کرامات کرے وُہ نیچے گرے گا۔ بہتر ہے اُس کو کسی بھُوت کے کھانے کے لئے دیا جائے ۔

لَل بو درائس لو کَرے
ژھانڈان لُوسُم دُہہ کوہ رات
وُچھم پنڈِت پَنَنہ گرے
سُوی مُہ رُٹمس نشترَ ساعت (۱۸۰)

میں لل ایشور کے پریم میں دیوانہ ہوکر نکلی۔ اور اُسی کی تلاش میں دِن اور رات گزارے۔ آخر میں نے پنڈت یعنی گوروِدیو کو اپنے گھر میں ہی پایا۔ جب میں نے اُس کو پکڑ لیا۔ وُہی میرے لئے شبھ گرہ اور نیک مہوُرت بنا ۔

لَلہ مہ ذیک لُوکہ ہانڈ کَرنی
توئے ژرجم مَنئے شینکھ[۱]
ماگ نوذُم نار ژوُلمُ[۲]
کرہ ہنز گوسُم مَنئے شینکھ[۳] (۱۸۱)

مجھ لل کو لوگوں میں بدنام ہونے کو کہا گیا۔ ایسا کرنے سے میرے من کا شک دُور ہوا۔ میں نے ماگھ میں ٹھنڈے پانی سے نہایا۔ اور ہاڑ میں آگ کی گرمی بھی برداشت کی۔ ایسا کرنے سے میرے تن کا میل دُور ہوا ۔

[۱] بدنام [۲] شک [۳] میل۔ دوئی۔

سُورگ حاصِل کر سکتا ہے۔ جس میں تپ اور دان کرنے کی شکتی ہو۔ وُہی سچے گیان کی پراپتی کر سکتا ہے۔ جو گورو دیو کے وچن پر چلے اچھے اور بُرے کرموں کے پَھل کا بھاگیہ صرف اپنا آپ ہے ٭

راژہ ہمس آسِت لوگُٹ گولئی
کُسِ تام ژولئی کیاہ تام ہتھ
گرِنہ گو بند تے گرِٹَن ہت گولئی
گرِنہ وَدَل ژولئی پَھل فول ہتھ (۱۷۷)

راجا ہمس ہو کر تم گھونگے ہو گئے۔ یعنی دُنیا سے بے خبر ہو گئے کوئی شخص تُم سے کوئی چیز لے کر بھاگ گیا۔ یعنی کسی نے تم کو دہوکہ دیا۔ جب نیچی کر چکی کا گھومنا بند ہوتا ہے۔ یعنی شریر گر جاتا ہے۔ تو دانے کی نالی رُک جاتی ہے۔ یعنی پرالبد ختم ہوتا ہے اور چکی والا دانے لے کر بھاگ جاتا ہے ٭

راوِنہ منزہ راوُن رُوٗدُم
راوِتھ اتھہ آیس بھوہ سَرِ کہ
اَسان گِندان ہنزی پرودُم
ڈپنے گرُم پانس سَرِ ئے (۱۷۸)

نقصان میں ہی مجھے نقصان ہوا۔ بھُول کر مجھے بھوہ سَر میں پایا گیا۔ ہنستے اور کھیلتے میں نے شُو کو پایا۔ بغیر کسی کے کہنے مجھ پر خود ہی شُو کا ہونا روشن ہوا ٭

گُل بو دراُیس وُورے وُورے
کُلفُ تھووتھ وچھس

ط۱ بدحیاں۔ ط۲ نامعلوم چیز۔ ط۳ فریب۔ ط۴ بند ہونا۔ ط۵ پرانا۔ ط۶ نقصان۔ ط۷ یقین

پیہ یہ کرہ شوئی ارژن[۱]
یہ رسنہ اوژریم تی منتھر
یہ یتھ لگیم دیتیل پرہ ژئی[۲]
شوئی پرمہ شیون تنتھر (۱۷۴)

جو جو کام میں نے کیا - وہ اُسی کی پوجا ہے - جو بات میں نے زبان سے نکالی - وہ اُسی کا منتر ہے - یہ واقفیت میرے شریر کے ساتھ وابستہ ہوگی - تمام پشتکوں کا لُب لباب شو کی واقفیت ہے ؛

ژلمس منسر چھوی ہیون لگن[۴]
شوری ژالک برک شکھ
ژکھ - رش تہ ویری گمالک
ادہ ڈیشک شوشند مکھ (۱۷۵)

ڈراما کے سٹیج پر جیسے مختلف بھیسوں میں مختلف شکلیں نظر آتی ہیں - اُن کے جاننے کی تلاش کر - اپنے آپ میں برداشت کرنے کی شکتی اگر بڑھاؤ گے - تو تم کو آنند ہوگا - اگر تم کرودھ نفرت حسد کو قابو کر دو گے - تب تمہیں شو سروپ کا درشن ہوگا ؛

راجس بوج یم کرتل تجی
شورگس بوج چھوئی تپ تے دان
سہزس بوج یم گورہ کتھ پائی
پاپہ پونہ بوج چھوئی منی پان (۱۷۶)

سلطنت کا وہی حقدار ہو سکتا ہے - جو تلوار چلانا جانتا ہو - وہی

[۱] پوجا [۲] زبان سے نکلی ہوئی باتیں [۳] وابستہ [۴] ڈرامہ کا سٹیج

تالہِ رازِ داہہ اَبک چھانِ پیوم
جانِ گوم رُوزنُم پانَس پننوی (۱۷۱)

یہ کیا تھا اور مجھے یہ کیا پیش آیا۔ ہر ایک بات میرے لئے اُلٹی ہوگئی۔ اور مجھے کچھ بھی سمجھ نہیں آتا۔ کہ میں کس کنارے پر پہونچوں گی۔ چھت بنوانے کے لئے مجھے ایک ناتجربہ کار ترکھان مِلا۔ یہ میرے لئے اچھا ہی ہوا۔ کہ میں اپنے آپ کو خود ہی پہچان لونگی ؛

یُت بوگَیس تتہ اوس شو
تتہ ڈیوٹھُم موں شو
کَتِس ژہنہٕ دول شو
سوُی یِے شو بہٕ کوسہ (۱۷۲)

جہاں جہاں میں گئی۔ وہاں وُہی موجود تھا۔ وہاں میں نے وہی پتارُوپی ایشور کو دیکھا۔ اُس کے کانوں میں کنڈل ہیں۔ وہ تو وُہی ہے۔ میں کون ہوں ؛

لُش ہیہٕ مالہ ہڈم گیلِم مسخرہ کرم
شوُی ہیہٕ مالہ ہنس خرم نہ زانہ
شو پننُ یلہ انوگرہ اکرم
لوکہ ہُند ہڈُن مہ کرم کیاہ (۱۷۳)

ہے ہنس! جب مجھے ٹھٹھا مخول اور برا بھلا کہے۔ اُس کو میں کبھی دل سے نفرت نہیں کروں گی۔ جب شِو مجھ پر اپنا انوگرہ کریگا تب لوگوں کا ٹھٹھا مخول مجھے کیا کر سکتا ہے ؛

---

۱ عالیشان محل ۲ ناتجربہ کار۔

بُرا بھلا کہنا یا ہنسی مخول کا برداشت پیدا ہو جائے یہ شرم رُوپی جامہ تب میرا جل جائے گا جب کہ میرا من رُوپی سانپ ایک ٹھکانے رہیگا

رُت تہ کرُتھ سوری پزم
کنن ہہ بوزُن اچھن نہ بھاوُ
اورُک ڈیون یلہ دندہ وزم
رتن دیپ پہ زلم ورزنہ واوُ (۱۶۹)

بھلا اور بُرا تمام مجھ کو پیش آئے۔ کانوں کی شنوائی اور آنکھوں کی بینائی بھی جاتی رہے۔ جب کہ میرے من میں پرماتما دیو کی آواز سنائی دیگی۔ تب میرے من میں گیان رُوپی دیوا آندھی سے بچ کر بھی جلتا رہے گا ٭

یہ کیاہ آستہ یہ کیوت زنگ گوم
ننگ گوم زنت بدنے دگے
سار فی پدن گنوی دکھن پوم
لہ مہ تر اگ گوم لگہ کمہ شا ٹھے (۱۷۰)

یہ کیا تھا اور مجھے یہ کیا پیش آیا۔ مجھے کسی نامعلوم دُکھ سے سہارا چھوٹ گیا۔ تمام دکھیوں کا مجھے ایک ہی اُپدیش ملا۔ میں تل ایک جھیل میں پڑی ہوں۔ اور کچھ معلوم نہیں۔ کہ میں کس کنارے پر پہونچوں گی ٭

یہ کیاہ آستہ یہ کیت زنگ گوم
بے زنگ کرت گوم لگہ کمہ شا ٹھے

۱؎ بھلا اور بُرا ۲؎ آندھی ۳؎ پیش آنا ۴؎ اُٹھا۔

موُرکھ مار بوُتھ کام کرودھ لوبھ
نتہ کال برت مارنے کال
میلنئی کمن دِکھ سوُوچار شُم
بہ شے تہند کیاہ کیو تھ زال (۱۶۶)

تم کام۔ کرودھ اور لالچ رُوپی دیوُوں کو مار دو۔ یعنی اندریوں کو قابو کر دو۔ ورنہ وُہ تیر مار کر تمہیں ہی مار دینگے۔ من میں وچار کر کے تم آتمہ سرُوپ کو پہچان لو۔ تب تمہیں معلوم ہو گا۔ کہ وُہ کتنے ہی ناپائدار ہیں۔

موُڑس پر دِن چھوی موُوال اَڑُن
موُڑس پرُدِن چھوی موُرھ پوان کوہ
موُڑس پرُن چھوی سمندر پوُرُن
موُڑس پرنان وُدوی دُہہ (۱۶۷)

موُرکھ کو نصیحت کرنا ایسا ہی مُشکل کام ہے۔ جیسا کہ بال کو چیرنا۔ موُرکھ کو نصیحت کرنا جیسے ایک پہاڑ کو چھوٹے چھوٹے پتھروں سے کھڑا کرنا ہے۔ موُرکھ کو نصیحت کرنا جیسے ایک سمندر کو خشک کرنا ہے۔ در اصل ایک موُرکھ کو نصیحت کرنا اپنا ہی وقت ضایع کرنا ہے:

منند چھہ ہیکال کر تہ ہنم
یلہ ہدِن گیلم اُسن تراوہ
یوَر گہ جامہ کرسنہ ذرم
یلہ اندرم خاگ روزم وارہ (۱۶۸)

میں ماتم کی زنجیر سے تب ہی چھوٹوں گی۔ جب کہ مجھ میں لوگوں کا

من کو یہی اُپدیش کیا۔ تمام جیوؤں میں ہیں نے کیول پرماتما دیکھا۔ مجھے بھوجن کھانے سے کیا نفرت ہے؟

مُوڑہ کرئے چھے نہ وارُن پارُن
مُوڑہ کرئے چھے نہ درِن کاہ
مُوڑہ کرئے چھے نہ پانچ اگن وارِن
سہزہ گارُن چھوئی اُپدیش (۱۶۴)

ہے مُورکھ کرم کرنا۔ برت رکھنا یا کھانا نہیں ہے۔ نا ہی کرم کرنا ایکادشی کا برت رکھنا ہے جیسے مُورکھ ناہی کرم کرنا پانچ اگن کے بیچ بیٹھنا ہے۔ بلکہ پرماتما کا تلاش کرنا ہی سچا اُپدیش ہے ؟

میٹ ئی دہ نہ پرکاش سگُنے
پیتیش ہیوہ نہ تیرتھ کاتھہ
دیس ہیوہ نہ باندوَ سگُنے
بگیس ہیوہ نہ سُکھ کاتھہ (۱۶۵)

پرماتما کے گیان کے برابر کوئی روشنی نہیں ہے۔ پرماتما کے تلاش کے برابر کوئی تیرتھ نہیں ہے۔ پرماتما کے برابر کوئی رشتہ دار نہیں اور پرماتما کے بھجن کے برابر کوئی سُکھ نہیں ؟

---

مندرجہ ذیل دو واکھیہ بابا نصرالدین اور نند رشی صاحب نے کہے ہیں جن کے جواب میں

| | |
|---|---|
| سرئیس ہیوہ نہ پرکاش سگُنے | گنگہ ہیوہ نہ تیرتھ کاتھہ |
| بالیس ہیوہ نہ باندوَ سگُنے | رَنہ ہیوہ نہ سُکھ کاتھہ |
| اُچھن ہیوہ نہ پرکاش سگُنے | گُتھن ہیوہ نہ تیرتھ کاتھہ |
| چھندس ہیوہ نہ باندوَ سگُنے | گھنہ ہیوہ نہ سُکھ کاتھہ |

ط۱ گیان ط۲ تلاش ص۳ عورت ط۴ نند رشی

نکل جائیں گی اور غیروں کے ساتھ سارا دن گزار دیں گے ؎

بہ یہ کرم کرہ پتھرن پانس ہو
ارزن یہ زن ہنیس کیو تھہ ییت
انہہ را گہ رست پتھرن سو اتمس
اَدہ یور گڑھہ تہ تور چھم ہیوت (۱۶۱)

جیسا کرم میں کروں گی اُس کا پھل میں نے بھوگنا ہے۔ دوسرے کو اس کے کرنے سے یا نتیجہ سے کیا غرض ہے۔ اگر آخر میں میں تمام کرم نشکام بھاؤ سے پرماتما کے ارپن کروں گی۔ پھر جہاں بھی میں جاؤں گی وہاں میرے واسطے ضرور بھلائی ہو گی ؎

مُوڈس گنیانچ کتھ نو ونزے
خرس گور دنہ رادی ذہہ
یسکہ شا ٹھس پھل نو ودزے
راور زہہ کُم یا جن تیل (۱۶۲)

مورکھ کو گیان کی باتیں نہیں کہنی چاہیں۔ گدھے کو گڑ دینے سے صرف وقت ہی ضایع ہو گا۔ ریتلی زمین میں بیج نہیں بونا چاہے۔ نا ہی بھوسے کی روٹیوں پر تیل ضایع کرنا چاہیے ؎

میتھیا کپٹ اَستا تروڈم
منس کرم سوئی اُپدیش
زنس اندر کیول زونم
اَنس کھنس کُس چھم دیش (۱۶۳)

میں نے فضول باتیں دھوکہ بازی اور جھوٹ بولنا چھوڑ دیا اور اپنے

غرض یا واسطہ بھلائی جیووں میں نفرت

پرَمس ہا مالہ پرونم ہتہ پانس وُونم[۱]

ونہ کس لَلہ چھُوئی مہ پانس راہ[۲]

داہ گُرم دِلس مہ کیاہ کرم

گنو آ دست سوزم نہ مَطلنہ (۱۵۸)

غیروں کو میں نے نصیحت کی۔ لیکن خود غافل رہی۔ میں کس کو کہونگی

یہ مجھے اپنا قصور ہے۔ میرے دِل میں افسوس ہے۔ کہ میں نے کیا

کیا۔ وہ ایک ہی تھا۔ مگر میں جان نہ سکی ؂

بُوتھہ کیاہ جان چھکھ مَندہ چھُی کِنی

اپلح کتھہ زانہہ سنی لَتر ہا

پران لیکھان وُٹھہ انگج گجی ہا

اندرم دُوئی زانہہ ژوجی لَتر ہا (۱۵۹)

شکل صورت کیا ہی تمہارا منہ ہے۔ لیکن دِل تمہارا پتھر کے

مانند ہے۔ اصلی بات تمہارے دِل میں کبھی نہیں کھُب گئی۔ یعنی

اصلی مطلب نہیں سمجھے۔ پڑھتے اور لکھتے تمہارے ہونٹ اور

انگلیاں گھس گیئں۔ لیکن اندر کا دُوییت بھاؤ نہیں مٹا؂

برہ وُنٹھہ کالہ آسَن تھجی کیرن[۵]

ننگ ژونٹھہ پَتن ژیرن سیت

ماجہ کورہ اَتھہ واس گرت نیرن

دُوہہ دِلن برن پرہ دِلن سیت (۱۶۰)

آنے والے سمئی میں حالات ایسے ہونگے۔ کہ ناشپاتی اور سیب

خوبانی کے ساتھ بے وقت پک جائیں گے۔ ماں بیٹی ہاتھ میں ہاتھ ملاکر

۱۔ غلط راستہ پر لگی۔ ۲۔ قصور۔ ۳۔ دہرم۔ ۴۔ حالات۔ ۵۔ پراسئے۔

پرُن سُلب پالُن دُرلب
سہج گارُن شوکھم تہ کرُوٹھ
ابھیاسِ سے گھنر کاشاستر موٹھُم
چیتن آنند نشچے گوم (۱۵۵)

پڑھنا آسان ہے لیکن اس پر عمل کرنا مشکل ہے۔ سچائی اور اصلیت کی تلاش کرنا بہت ہی شوکھم اور مشکل کام ہے۔ بہت ابھیاس کرنے سے میں شاستر بھول گئی۔ تب مجھے سچی خوشی کا نشچے ہوا:

پران پران زِو تال پھچھم
ژِرہ یوگیہ کرے تجم نہ زانہہ
سمرن فِران ہٹھ تہ ژنگ گجم
منیہ دوئی مالہ ژاجم نہ زانہہ (۱۵۶)

پڑھتے پڑھتے میری زبان اور تالو گھس گئے۔ تمہارے لائق مجھ سے کوئی کریا نہیں ہو سکی۔ مالا پھرتے پھرتے میرا انگوٹھا اور انگلی گھس گئی۔ لیکن میرے دِل کی دوئی کبھی دُور نہیں ہُوئی:

پرِتھ تہ بوزِنت برہمن ژھِٹن
آگر کھشن تھندِ ویدہ سیتی
ٹیپنچ سن وتھ تھاوَن ہٹن
موہت من گژھاک اہنکاری (۱۵۷)

پڑھ کر اور سُن کر برہمن بر نشٹ ہو جائیں گے۔ اُن کے وید پڑھنے سے دیباوئں کے منہ بھی چھپ جائیں گے۔ وہ ہٹن کا مال ہٹن پہونچا دیں گے یعنی بُرے کرم کریں گے۔ یہ نیچ کام کر کے بھی وہ مغرور ہو جائیں گے:

؎۱ پرماتما کی تلاش ؎۲ نفرت۔ ؎۳ چوری کر کے۔

منتھنے سے کوئی فایدہ نہیں۔ ایسے لوگوں کو اہم بھاؤ یعنی غرور پیدا ہوتا ہے۔ شاستر پڑھ کر وہ لوگوں میں دکھاوا کرتے ہیں۔ میں نے شاستر پڑھا۔ اور پڑھتی رہتی ہُوں۔ یعنی مطلب کو جان گئی ؛

پُرُم پوٗلُم ابھٕ ثی پٕرُم
کیٛسرہ ا دنہ دودلُم رٹت شال
پرِس پہ وُنم تہ پانس پوٗلُم
اَدہ گوم معلوم تہ زٕی نم ہمال (۱۵۳)

جو کچھ میں نے پڑھا۔ اُسی پر عمل کی۔ جو میں نے نہیں پڑھا تھا۔ وہ بھی پڑھا۔ مَن روُپی شیر کو میں نے خواہشات روُپی جنگل سے نکال کر ایک گیدڑ کی طرح بنایا۔ یعنی قابو کیا۔ دوسروں کو اُپدیش کیا۔ اور خود اس پر عمل کی۔ تب مجھے اصلیت معلوم ہو گئی۔ اور میدان جیت لیا یعنی کامیابی حاصل کی ؛

پرہ ہٕنہ لو توٗکن چھک پرنان
پانس چھوی نہ گرٹھان کنُن
یتھہ پاٹھ تَج چھیٔ ناتہ کنان
پانس نہ پوٗشان پکٕہ ہنڈتہ کن (۱۵۴)

اے اُپدیش کرنے والے۔ تو لوگوں کو اُپدیش کرتا ہے۔ لیکن خود تم پر کوئی اثر نہیں ہوتا۔ گویا یہ آواز تمہارے کانوں تک نہیں پہنچتی۔ جس طرح کسائی مانس بیچتا ہے۔ اور اپنے لئے پھُوٗ کی ٹانگ اور کان تک بھی نہیں بچتے ؛

(۱) دِلاسہ روُپی شیر۔ (۲) دُنیا کا خواہشات روُپی جنگل۔ (۳) اُپدیش کرنے والا

چھِنس اوبرَس زاین زانہٕ ہیہ وٕ
سمندرَس زانہٕ ہیہ کَدرِت وَتھہ
ہِندِس رُوگیَن ویدٕ انہٕ ما
مُوڈس زونُم ہہٕ پرٕنتِ کِتھہ (۱۵۰)

یہ ممکن ہے۔ کہ میں دکھنا ئین ابر کو ہٹا سکوں۔ یہ بھی ممکن ہے۔ کہ میں سمندر کو ایک نالی کے ذریعہ خالی کر سکوں۔ اور یہ بھی ممکن ہے کہ روگیوں اور کوڑیوں کو میں علاج کر سکوں لیکن یہ ممکن نہیں۔ کہ میں ایک مُورکھ کو اُپدیش کر سکوں ؂

دِلکِس باغَس دُور کر گاسِل
اَدٕ دوہ نوئی ہمبرزلہٕ باغ
مَوتِ منگہٕ نے عُمرُ ہُند حاصِل
موت چھُوئی پتہٕ پتہٕ تحصیلدار (۱۵۱)

اپنے دل رُوپی باغ سے گھاس پھُوس دُور کر۔ تب ممکن ہے۔ کہ تمہارا نرگس کا باغ پھُولے گا۔ مر کر تم سے زندگی کی کمائی مانگیں گے موت تمہارے پیچھے تحصیلدار کی طرح لگا ہے۔ یعنی جیسے تحصیلدار مالیہ کے لئے پیچھے لگا رہتا ہے ؂

پَرٕ پَرٕ کَران زَل ہیو مَنداَن
بڑیوک تمنیٔ اہم بھاوُ
شاستر پَران ہیکتھا لَبان
شاستر پَرمُ تہٕ پَران چھِنس (۱۵۲)

وہ ایسے پڑھتے رہے۔ جیسے کوئی پانی کو منتھتا ہے۔ یعنی پانی

ح۱۔ ہٹانا۔ ح۲ سمجھانا۔ ح۳ مغروری۔

ڈمی ڈیٹھم پانڈون ہنز ماجی
ڈمی ڈیٹھم اَکراجی ماس (۱۴۷)

ے وقت میں نے بھٹی کو روشن دیکھا - ایک وقت میں نے ناہی دھواں دیکھا اور ناہی آگ دیکھی - ایک وقت میں نے پانڈوؤں کی ماں دیکھی - ایک وقت میں نے کمہار کی ماسی دیکھی ؛

رُڈپچ گرے وارہ بَرتر دِپرم
پران ژھجہ رَٹم تہ دِیُتمس دَم ٹھا
ہَرِ دیہ چہ کوٹھر اندر گنڈم
اوم کے چوبکہ تُلمس بَم ٹھا (۱۴۸)

میں نے اپنے شریر رُوپی مکان کے دروازے اور کھڑکیاں بند کیں - پران چوروں کو پکڑ کر میں نے امداد کے لئے پکارا - اور اپنے دِل رُوپی کوٹھڑی میں اُن کو بند کر کے اوم روپی چابک سے خوب مارا یعنی قابو کیا ؛

دُہہ تارہ دُنیاہس ژھالہ بُرم
پتو زونم کنہہ نتہ کیاہ
ہاؤسہ للہ اہہ علماہ پورم
پَرہ پَرہ کورم پورم نہ زانہہ (۱۴۹)

چند دن آکر میں نے دُنیا میں خرچ کیا - بعد میں میں نے اِس کی اصلیت جان لی - کہ یہ کچھ بھی نہیں ہے - مجھ لل نے بڑی خواہش سے تعلیم حاصل کی - میں پڑھتی رہی لیکن ایسا کرنے سے ایشور کو نہیں پایا

حہ۱ - امداد حہ۲ مارا - حہ۳ - پرماتما کو پراپت کیا -

دَمی ڈِیٹھم تھَر پھُلہ وِنی
دَمی ڈِیوٹھم اُگل ہتہ خار (۱۴۴)

ایک وقت میں نے ہہتی ہُوئی اَندی دیکھی۔ ایک وقت میں نے ناہی پُل دیکھا۔ ناہی پار جانے کا ذریعہ دیکھا۔ ایک وقت میں نے کھلی ہُوئی بیل دیکھی۔ ایک وقت میں نے ناہی پھُول نہ ہی کانٹا دیکھا

دَمی آسس پوکٹ کُورا
دَمی سَنپنس جوان پُور
دَمی آسس پھیران تھوران
دَمی سَنپنس وَرت سُور (۱۴۵)

ایک وقت میں ایک چھوٹی کنیا تھی۔ ایک وقت میں پُوری جوان ہو گئی۔ ایک وقت میں اِدھر اُدھر پھرتی رہتی تھی۔ ایک وقت میں پھر جل کر راکھ ہو گئی۔

دَمی ڈِیوٹھم شبنم پوان
دَمی ڈِیوٹھم اپوان سُور
دَمی ڈِیٹھم ابہ گٹہ راتس
دَمی ڈِیوٹھم اُ ڈہیس نُور (۱۴۶)

ایک وقت میں نے شبنم پڑتے دیکھا۔ ایک وقت میں نے کُہر پڑتے دیکھا۔ ایک وقت میں نے اندھیری رات دیکھی۔ ایک وقت میں نے دِن کی روشنی دیکھی۔

دَمی ڈِیٹھم گج دَنہ وِنی
دَمی ڈِیوٹھم ذہہ نتہ نار

---

(۱) شعلے اُٹھتے ہُوئے۔

تراوِک نَے تہ چھوک جاہِل
وُہنہ پَچھے سُل تہ شانڈن یارہ (۱۴۱)

اد غافل آدمی۔ ذرا تیزی سے چل۔ ہوشیار ہوجاؤ اور دل کے بُرے
خیالات چھوڑ دے۔ اگر ایسا نہیں کروگے۔ تو تُم بڑے بیوقوف ہو۔
اس لئے ابھی سویر ہے۔ تو اپنے سچے دوست (ایشور) کی تلاش کر۔

دَمہ دَمہ اومکار مَن پَرہ نو دُم
پانَے پَران پانَے بوزان
سُوہم پدس اہم گولُم
تَلہ لَل ابو واتِس پرکاشس تھان (۱۴۲)

ہر وقت میں نے اومکار کے منتر کا ہی اُچارن کیا۔ خود ہی میں پڑھتی
رہی اور سُنتی رہی۔ سوہم پد سے میں نے اہم کو ہٹا دیا۔ تب میں لل
گیان مارگ پہ پہونچی۔

دِیشہ آیس دَش دِیشہ تیلِہِ[۱]
دِلتہ دوُلُم شُنیہ اوہ واوُ[۲]
شُوی ڈیوٹھم اشاپہ شاپہ ہیلت[۳]
شِہ تہ تِرہ ترِمکس تہ شُوی دراوُ[۴] (۱۴۳)

دسن دیشوں کو پھر کر میں اپنے دیش میں آئی۔ میں شُنیہ اور ہوا
کو کاٹ کر اُس میں سے گُذری۔ ہر جگہ میں نے شِو ہی شِو موجود پایا
چھ اور تین کو بند کیا۔ تب بھی کیول شِو ہی رہا۔

دِمی ڈیٹھم نَد وہہ[۵] دِتی
دِمی ڈیوٹھم سُم نتہ تار

ح۱ پھر کر۔ ح۲ چھ حواس۔ ح۳ اتین لگی۔ ح۴ ہوا۔ ح۵ پل۔

تمہارے نیچے ایک گہری کھائی ہے۔ اور تم اُس پر ناچتے ہو۔ ہے منش تمہارا دِل یہ دیکھ کر بھی کیسے برداشت کرتا ہے۔ سب کچھ حاصل کیا ہُوا یہاں ہی چھوڑنا پڑتا ہے۔ ہے منش یہ دیکھ کہ تم سے روٹی کیسے کھائی جاتی ہے۔

ڈُمن بستہ دِتو دِل
دِمنس پیتھہ دمان کھار
ششتر سس سون گژھہ ہے حاصل
وُرنہ چھے سُل تہ ژہانڈُن یار (۱۳۹)

تم اپنا دِل پھونکنے کی طرف لگا۔ جیسے لُوہار پھونکنے میں پھونک بھرتا ہے۔ ایسا کرنے سے تمہارا لوہا سونے میں تبدیل ہوگا ابھی سویرا ہے۔ تو اپنے دوست (ایشورا) کی تلاش کر۔

سُمدرس نو لبئی ساحل
نہ تتھ سُم نہ تتھ تار
پرَہ کرہ پیدہ پرہ واز تُل
وُرنہ چھے سُل تہ ژہانڈُن یارہ (۱۴۰)

سمندر کا ساحل پانا بہت مشکل ہے۔ جس پر نہ کوئی پُل ہے نہ پار جانے کا کوئی ذریعہ ہے۔ تم پَر پیدا کرو جس سے کہ تم پرواز کر سکو گے۔ ابھی سویرا ہے۔ تم اپنے سچے دوست (ایشور) کی تلاش کرو۔

غافلہ ہکہ کھے۔ قدم تُل
ہوشیارہ رو زہ تہ تراو پیاوِل

(۱) یہ اللہ لگے دو واقعیہ بلی خوری نے تنور سے نکل کر شاہد ان کو کہہ

وُہ انسان نہیں۔ بلکہ رِشی ہے۔ جنہوں نے مَن سے شریر کو بُھول دیا۔ بُرا اور بوڑھا ہو کہ وُوسرا تمہاری پرورشں کیسے کر سکتا ہے۔ جیسے ٹُوٹے ہُوئے برتن میں گھی ٹھہر نہیں سکتا ؛

تَنہٖ مَنہٖ گوٗلیس پہ تَس کوٗنیٗ
بوٗزُم سَتُک گھنٹہٕ وَزان
تتھہ جایہ دھارنایہ دھارنا ڈٔرِم
آکاش تہ پرکاش کوٗرُم سَرہٕ (۱۳۶)

میں تن مَن سے اُس کی (ایشور) طرف لگی رہی۔ میں نے سچائی کے گھڑیال بجتے سُنے۔ میں نے اُسی جگہ استقلال سے تپسیا کی۔ تب میں نے آکاش اور پرکاش کا گیان حاصل کیا ؛

تمبر پیٖلیس۔ کوہ نو ژارچن
مَس۔ رَس کوہ اوہنا چن گَس
شانتن ہنز کرئے تو لہ ہولہ ڈاچن
اندرِم گاہ پلہ رنبر پہ پیوس (۱۳۷)

ایک چنگاری جو اُس پر پڑی۔ تو اُس نے کیوں برداشت نہیں کی۔ شراب اُس کے ناڑیوں میں کیوں چلا گیا۔ اُس نے سادھوؤں کے کریا کا وزن اور قیمت گھٹا دیا۔ جب کہ اُس کی اندر کی روشنی باہر نکلی ؛

تلہ چھوئی زِ گوس تے پتھہ چھوک ژان
وتہ مالہ مَن کیتھہ پژان چھوئی
سوری سومبر کتھہ یتہ چھوئی موژان
وتہ مالہ اَن کیتھہ روژان چھوئی (۱۳۸)

۱؎ آزماکر سمجھ لینا۔ ۲؎ کرامات کرنی فروع کی۔ ۳؎۔ خندہ۔ ۴؎ باقی رہتا ہے۔

کاش میں ناڈی دلی کو من میں قابو کرنا جانتی۔ تب میں کلیش کو کاٹتی باندھتی اور دباتی۔ اور میں رس اور رساین کو بھی جانتی۔ رشنو کا پانا مشکل ہے۔ اس اُپدیش کو اچھی طرح سے جانو ؛

زٕوٕس دُود تےٚ داوِس سگرےٚ
سگرےٚ کرٕکھ تہٕ مرکھ نہٕ زانہہ
سگرےٚ نےٚ کرِکھ آم ڈلم کرِکھ
بڑٕ ئی دود تہٕ بلک نہٕ زانہہ (۱۳۴)

شریر کے ساتھ بیماری ہے۔ بیماری میں پرہیز کرنا لازمی ہے اگر پرہیز کیا۔ تو کبھی نہیں مروگے۔ اگر ناپرہیزی کی۔ اور لاپرواہ رہے تو بیماری بڑھ جائیگی اور کبھی بھی صحت یاب نہیں ہو جاؤ گے ؛

ٹیوٹھ مدُرِ تےٚ میوٹھ زہر
یس یوٗتھ ژونگ جتن بھاوٕ
یم یتھ کرٕ ئی کٔل تہٕ کہر
سُو تتھ شہر واتھ پُو (۱۳۴)

کڑوا میٹھا ہے۔ اور میٹھا کڑوا ہے۔ جس نے جس کی خواہش ظاہر کی۔ اور جس نے خواہش کی۔ اور اُسی پر مستقل رہا۔ وہی اُس شہر یعنی منزل مقصود کو پہونچ گیا ؛

تٕم چھہ منش تٕم چھئی رِشی
یمو رہیہ منہ نشہ گوٗ ہا
بڑٕت تہٕ بوٗر بہت تٔبیاگ کیا رچھے
نوٗش ہیہ تس ہانٔس پیہ گیو (۱۳۵)

ط۱ ناپرہیزی ط۲ اندریوں کا قابو کرنا۔ ط۳ خواہشات کو پورا کرنا ط۴ غیر

کرنے سے مرنے کا خوف دُور ہُوا ؂

چھُوٹؠ کوٚہ چھُوئی ناکوٚنے
وُچھم اَور یور نا کوٚنے
دِیہ پھَل تتَے مول ناکوٚنے
چھُوٹؠ ژٕہارُن تہٕ گٲرُن ناکوٚنے (۱۳۰)

وُہ (ایشور) کہیں ہے اور کہیں بھی نہیں ہے۔ میں نے اُس کو اِدھر اُدھر کہیں نہیں دیکھا۔ یہ قُدرت کا پھَل ہے۔ اُس کی کوئی قیمت نہیں۔ اُس کے تلاش کرنے کی ضرورت اِدھر اُدھر کہیں نہیں ہے۔ بلکہ وُہ ہر جگہ موجُود ہے ؂

نہٕ بُم پراوِت وِبھو نوٚژھونڈُم
دُبھِن۔ بھُوگن ہرم ہہٕ پہٕ رے
سمُوئی آہار سِتھا نہٕ وزنم
ژہٕ اُم دُکھ واُد پولُم دےا (۱۳۱)

جنم پاکر میں نے ایشوری کی خواہش نہیں کی۔ لالچ اور عیش و عشرت کی چاہت نہیں کی۔ تھوڑا سا کھانا بھی کافی سمجھی۔ میں نے دُکھ۔ درد اور غُربت برداشت کیا۔ اور ایشور کی پُوجا کرتی رہی ؂

زانہٕ ہا ناڈی ڈَل رٹِت
ژرٹِت۔ وٹِت۔ کوٚٹِت کلیش
زانہٕ ہا اَدہ رَس تہٕ رسایَن گٹِت
شوٚ چھُوئی کرُوٹ تےٚ زٲن اپدیش (۱۳۲)

(۱) خوشحالی (۲) پُوجا کی۔

یم ترٹھ کرنے کالہ چھوڑ دارے
کوہ ترّان کا ہستی مرتن شینکھ (۱۲۷)

تم سُوہ۔ مایا میں اس سنسار رُوپی ساگر میں کیوں ڈُوبے ہو۔ جب تم نے سُتھو توڑ دیا۔ تو تُمہارے سامنے اندھیرا چھا گیا۔ مقررہ وقت پر یم تُم کو ہر بھی گت کر کے لے جائے گا۔ اس لئے تُمہارے مرنے کا خوف تُم سے کون ہٹائے گا ؎

کرم زہ۔ کارن ترہ کو سمجھی
یوہ لبھک پرہ گُوکس انگ ٹ[1]
وُتھ کہس شورتی منڈل ترمبت
تُوئے ژلیٔ مرتن شینکھ (۱۲۸)

کرم دُو ہیں۔ اور کارن تین۔ ان پر تو کبھک یوگ سے ابھیاس کر پرلوک میں ایسا کرنے سے تُمہارا شُدھار ہوگا۔ اس لئے اُٹھو اور سُورج منڈل پر چڑھ کر اُسے جُبھر کرو۔ ایسا کرنے سے تُمہارے مرنے کا خوف تُم سے دُور ہوگا ؎

گیانِک امبر پُوریت تنے
یم پد للہ زپ تم ہر دِہ انگ ا
کارِن پرہنہ وِکِ لے کر للے
چِست جوٗہِتہ کاسن مرتن شینکھ (۱۲۹)

اپنے آپ کو گیان رُوپی کپڑوں میں پہنا کر۔ اُن واکھیوں پر دل میں دھیان دے۔ جو لل نے کہے ہیں۔ پرنو یعنی اوم کے مدد سے لل نے اپنے چِت رُوپی جیوتی میں لئے کیا۔ تب ایسا

[1] ایک اُونچا سنگھاسن۔

تم نے چتڑی کاٹ کر اپنے واسطے میخ گاڑھ دی۔ ایسا تم نے کیا بیج بویا۔ جس کا پھل تم کو ملے گا۔ مورکھ کو نصیحت کرنی جیسی گنبذ پہ بانٹے پھینکنے ہیں۔ وہ ایسے ہی ضایع ہونگے۔ جیسے کہ بھوکے بیل کو گڑ کھلاتا ہے ؛

چت امر پتھ تھوزے
ہتہ ترادتھ لاگہ زور
تتہ ہتہ نو شینگ نرے سندرزے
دوہ شر ہتہ کوچھہ نو موے (۱۲۵)

اپنے چت کو امر پرماتما پر لگانا چاہیے۔ اگر تم نے پیچھے راستے کو چھوڑ دیا۔ تو تمہارے خیالات وشیوں کی طرف لگ جائیں گے وہاں پر شک نہیں کرنا چاہیے۔ بلکہ حوصلہ کرنا چاہیے۔ خیالات ایسی دودھ پینے والے بچے کی طرح ہیں۔ جو کہ ماں کی گود میں چنچل ہوتا ہے ؛

شرامر چھتر رتھ سنگھاسن
ہاد۔ ناٹہ رس۔ تولہ پرپاک
کیا مانت یتہ ستھر آسہ ون
کوہ زان کاسی مرنن فکہ (۱۲۶)

شرامر چھتر۔ رتھ سنگھاسن خوشی۔ تھیٹر ایک نرم بستر ان میں سے کوئی بھی اس سنسار میں پائیدار نہیں۔ تو سمانے ان سے تمہارے مرنے کا خوف کیسے چلا جائے گا ؛

گیاہ بوڑگ موہ بھوہ ندرہ وار
سوتھ۔ لوہرت پچی تم پتھ

(۱) پرماتما۔ (۲) شک کرنا۔ (۳)۔ اگیان روپی اندھیرا۔

رہبر کے ہو گیا۔ میں کیسے کامیاب ہو سکوں؟

ژالُن چھُو وُزملہ تہ ترٹے
ژالُن چھُو مندنن گٹے کار
ژالُن چھُو پننُن پان کڈُن گرٹے
ہِہتہ مالِہ سنتوش واتہ پانٹے (۱۲۲)

برداشت کرنا بجلی کا چمکنا اور گرنا ہے۔ برداشت کرنا دوپہر کے وقت اندھیرا ہونا ہے۔ برداشت کرنا اپنے آپ کو چکّی میں سے گذارنا ہے۔ ہے پیارے! سنتوش کر۔ کیونکہ جو کچھ تمہارے ماتھے پر لکھا ہے۔ وہ تمہیں ضرور ملے گا۔

ژِ ی دِیوہ گرتس تہ دہرتھی سنز ک
ژے دِیوہ وِتت گرزن پران
ژِ ی دِیوہ ٹھنہ روستی وُزک
کُس ژانِہ دِیوہ چون پرمان (۱۲۳)

ہے پرماتما! تو ہر کسی جگہ اور سارے جہاں میں موجود ہے تو نے ہی سارے شریر دھاریوں کو پران دیئے۔ تو بغیر بجائے بجتا ہے۔ تمہارا اندازہ کون لگا سکتا ہے۔

ژرمُن ژٹِت دِیوتہ ٹُن پانس
ہتیو تھ کیاہ ووؤتھ تہ پھلی سوُی
مُوٗرس اُپدیش گے رینز دمنش
کن واندس گور آپرت روُ و (۱۲۴)

یہ گوم لیکھتِ تہٕ ماہرم

ہرم ہرم تہٕ ہرم کیاہ (۱۱۹)

ہے پرماتما! میں رانی بننا نہیں مانگتی۔ راون کی بڑی سلطنت مجھے کس کام کی ہے۔ جو میرے ماتھے پر لکھا گیا۔ وہ کون ہٹا سکتا ہے۔ چلا جائے گا۔ چلا جائے گا۔ میرے سے کیا چلا جائے گا ؎

نفسُے میون چھُوٗ مدہستوٗ

آمہ ہیٚس منگنم گرٕ گرٕ بلی

لچھہ منزٕ ساسہ منزٕ اکھا لوٗستی

نتہٕ ہت نم ساریٚ تلی (۱۲۰)

میرا نفس ایک مست ہاتھی کے مانند ہے۔ جو ہاتھی مجھ سے ہر وقت بل یعنی خوراک مانگتا ہے۔ لاکھوں اور ہزاروں میں سے کوئی ایک بچتا ہے۔ ورنہ یہ ہاتھی ہر ایک کو اپنے پاؤں کے نیچے کچل ڈالتا ہے ؎

نابد بورس اٹہ گنڈ ڈیول گوم

دِلن کارہل گوم ہکہ کیوہ

گورہ شوند وننُ راوُن تیول پیم

پہلہ رست کھیول گوم ہکہ کیوہ (۱۲۱)

نبات کے بوجھ کا گانٹھ میرے کندھے پر ڈھیلا پڑ گیا۔ دِل کا کام میرے واسطے الٹا ہو گیا۔ تو میں کیسے کامیاب ہو سکوں۔ گورو کے شبد میرے واسطے زہر قاتل ہو گیا۔ میرا ریوڑ بغیر گڈریا یعنی

واسطہ جائے گا۔ ڈھ پنچ گیا۔ حلہ۔ بہت مشکل۔

میں ذرا سے ہوا کے جھونکے سے پتّے گِرتے ہیں۔ میں نے ایک بے وقوف
کو دیکھا۔ جو کہ اپنے باورچی کو مارتا تھا۔ تب سے میں لَل اُس دِن کے
اِنتظار میں ہُوں۔ جب کہ مُجھ سے دُنیا کا پریم چھُوٹ جائے۔

نیم کُرت گرہ با۔
ژِہ تِس کَرہ با رپیٹھ
مَرِہ بروہُٹھی مَربا
مَرِتھ تہ مرتبہ ہری (۱۱۷)

جب کہ تُم اپنی ماں کے پیٹ میں تھے۔ تب تُم نے ایک وعدہ
کیا۔ وُہ وعدہ تمہیں کب یاد آئے گا۔ تمہیں مرنے سے پہلے
ہی مرجانا چاہیئے۔ پھر جب تمہاری موت کا دِن آئے گا۔
تب تمہارا مرتبہ بہُت بلند ہوگا۔

ہہُ پیالیس تہ نہ زالیس
نہ کھیے یَم ہند تہ نہ شونٹھ
شُرِحا شُتن چھَس پتہ تے
ح۲ شُتن چھَس بروہُٹھ (۱۱۸)

میں نے نہ کبھی بچے کو جنم دیا۔ نا ہی میں خُود پیدا ہُوئی۔ میں نے
نا سنی اور سونٹھ نہیں کھائی۔ میں چھ کے پیچھے ہوں اور سات
کے آگے ہُوں۔

ناکھو بہ نو راقی مَنگیے
ہمہ راوُنُن راج کرہ کیاہ

ح۱۔ کام۔ کرودھ۔ لوبھ موہ۔ اہنکار۔ اگیان۔ ح۲

چلی جاؤ۔ تُو ہی میرے لئے نیم اور اُپدیش بنا۔ تب میں ننگی ہوکر ناچنے لگی ۔

گرٹہ چھُو فیران زیرے زیرے
اوہو کی زانلے گرٹنگ ٹرل
گرٹہ یلہ فیرہ تئے زاویول زیرے
گوٹھ واتہ پلنئے گرٹئے بلَ (۱۱۴)

چکی آہستہ آہستہ پھرتی رہتی ہے۔ چکی کی درمیانی کیل ہی چکی کے کرتب کو جانتی ہے۔ جب چکی گھومنا شروع کرے گی۔ تب گیہوں خود ہی چکی کے پاس پیسنے کے لئے پہونچ جائیں گے ۔

گورس میل پو آمِن ناٹن
بیین پشن ساوھ گیاہ آسے
یہ حال گورس راہ کیاہ ٹاٹن
بر ہمہ کُولس میوہ کیاہ پیئے (۱۱۵)

گورودیو کو کچا مانس کھانے کی خواہش ہوئی۔ کہ دوسرے پشوں کا کیا مزا ہوگا۔ یہ گورودیو کا حال ہے پشوں کا کیا قصور ہے لہذا برہمہ رُوپی درخت سے کیا میوہ نکلے گا ۔

گاٹلا اَک ڈچھم بوچھہ سیتی مران
پَن زن ہران پوانئے وادہ لہ
نِش بُدھ اَک وُچھم دانہو ماران
تنہ لل بو پرازان ژہوانم نہ پراہ (۱۱۶)

ایک دانا آدمی میں نے بھوک سے مرتے دیکھا۔ جیسے پت جھڑ کے مہینے

میں پتے جھڑتے ہیں۔

کھِت تہٕ مُودی نہٕ کھِت تہٕ مُودی
اَدہ زَن گُنڈ نَکھ کرُودِہی نار
یِم ہیوٗ مالہ ہندہ ڈُپل ہاکس ہٹھ رُودی
تِم ہیوٗ مالہ اَدہ مُودی نہٕ زانہہ (۱۱۱)

کھاکر بھی مر گئے۔ اور نہ کھاکر بھی مر گئے۔ تب وُہ کرُودھ اگنی میں جل گئے۔ جو صرف کاسنی اور اوپل ہاک پہ گذارہ کرتے ہیں۔ یعنی سنتوش کرتے ہیں۔ ہے منش! تب وُہ کبھی نہیں مرتے یعنی کبھی دُکھی نہیں رہتے ٭

گورَن پروُژُم سَاسہ لَٹے
یَس نہٕ کُنہہ وَنان تَس کیاہ ناوٗ
پرژھان پرژھان تھچس تہٕ لوٗسُس
کُنہہ نَس نِشے کیاہ تان وَراوٗ (۱۱۲)

میں نے گورو دیو سے ہزار بار پُوچھا۔ کہ اُس کا کیا نام ہے۔ جس کو بے نام کہتے ہیں۔ پُوچھتے پُوچھتے میں تھک گئی اور ہار گئی۔ کِسی چیز سے کوئی چیز نکلا۔ یعنی کسی چیز سے اَیسی سوکھشم چیز نکلی۔ جو عقل سے باہر ہے ٭

گورَن دُپنَم کونوٹُی وَثرُن[۲]
نیبرہ دُپنَم اندرُی اَثرُن
سُوی ہہ اللہ گوٗوا کھہ تہٕ وَژرُن
تَوَے ہیوٗتُم نَنگے نَچُن[۳] (۱۱۳)

گورو دیو نے مجھے ایک ہی اُپدیش کیا۔ کہ باہر سے اندر کی طرف

(۱) ایسی چیز جو عقل سے باہر ہے۔ (۲) آتما اور پرماتما کا گیان (۳) شِو کے ساتھ ایکتا۔

ہے منش! میں تمہیں ایک بات بتاؤں گی۔ میری بات بیش بہا ہے میدان کے اندر تم غافل ہو کر سو گئے۔ تو گیدڑ تمہاری اُجڑی یعنی استریاں وغیرہ لے کر بھاگ جائے گا۔ یعنی اگر تم سنسار میں غافل رہ گئے۔ تو کال رُوپی گیدڑ تمہارا کام ختم کر دے گا ؛

کُس ڈنگہ تہ کُس زاگہ
کُس سَر وترہ تیلی
کُس ہَرس پُوزہ لاگہ
کُس پَرمہ پَد میلی (۱۰۹)

وُہ کون ہے۔ جو سوتا ہے۔ وُہ کوان ہے۔ جو جاگتا ہے۔ وُہ کونسا جھیل ہے جس سے کہ پانی ہر وقت نکلتا رہتا ہے۔ وُہ کونسی چیز ہے۔ جو شو کی پُوجا میں لائی جائے۔ وُہ کونسا اُونچا ستھان ہے۔ جسکو تم حاصل کروگے ؛

مَن ڈنگہ[1] تہ اکول زاگہ
دیرٹھ[2] سر پانژھ اندرہ وترہ تیلی
سو وچار پوشہ ہرس پُوزہ لاگہ
پرمہ پد چیتن شو میلی (۱۱۰)

مَن سویا رہتا ہے۔ اور جب کہ یہ مَن "کول" سے نیچے آتا ہے تو جاگتا ہے۔ پانچ اندریاں ایک جھیل کے مانند ہیں۔ جو ہر وقت بہتا رہتا ہے۔ وُہ پوتر چیز جو شو کی پُوجا میں لائی جاوے۔ اپنے آتما کا وچار ہے۔ وُہ اُونچا ستھان جس کو تم حاصل کروگے۔ شو سروپ کا درشن ہے ؛

[1] لگاتار۔ [2] خواب غفلت [3] ہمیشہ ؛

کینٹرن دِیُتھ اورِ نے آلوَ
کینشرؤ زٹیُ نالہ وِتھ ١
کینشرن مَس چیتھ اچھ لجہ تالوَ
کینشرن پَپت گٔے ہانوُکھت (۱۰۶)

کئیوں کو تو ( ایشور ) خود ہی بلاتا ہے۔ یعنی اپنا انوگرہ کرتا ہے کیئوں نے دریائے جہلم کا سارا پانی پیا۔ یعنی مالا مال ہو گئے۔ کئی مست ہو کر اُوپر کی طرف دیکھ رہے ہیں۔ کیئوں کا فصل پک کر ٹِڈی دَل نے برباد کیا ۔

کیاہ کرہ پانژن ٢ دہن ٣ تہ کاہن ۴
وُکشُن یتھ لجہ کَرِت یم گٔے
ساری سَمہ ہن اکسی رزہ المہ ہن
اَدہ کیازہ راوِہے کاہن گاوُ (۱۰۷)

میں پانچ ( توتھ ) دس ( اندریاں ) اور گیارہ ( اندریاں اور من ) کو کیا کروں گی۔ جو اس ہانڈی رُوپی شریر کو گھنگول کر چلے گئے یعنی وشیوں کی طرف لے گئے۔ اگر سب اِکٹھے ہو کر ایک ہی رسی کو کھینچتے۔ یعنی سب اندریاں پرماتما کی طرف لگ جاتیں۔ تب وہ گلتے کیوں گم ہو جاتی۔ جو گیارہ کی ملکیت تھی۔ یعنی ایشور کے پانے میں کیوں محروم رہ جاتے ۔

کتھ ہاوَنے۔ کتھ ہاوَنے
کتھ ہیان لیئی لال
منز میدانس نندر پیٔی
ڈُمب ہیتھ ژُلئی شال (۱۰۸)

ط١ - دریائے جہلم کا مطلب اقبال۔ ط٢ پانچ بھوت ط٣ دس اندریاں ط۴ اندریاں اور من

اومٹی پرَنُ اومٹی سُرنُ
اومسٹی ہیت پھٹے زانی زان (۱۰۳)

اوم ہی سب کا آدھار ہے۔ اوم ہی پر وچار کرنا ہے۔ اوم ہی سچا اُپدیش ہے۔ جو کہ ان پڑھ کو بھی روشنی دیتا ہے۔ یعنی اگیانی سے گیانی بن سکتا ہے۔ اوم ہی پڑھنا ہے۔ اور اوم پر ہی وچار کرنا ہے۔ اوم ہی ہمیں سچے گیان سے واقفیت کرائے گا۔

آرسَ نیرہِ نہ مُدرُ شیرے
نہ ویرسَ نیرہ نہ شورا[۱] ناوُ
مُودرکھسَ پرُنُ[۲] چھوی ہستس گشُنُ
یَس ہو مالہ واندسَ پہہ ٹراوُ (۱۰۴)

آک (آکھ) بخارا سے کبھی میٹھے رس کی اُمید نہیں ہو سکتی۔ ایک نامرد کبھی بھی بہادُر نہیں کہلایا جاسکتا ہے۔ بے وقوف کو نصیحت کرنے ہاتھی کو جیسی کھجلی کرنی ہے۔ جس بیل کو سستی آگئی۔ وہ چُست نہیں ہو سکتا

ببر لنگس مُشکُ نو مُودرے
ہُوُن لبسِ کو فور نیرِ نہ زانہہ
مَن اُدھ گارہ مَن فیری زیرے
نتہ شالہ ٹُونگے نیری کیاہ (۱۰۵)

ببر (رہیحان) کی ٹہنی سے خوشبو نہیں جائے گی۔ کُتے کی چمڑی سے کافور کبھی بھی نہیں نکلے گا۔ اگر تم من کو اُسکی (ایشور) طرف لگاؤ گے۔ تو وُہ آسانی سے تمہاری طرف آئے گا۔ ورنہ گیدڑ بھبکیوں سے کچھ مطلب حاصل نہ ہوگا۔

---

ط۱ بہادُر    ط۲۔ نصیحت کرنا۔ سمجھانا۔ ط۳۔ صرف زبان سے پڑھنا
جس کے ساتھ [illegible] ہو۔ ایسا ہی جیسے سُودہ ہو۔ جیسا کہ گیدڑ کا چلانا۔

# واکھیہ للی شوری

اومئی اکوئی اچھر پُرمُ
سوئی ما مالہ رُٹمُ وندس منز
سُوئی ما مالہ کنہ پھٹگرمُ تہٕ ژرمُ
آسس ساہ ژھ تہ سنپنس سون (۱۰۱)

میں نے صرف ایک ہی اکھر اوم پڑھا۔ اسی ایک اکھر کو میں نے دل میں جمالیا۔ وہی ایک اکھر میں نے دل روپی پتھر پر اچھی طرح سے کندہ کیا۔ میں راکھ[1] تھی۔ اور سونا ہو گئی۔

اومئی آدھہ تے اومئی سورُم
اومئی ٹھرمُ پننُ پان
اننت[2] تراوتھ نہتھی بوسُم
تَوے پروُم پرمس تھان (۱۰۲)

اوم ہی سب کا آدھار ہے۔ میں نے اسی پر وچار کیا۔ اوم کو ہی میں نے اپنا آدھار بنایا۔ اس جھوٹے سنسار کو چھوڑ کر مجھے سچائی محسوس ہوئی۔ اس لئے میں نے پرمیشور کا ستھان پایا۔

اومئی چھُوِ دُتھپت اومئی چھُوشُرن
اومئی چھُوا پدیش آپرہ زان

---

[1] راکھ۔ [2] ثانی شریر [3] پرماتما۔

# تمہید

پبلک کی قدر دانی نے میری ہمت کو بڑھایا اور میں اس اشاعت میں للی شوری کے واکھیوں کا دوسرا قسط آپ کی خدمت میں پیش کر رہا ہوں۔ اُمید ہے۔ کہ یہ حصہ بھی وُہی مقبولیت حاصل کریگا۔ جو اس سے پیشتر حصّہ اوّل میں ہُوئی ہے۔ قدر دان اصحاب شاید جانتے ہیں۔ کہ للی شوری کے واکھیہ منتشر حالت میں پڑے ہُوئے ہیں۔ ان کا جمع کرنا میرا اور میرے ساتھی پنڈت سروانند جی چراغی کے شب و روز کی کاوشوں کا ہی رہین منت ہے۔ ہمیں بے شمار دیہات کا دورہ کرنا پڑا ہے۔ شکر ہے۔ کہ ہم بڑی حد تک اس مشترک مشن میں کامیاب ہوئے۔ واکھیوں کی تیسری قسط بھی زیر طبع ہے۔ جو عنقریب شایع کی جائے گی۔

للی شوری کے شیدائیوں سے میں نے پُر زور اپیل کی ہے۔ کہ وہ اس کارِ خیر میں میرا ہاتھ بٹائیں۔ اگر اس یہاں دیوی کے کلام کا کوئی غیر مطبوعہ جزو ان کے پاس موجود ہو۔ تو وہ مجھے عنایت فرمادیں۔ تاکہ عوام دیوی موصوفہ کے کلام سے بہرہ اندوز ہو سکیں۔ علاوہ اس کے دیگر مہاپُرشوں کی تصانیف بھی اگر قلمی صورت میں کسی صاحب کے پاس موجود ہوں۔ تو وُہ مجھے عنایت فرما کر مشکور فرمادیں۔ تاکہ میں ان کو بھی شایع کروں اور پبلک ان کے کلام سے بھی لطف حاصل کر سکیں ؎

آپ کا مخلص خدمتگذار اے۔ کے۔ وانچو

اوم

# واکھیہ للی شوری

اُردو ایڈیشن

## جلد دویم

اے۔ کے۔ وانچو

1996

پبلشرز:-

ٹرسٹ پبلشنگ ہاؤس

حبہ کدل سرینگر

(بروکا پریس سرینگر)

AUM

# THE WISE SAYINGS

OF

# LALISHWARI

واکھیہ للي ایشوری

( Urdu Edition )

PART II.

BY

Pt. A. K. Wanchoo

1996

1st Edition 1,000. Price 0-2-6.

RI

Price 0-2-6.

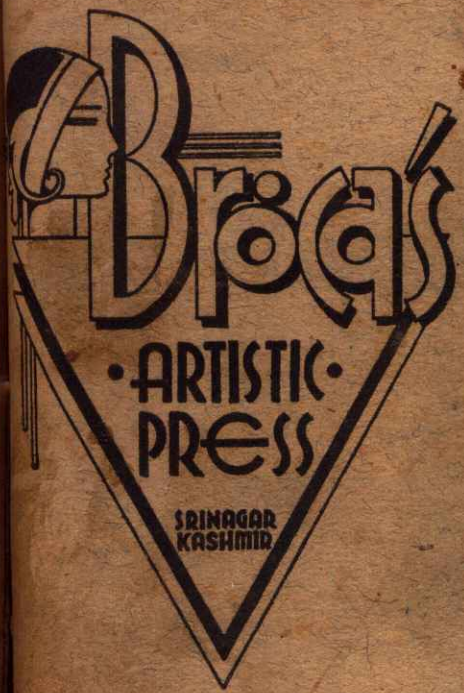

Broca's
ARTISTIC
PRESS
SRINAGAR
KASHMIR

میں نے ایک میدان میں ایک عالیشان مکان بنایا اور اس کو چاروں طرف سے خوب سجایا۔ وہ یہیں رہیگی اور میں چلی جاؤں گی جیسے دُکاندار دُکان کو بند کر کے چلا گیا ؛

# نوٹ !

مُدت سے ہمارے دل میں یہ خواہش موجزن تھی۔ کہ للی شوری کے واکھیوں کو جو معرفت اور گیان کے راز سربستہ ہیں۔ پبلک کے سامنے اُن کی اصلی صُورت میں پیش کر کے اُن کا بھاؤ ارتھ سرل بھاشا میں لکھ جاویں۔ واکھیوں کے جمع کرنے اور اُن کے ارتھ لکھنے میں ہمیں جو محنت کرنی پڑی۔ ساتھ ہی ان کے جمع کرنے میں بہت سے جگہوں کے آنے جانے میں جو دھن خرچ کرنا پڑا۔ اس کا قارئین خود اندازہ لگا سکتے ہیں۔ سردست ہم نے قریباً چار سو شلوک جمع کئے ہیں۔ جن میں سے ہم پہلا قسط ایک سو شلوک ہم پبلک کو پیش کرتے ہیں۔ اس ایڈیشن میں جو خامیاں اور فروگذاشتیں پڑھنے والوں کو نظر آئیں۔ اُن سے ہمیں آگاہ کرنے والوں کے ہم ممنون ہونگے۔ اور طبع ثانی میں وُہ فروگذاشتیں پُوری کی جائیں گی۔ نیز وُہ اصحاب بھی ہمارے شکریہ کے مستحق ہونگے۔ جو ہمیں مزید واکھیوں سے مطلع کریں گے۔ جو اس رسالے میں درج ہونے سے رہ گئے ہیں۔ تاکہ ہم اپنے جمع کئے ہُوئے واکھیوں کے ساتھ مُقابلہ کریں۔ اُمید ہے۔ کہ پبلک ہمارے محنت کی قدر دانی اور حوصلہ افزائی کرے گی ؛

بہت مشکل ہے۔ اس اُپدیش پر غور کرو ؛

سوئی شیل ۱ چھے پٹس ۲ تہ پٹھیس
سوئی شیل چھے اُوتم دیش
سوئی شیل چھے فیر وٹلس گرٹس
شوچھوئی کردٹ تے زین اُپدیش (۹۸)

وہی پتھر سڑک پر بھی ہے۔ اور اُسی پتھر کا پیٹھ بنا ہے۔ اُسی پتھر سے پُوتر جگہ بنی ہوئی ہے۔ اور وہی پتھر گھومنے والی چکّی کا پاٹ ہے۔ شو کو پانا بہت مشکل ہے۔ اسی اُپدیش کو اشارہ مان ؛

لل بوٗژ لیس سوٗمنہ ۳ باغس
وُچھم شوس شکت میلت تہ واہ
تہ ئے کرم امرتہ سرس
زندے مرس ہتہ مہ کیاہ کرے (۹۹)

میں لل اپنے آتمارُوپی باغ میں چلی گئی۔ اور بڑی خوش ہوئی۔ جب کہ میں نے شو اور شکتی دونوں کو دیکھا۔ وہیں پر میں نے اپنے آپ کو امرت کے جھیل میں لے گیا۔ اب مجھے کوئی کیا کر سکے۔ کیونکہ میں اگرچہ زندہ بھی ہوں۔ تو بھی مردے کے سماں ہوں ؛

لر لزم منز میدانس
اند اند کرمکس تکیہ تہ گاہ
شوٗ ۴ روزہ یہتہ تے بوگزنہ پانس
وُوہنہ گو وانس فالو دتھ۔ (۱۰۰)

۱ پتھر۔ ۲ سڑک۔ ۳ آتمارُدپی۔ ۴ پرماتما۔

کامیاب ہو سکتا ہے ؎

شِو گُرتے کیشو پَلنس[1]
برہما پایر ہِن وُلسِس
یُوگی یُوگہ کلہِ پَرزانِس[2]
کُس دیو اشہ وار پرچِڑِس (۹۵)

شِو گھوڑا ہے اور وِشنو کاٹھی اور پائیدان پر برہما ہے۔ یوگی جن یوگ کے بل سے اُس کو پہچان سکتے ہیں۔ کون دیوتا ہے۔ جو اِس گھوڑے پر سوار ہے ؎

شَوَن ژَٹِت شِشِ کلہ وُندِم[3]
پَرکرَت ہُنزِم[4] پَوَنہ سیتی
لولکہ نارہِ سیت وَالنِج بُزِم
شنکر لَبُم تمی سیتی (۹۶)

من وغیرہ کو قابو کر کے میں نے چھ جنگلیں کو عبُور کیا۔ اور تب چندر کلا سے مجھے جاگ آیا۔ یہ سارا سنسار تب میرے اندر بسم ہُوا۔ محبت کے آگ سے میں نے اپنے دِل کو گُن لیا۔ پھر شِو مجھے پراپت ہُوا ؎

سوئی ماتا رُوپ پَے دِیئے
سوئی بھاریہ رُوپ کَرہِ وِلاس
سوئی مایا رُوپ زیو ہَرِتہ[5]
شِو چھُوی کرُوٹ تہ ژین اُپدیش (۹۷)

وُہی دیوی ماتا ہے۔ اور بچے کو دُودھ پلاتی ہے۔ وُہی استری بن کر وِلاس کرتی ہے۔ وُہی مایا رُوپ بن کر جیون کو مارتی ہے۔ سچ پُوچھو تو شِو کو پانا

[1] کاٹھی۔ [2] پہچان نے۔ [3] جگایا۔ [4] جلایا۔ [5] مارنا۔

مَرِم نہ کُونہہ تہ مَرہ نہ کانہہ[٣]
مَرہ رینچھ تہ لَسہہ رینچھ (۹۲)

میں اس آنے جانے والے سنسار میں آگئی۔ اور تپسیا کر کے میں نے آتم پرکاش حاصل کیا۔ اگر کوئی مرے تو مجھے کیا ہے۔ اور اگر میں مروں۔ تو کسی کو کیا ہے۔ اگر میں مری تو اچھا ہے۔ اور بہت دیر زندہ رہی۔ تو بھی اچھا ہے۔

ہیتھ کَرِت راج فیرہ نا
دِتھ کَرِت ترفِتہنا مَن
لُوبھ رَونا زِنِدٕ مَرہ نا
زِیونت مَرِہ تے سُوئ چھوی گیان (۹۳)

اگر تمہیں ایک سلطنت ملے۔ اور اُسی کی حکومت کرو۔ تو بھی من کی شانتی حاصل نہیں ہو سکتی ہے۔ اگر یہ سلطنت تم کسی اَور کو بخشو گے۔ تو بھی شانتی حاصل نہیں ہو سکتی۔ جو دُنیا کے خواہشات سے آزاد ہے۔ وُہ کبھی مرتا نہیں۔ زندہ ہو کر مرنا جیسا رہنا سچا اُپدیش ہے۔

شِیل تہ مان چھُوی پونہ کرِنجے
مو چھہ یہم رُٹ مَلہ یڈُ واوُ
ہستوٕ یُس وَالہ گنڈے
تہ یُس نگہ سُو اَدہ نہال[٢] (۹۴)

جیسے پانی کو ایک ٹوکرے میں لینا ہے۔ ایسا ہی مُشکل دیانتداری اور شُہرت کو مستقل طور پر رکھنا ہے۔ اگر کوئی بہادر شخص ہوا کو مٹھی میں بند کر سکے۔ یا ایک ہاتھی کو اپنے سر کے ایک بال سے باندھ سکے۔ وُہ شاید

---

(١) راضی ہو۔ (٢) نشکی والا (٣) کامیاب۔

یدُوَسنے نرانک پرمہ پد
اُکھبرہشی کرکھشی کرہ ہستھ (۸۹)

ہے دیوی تیار ہوجاؤ اور پُوجا کا سامان تیار کر۔ ہاتھ میں سارا پُوجا کا سامان لے۔ اگر تُم برہم شبد کو سمجھتی ہو۔ تو تُم اُسی سے تانترک دیویوں کے ساتھ بیٹھ کر پُوجا کر۔

شِو وا کیشو وا جن وا
کملنہ ناتھ نام دارن یشُو
مہہ ابلہ کیستن بھوہ رنہ
سُوا سُوا سوا شو (۹۰)

چاہے اُس کا نام شِو ہو۔ کیشو ہو یا جن ہو۔ یا کمل میں واس کرنے والا وشنو ہو۔ جو کچھ بھی اُس کا نام ہو۔ وُہ مجھ غریب ابلا کو اِس سنسار کے بندھنوں سے چھڑائے۔ چاہے وُہ شِو ہو۔ کیشو ہو۔ جن ہو یا وشنو ہو۔

سہنرس شمہ تپہ دمہ نوگڑھے
پرُھہ پراوکھ امڑکھی دوار
سلِلُس لوَن نرن میلت گڑھے
توہتہ چھوڈی دُرلب سہنرہ وچار (۹۱)

پرمیشور کو دھارنا اور تپ یا کی کوئی ضرورت نہیں ہے۔ اگر تم مکتی حاصل کرنا چاہتی ہو۔ تو صرف پریم سے حاصل کر سکتی ہو۔ اگر تُم نمک کی طرح پانی میں اُس کے ساتھ مل جاؤ گے۔ تو بھی اُس کو پہچاننا تمہارے واسطے بہت مشکل ہے۔

سمسارِس آئیس تپسے
بُدھ پرکاش اہم سہنرے

ھ۱ اپچی ودیا۔ ھ۲ کمل میں رہنے والا بھگوان ھ۳ غریب عورت ھ۴ سمار رُوپی دُکھ۔ ھ۵ پانی

ہے میرے گورو دیو آپ ایشور سروپ ہیں۔ کرپا کر کے مجھے سچی ودیا سمجھائیے۔ پران اپان دونوں ایک ہی جگہ سے پیدا ہوتے ہیں پھر یہہ کیوں سرد ہے اور یہ کیوں گرم ہے ✤

انا ہت شو سروپ شونا لیس
نا ؤنا ورن نا روپ نا گوتر
اہم یہہ ناد بند تہ یوؤن
شوئی دیو اشوار پیٹھ چڑس (۸۷)

وہ ہمیشہ رہنے والی آواز جو شونیہ میں ہی رہتی ہے۔ اس کا کوئی نام کوئی رنگ کوئی شکل اور کوئی گوتر نہیں ہے۔ وہ خود ہی مختلف آوازوں میں اپنی اچھیا سے ہی تبدیل ہوتی رہتی ہے۔ وہی ایک دیوتا ہے۔ جو کہ اس پر سوار ہوتا ہے ✤

واکھ منس کول اکول نا اتے
ژہرپہ مدرے اتہ نا پرویش
روزن شو شکت نا اتے
موژہ گونہ تہ سوئی اپدیش (۸۸)

اپنے من کو سمجھاؤ کہ وہاں پر چھوٹے بڑے کا کوئی تمیز نہیں۔ وہاں پہ خاموشی سے یا مدرا کرتے سے رسائی نہیں ہوسکتی۔ وہاں پہ نا ہی شو رہتا ہے نا ہی شکتی رہتی ہے۔ اگر پہ کچھ باقی رہتا ہے۔ وہی سچا اصول ہے ✤

وتھو رنیا آرژن سکھر
المہ ال پل دکھر ہیتھ

ط رنگ۔ ح۲ سوار ح۳ مدرا یعنی پوشیدہ کریا ح۴ باقی رہے گا۔ ح۵ پوجا کرنا۔

شمع پر اپنے آپ کو نثار کرنے کی قدر کیا جان سکتی ہے ؂

لُوبھ مارُن سہج وِژارُن
دُرگُ زانُن کلپن تراوٗ
نِشہ چھُوی تہ دُور ہوزانُن
شُونس شُنیہ میلت گو (۸۴)

خواہشات کو قابُو کر کے آتم سُردپ پر وچار کرو۔ خیالی پُلاؤ پکانا چھوڑ دے اور سچّی وِدیا کو بیش بہا اور مُشکل سے ہاتھ میں آنے والی ہے۔ وُہ تیرے نزدیک ہے۔ اُس کی تلاش دُور مت کر۔ وُہ شُنیہ رُوپ ہے۔ اور شُنیہ میں ہی سما جاتا ہے ؂

رَومت تھلہ تھلہ تار پیٹن
تے پیٹن اوتم دیشا
وِرُن مت لوٹ گرہ اَژتن
شِو چھُوی کرُوٹ تے زِین اپدیش (۸۵)

کیا سُورج سارے جگت میں ہر ایک چیز کو روشن نہیں کرتا ہے۔ کیا وُہ صرف اچھے اچھے شہروں کو روشن کرتا ہے۔ کیا ہوا ہر ایک گھر میں داخل نہیں ہوتا۔ یہی اشارہ ہے۔ اسی اصُول کو سوچ لو۔ دراصل شِو کو پانا بہت مشکل ہے ؂

یے گورہ پرمو گورہ
ستد بھاؤ بھاؤ تہ مہ ژرہ
زِہ زہر وُپنے یہ کُند اُپرا
ہمہ کو تُران تہ ملکو ٹھت (۸۶)

دوُدٕ کیاہ زانہٕ یَس نوٗ بہنے
غمکِ جامہ ہا وَلتِ تِنے
گھرٕ گھرٕ فیرِس ہیُم گنے
ڈیُوٗٹھم نہ کانہٕ تہٕ پنُنہٕ اَگنے (۸۱)

دُہ دوسرے کے دُکھ درد کی قدر کیا جان سکتا ہے۔ جو اِس میں خود مُبتلا نہ ہوا ہو۔ میں اُس کے تلاش کی خاطر تمام عمر میں پھرتی رہی۔ ہر ایک گھر میں اُس کی تلاش کی۔ سب جگہ نادم رہتی ہوا۔ اور کسی کو بھی اپنا ہمدرد نہیں دیکھا۔

ہَہہ نشہٕ ہا دراو شاہ کیاہ گوےٚ
ہہِس تہٕ ہاہس شاہ ژِھیٚ زان
رُوٗہ ہُرنشہٕ ہُرٕ دراوٗ کیاہ وچھوےٚ
کیاہ رُوٗد باقی کیاہ گو فانہ[۳] (۸۲)

ہہہ سے ہا نکلا۔ تو سانس کس سے کہتے ہیں۔ پران اپان کو تو سانس جان لے۔ رُوح سے جب جسم علیحدہ ہوا۔ تو کیا دیکھا۔ بعد میں باقی کیا رہا اور ناش کیا ہوا۔

شہتہ ہُند شکار گنیٹھ کوہ زانے
ہینٹھ کوہ زانے پُترے دَوٗدٕ
شمہِ قدر لَش کوہ زانے
مچھ کوہ زانے پنپرِ سُنز گت (۸۳)

شہنی (ایک شکاری پرندہ) کا شکار چیں کو کیا معلوم ہے۔ بانجھ عورت کے سامنے بچے کے دُکھ درد کی قدر کیا سمجھتی ہے۔ شمع کی قدر لَش (ایک قسم کی لکڑی جو چراغ کا کام دیتی ہے) کیا جان سکتی ہے۔ مکھی پروانے کی

۱؎ تمام۔ ۲؎ شرب۔ ۳؎ ناش ہونا

صاحبؔ چھُو ہت پانہٕ دُوکانس
سارُی منگان گینتھ رٕ ھا ردمہ
رُٹ نو کنسی ہُند راچھہ نو وانس
یہ ثرہ گژھی تی پانہٕ رنہہ (۷۸)

وُہ خود دُکان پر بیٹھا ہوا ہے۔ سارے کچھ دینے کو کہتے ہیں۔ کسی کی رُکاوٹ نہیں۔ نا ہی وُہ دکان کا کوئی رکھوالا ہے۔ جو جس کو چاہے خود ہی لے جائے

سمسارس منز باگ کتھ شان روزے
روزی پرمہ شو شمبھو اگور
اُہہ منز باگ بیٚ للہ ناوِن
جگرس منز باگ کرِیس گورہ گور (۷۹)

سنسار میں میں کس طرح رہوں گی۔ یہاں پرمہ شو ہی رہے گا۔ میں اُس کو اپنے گود میں پیار کروں گی۔ اور اپنے دل میں ہی اُس کو پریم کروں گی۔

شٔنیس تہ رَوَس اتھٕ کُس رٹے
یُس ہیکے رٹے واو
سُہ پانژ یندرے ژٹتھ ژلے
سُوی رٹے گٹے رو (۸۰)

شنیہ اور سُورج کو کون پکڑ سکتا ہے۔ جو ہوا کو پکڑ سکے۔ وُہ پانچ چوٹیوں کو کاٹ کر بھاگ جائے گا۔ وُہی اندھیرے میں پرکاش کو پکڑ سکتا ہے۔

---

۱ پرماتما - جیوآتما ۲ شریر یا سنسار ۳ سب لوگ یا سب یندریے۔ ۴ گود میں ۵ پریم کرنا یعنی بھگتی۔ ۶ پانچ وِشے ۷ کاٹ کر یعنی قابو کرنا۔ ۸ پرکاش۔

سمسار نوم توڈ ہ تیچھ
مُوڈان کِڑہی تادِنہ آے
گیانہ مُدرا چھہ گیانین کِڑہی
شُو یُوگہ کلہ کُن پرزنہ آے (۷۵)

سنسار رُوپی گرم کڑاہی۔ جوکہ مُورکھ لوگوں کے واسطے گرم کی گئی۔ گیان کارِیَں گیانیوں کے واسطے ہے۔ جو یوگ کے ابھیاس سے حاصل ہوتا ہے

صبُور چھِے زیُر مرچ تہ نُونی
کھنہ چھُوی ٹیوٹھ تہ کھیس کُس
صبُور ہا مالہ چھُوی سُونہ سُند دُوری
مُولہ چھُوی تہنُد تہ ہیس کُس (۷۶)

صبر یعنی برداشت۔ زیرہ۔ مرچ سیاہ اور نمک کے مانند ہے۔ جو کھانے میں کڑوا ہے۔ کون کھائے گا۔ صبر ایک سونے کے زیور کے مانند ہے جو بہت قیمتی ہے۔ کون خریدے گا؟

سُورگہ جامہ تراوِت الگ پراوُم
دَگ للہ ناوِم دِیہ سنزِ ناپریا
پُت زُونے اُشِت وُز نووُم
زِین تہ مالہ کُلس پیٹھ نِندرِ ہیپیا (۷۷)

سُورگ کو چھوڑ کر میں نے فقیرانہ زندگی اختیار کی۔ میں نے اُس پرم برہم کے پریم میں دُکھ درد برداشت کیا۔ پرماتما کمال اُٹھ کر میں نے اُس کو جگا دیا۔ ہے منش! تم اِس دیہہ کے گھمنڈ میں خواب غفلت میں سوئے ہو۔ اِسلئے تُم نیند سے بیدار ہو جاؤ۔

(۱) درخت پر نیند پڑنے سے جیسے آدمی کو گرنے کا خطرہ رہتا ہے۔ ویسے ہی سنسار میں غفلت

پانس لاگِت رُودُگ مہہ ژٕہہ
مہہ ژٕہہ ژھانڈان لُوسُم دُہہ
گیانس منز یاگ ڈیوٹھُک مہہ ژٕہہ
مہہ ژٕہہ تہٕ پانس دیوتُم ژھوٚ ط (۷۲)

تُم خُود میرے سے پوشیدہ رہے۔ سارا دِن مُجھے تُمھارے تلاش میں گُزر گیا۔ گیان کے حاصِل ہونے پر جب میں نے تُم کو پالیا۔ تب تُمھارے ساتھ ملنے پر میں پھُولے نہیں سمائی۔

مَنَس تہٕ بھووہ سرس چھُتہٕ
گُوپ نیرہٕ تا نارہٕ چھوک
لیکھ لج تےٚ بہٕ نا گُونے
تلہٕ تُل تےٚ تلوٚ نا کنہہ (۷۳)

اپنے من کو ہی سنسار رُوپ سمجھ لے۔ اگر تُو اِس کو قابُو نہیں کرے گا تو غُصے میں بُرے الفاظ نکلینگے۔ جیسے آگ سے چنگارے نکل کر چھالے پڑتے ہیں۔ اگر تُم اس کو سچائی کے ترازو میں تولو گے۔ تو ان کا وزن کُچھ بھی نہ ہوگا

یُوہ تیر ژٕلہٕ تمہ اَمبر ہتیٚ
بُچھہ یُوہ ژٕلہٕ تی آہار اَن
ژٕرت نرپ سوہٕ تارس تت
ژٕ تا دِہس واَن کیاہ وَن (۷۴)

کپڑے ایسے پہن جس سے سردی دُور ہو سکے۔ اُتنا ہی کھا۔ جس سے بھُوک مِٹ سکے۔ اپنے من کو ہمیشہ پرماتما سرُوپ کے وِچار میں لگاؤ۔ اپنے اِس شریر کو جنگلی جانوروں کا خوراک سمجھ۔

(۱) پھُولے نہیں سمانا (۲) غُصہ (۳) وزن (۴) کھانا (۵) پرماتما سرُوپ (۶) جنگلی جانوروں کا خوراک

اڈہ پچ سَن دِتھ تھاوَن مٹَن
ڈُبھہ بُچھہ بولن گیان پچ گیت
تُھٹ تُھٹ نیرن تِم کستہ وٹَن
ترُک اَے مالہ چھُوک پورکرٹ ہیتھ (٦٩)

جو ایک جگہ سے مال چھین کر دُوسری جگہ رکھتے ہیں - لالچ کے اندھے گیان کے گیت گاتے ہیں - دُنیا میں انگشت نما ہوتے ہیں - دُنیا میں اُن کا بھلا کیسے ہوگا - اے منشُ! اگر تمُ دانا ہے - تو اِن کاموں سے باز آؤ ؞

پَرَ تہ پان یم سموٗئی موان
یم ہیوٗیئ موان دِن کھو رات
یمسئی اُدَے مَن سو نَیرُ
تِمئی ڈیوٹھی سُور گورُ ناتھ (٧٠)

جس نے اپنا آپ اور پرایا ایک سمجھا - جس نے دِن اور رات یعنی سُکھ و دُکھ ایک سمجھا - جس کے من سے دوئی کا بھاؤ مِٹ گیا - اُسی نے شمبو کا درشن پا لیا ؞

پَوَن پورِت یُس اَنہ وَگے
تس بون پشرُتہ بُچھہ تہ ترِیش
تہ یَس گران اَنتہ ستگے
سُو سَمسارس زِوہ نہ زمہ (٧١)

جو من کو اپنے قابو میں کر سکتا ہے - اُس کو بھوک، پیاس ستا نہیں سکتی ہے - جو اِس طرح سے آخری دَم تک کر سکتا ہے - وہ اِس سنسار میں دوبارہ پیدا نہیں ہوگا - یعنی مُکتی حاصل کرے گا ؞

---

ط۱ انگشت نما ہونا ط۲ باز آنا ط۳ دوئی کا بھاؤ مٹنا - ط۴ من ط۵ چھونا ط۶ آخری وقت تک

میں سُرت کے ناؤ کے تاگے سے سمندر میں کشتی کو کھینچتی ہوں۔ کیا پرماتما
پرارتھنا سُن کر مجھے بھی پار کریگا۔ جس طرح پانی کچے مٹی کے برتن میں جذ
ہوتا ہے۔ اسی طرح میرا دل چاہتا ہے۔ کہ میں بھی اپنے گھر کو جاؤں۔
مکتی پراپت کروں ؂

کالی[1] ست کُل گژھن پاتالی
کوکالی[2] کاہ کالی درشن پن
ماس ٹکہ تے مسہ کی پیالی
برہمن تہ ڈالی[3] ایکوٹہ کھن
ملج ہا مالہ کرہ کورہ دلالی[4]
زنہہ نش ساری وست[5] پن (۶۷)

وقت آئیگا۔ جب کہ سات کُل گر جائیں گے۔ یعنی ناش ہو جائیں گے۔ کلجگ کے بُرے سمئے میں بے وقت بارش ہو گی۔ برہمن اور بھنگی ماس اور شراب اکٹھے کھائیں گے اور پئینگے۔ ماں اپنی لڑکی کے بدافعالی کر میں دلالی کریگی۔ سب اُونچے نیچے گریں گے یعنی اخلاقی گراوٹ ہو

کُونہ رے بوزک کوہہ نو روزک
کُونہ رن کرزم[6] ہافی کار
کُونی آست دون ہند جنگ گوم
شونی سبے زنگ کرت گوم زنگ[7] (۶۸)

اگر تم تنہائی سُنو گے تو کہیں نہ رہو گے۔ تنہائی ہی نے مجھے بدنام کیا اکیلی ہو کر ہی دو کا جنگ ہو گیا۔ وہ نرآکار ہی مجھے ساکار بنا کر چلا گیا ؂

(۱) ناش ہونا۔ گر جانا۔ (۲) بے وقت (۳) چنڈال (۴) دلالی۔
(۵) اخلاقی گراوٹ (۶) نرآکار (۷) ساکار۔

زانت سَرِدہ گتھ پربھو امول
پیتھوئی زانک ہتیو تھی آسس (۶۴)

اگر وقت کے گزرنے سے تم تمام خواہشات کو قابو میں کروگے۔ تم چاہے گھر میں رہو۔ چاہے جنگل میں۔ اگر اُس کو ہر جگہ حاضر و ناظر اور الوکک پربھو سمجھوگے۔ پھر جیسا جانوگے۔ ویسا ہی بنوگے

کینژن رن پھَے شِہج کھُونی
نیرو نبر شِہوُل کَرو
کینژن رن پھَے برہٹھ ہُونی
نیرو نبر زنگ کھیو
کینژن رن پھَے اَوَل تہ وُوَل
کینژن رن پھَے زَول ژٕہی (۶۵)

کہیوں کی عورتیں چنار کے ٹھنڈے درخت کے مانند یعنی شیتل سوبھاؤ ہیں اگر باہر نکلیں۔ تو سایہ میں بیٹھ کر آرام کریں۔ کہیوں کی عورتیں دروازے پر کُتے کی مانند ہیں۔ باہر نکلنے پر ٹانگیں کاٹنے کو آئیگی۔ کہیوں کی عورتیں جھگڑالو ہیں۔ کہیوں کی عورتیں چھیددار سائے کے مانند ہیں۔ یعنی اُس سایے میں بیٹھنے سے کوئی فایدہ نہیں +

آمہ پنہ سُدرس ناوِ چھس لمان
کتھہ بوزہِ دَئے میون ہیتہ دیہ تار
آمن ٹاکن پوِنہ زَن شمان
رُوح چھم برہمان گرہ گژھے (۶۶)

(۱) ٹھنڈا۔ (۲) جھگڑالو (۳) چھیددار (۴) جذب ہونا۔
(۵) خواہش۔

کیئوں کو تُم نے بہُت سارے لڑکے دِیئے۔ کہیوُں کو تُم نے دینے بِلا واره نہیں دیکھا۔ کہیوُں کو تُم نے برہم ہتیا کا پاپ لگا دیا۔ یعنی صرف لڑکیاں ہی دیں۔ ہے بھگوان! تمہاری لیلا کو نمسکار ہے۔

کنڈیو گرک کنڈِ کنڈے
کنڈیو گرک کنڈی وِلاس
بھوگی۔ بیٹھی دِتِت یِتھ کنڈے
اتھہ کنڈ روزی سُورنتہ ساس (٦٢)

ہے شریر داری! اگر تُم کو ہر وقت شریر کا ہی دھیان رہے گا۔ اور تُم ہر وقت اِس شریر کو آراستہ کرو گے۔ اور تُم ہر وقت اِس شریر کو میٹھے بھوجنوں سے پالنا کرو گے۔ ایک دِن یہ شریر راکھ اور بھسم ہو جائے گا۔ یعنی مٹی میں مِل جائے گا۔

سو مہنہ گارُن منز یِتھ کنڈے
یِتھ کنڈِ دِپان سُروپ ناوُ
لُوبھ۔ مُوہ ترِلئی شُوبھِی کنڈے
یَتھ کنڈِ نیرِی سورپرکاش (٦٣)

دِل و جان سے پرماتما کی تلاش اِسی شریر میں کر۔ اِسی شریر کا نام پرماتمہ سروپ ہے۔ لالچ اور جہالت کو چھوڑ کر یہ شریر شوبھایمان بنے گا۔ تب اِسی شریر سے پرماتما کے گیان کا ظہور ہو گا۔

کالَن کالہ زول یُدوَے ژِہ گول
وَنٛدو گھوه وِندو وَنواس

(۱) شریر دھاری (۲) آراستہ کرنا (۳) بھوجن (۴) تلاش کرنا
(۵) گھر (۶) جنگل۔

کُس بَب تَے کُوسہ ماجی
کمئی لاجی باجی یَٹ
کال گژھِ تَے کُوہہ نو بب کُوہہ نو ماجی
زانِت کوہ لاجِت باجی یَٹ (۵۹)

کون تمہارا باپ ہے۔ اور کون ماں ہے۔ کس نے تمہارے ساتھ پریم کیا۔ آخری وقت پر نہ کوئی تمہارا باپ ہے۔ نہ کوئی ماں ہے۔ یہ جان کر تم کیوں پریم بڑھاتے ہو۔

کھِنہ کھِنہ سیتِھ کُنہ نو وانِگ
نہ کھِنہ گژھکھ اہنکاری
سموئی کھیہ مالہ سموئی آسکھ
سمہ کھِنہ مُوژرنے بَرِن تیری
سُم یلہ سمئی ژُم کیتہ روزِہی
اَدہ آلہ مالہ روزِک شُو ہم شُو (۶۰)

بار بار کھانے سے تم کسی ٹھکانے پر نہیں پہنچو گے۔ اور نہ کھانے سے تم کو غرور پیدا ہوگا۔ اعتدال سے کھاؤ۔ اور اعتدال سے رہو گے۔ اعتدال کے کھانے سے اصلی راستہ کھل جائے گا۔ جب سمہ بھاؤ ہوگا۔ تو شگاف نہیں رہے گا۔ پھر ہی پیارے۔ تم شُو ہم ہی رہ جاؤ گے۔

کینہہ ژِن دیُتھم گلالہ یٹہ ہی
کینہہ ژن زُونُتھم نہ اُرنس وار
کینہہ ژن ژُنتھم نال بہ سمہ ہتری
بھگوانہ دیا نہ کُنہ مُنہ کار (۶۱)

۱ پریم کرنا ۲؎ دروازہ ۳؎ سمہ بھاؤ ۴؎ لڑکا ۵؎ لڑکی۔

بہتے ہوئے جَل کو رُوک لینا۔ بڑھتے ہوئے آگ کو ٹھنڈا کرنا۔ اپنے پاؤں پر آسمان پر چلنا۔ ایک لکڑی کی گائے سے دودھ دوہنے پر محنت کرنا۔ یہ سب باتیں بازی گری سماں اور فضول ہیں ؛

چِت[1] تورگہ گگنہ برہمہ وُون
نِمیشہ[2] اَکہ ژھنڈہ یوزنہ لچھ
ژی تن وگہ یم رٹت زون
پران اَپان پھٹرت[3] رِچھ ہا (۵۷)

من رُوپی گھوڑا آکاش وغیرہ کا سَیر کرتا ہے۔ آنکھ کے ایک اِشارے میں لاکھوں یوجن کا سفر کرتا ہے۔ اگر منش گھوڑے کو لگام سے قابُو کرنا جانتا۔ تو اُس کے سب اندریاں کسی کام کے نہیں رہتے ہیں ؛

تُورِ[4] سَلِل[5] کھٹ ستے تُورِہ
ہیم ترِ گئے ہنا ہن وِمرشا[6]
ژی تن رَد باتہ سب ہئے[7]
شِو مے ژرا ژر جگ پشتا (۵۸)

جب سردی پانی پر قابُو پاتی ہے۔ تو پانی یخ کی صُورت اختیار کرتا ہے۔ اِسی طرح سے تین مختلف صُورتیں بنتی ہیں۔ اگر وچار سے دیکھا جائے۔ تو اِن میں کوئی فرق نہیں۔ جب چیتن رُوپی سُورج چمکتا ہے تو تینوں ایک سُروپ بنتے ہیں۔ اور سارا جگت جاندار اور بے جان سب شِو رُوپ ہی دِکھائی دیتے ہیں ؛

---

[1] چِت رُوپی گھوڑا۔ [2] آنکھ کا ایک اشارہ [3] - اندریوں کا بے کار ہونا [4] سردی [5] پانی [6] - اختیار کرنا۔ [7] ایک سُروپ ہونا [8] دِکھائی دیتے ہیں ؛

آچار شکتی نے وچار کی بات کہی - پران اور اپان کا خیال رکھنا چاہیئے
پرانوں کے سیون کرنے سے مزا چکھو۔ سنسار ناپائدار ہے - اس میں
مت پھنسو +

یمۓ شہ ژہ تمۓ شہ مہ
شامہ گلا ژہ بیون لوٹھس چھو
یہوئ ہنا بھید ژہ تہ مہ
ژہ شن سوامی بہ شسے موشس (۵۴)

ہے ایشور! جو چھ تم میں وہی چھ مجھ میں بھی ہیں۔ ہے نیل کنٹھ! تم
سے الگ ہو کر میں تکلیف میں پھنسی - تم میں اور مجھ میں یہی فرق ہے
کہ تم چھ کے سوامی ہو - مجھے انہی چھ نے گمراہ کیا +

کھت گنڈت نا شمہ مانس
برانتھ یمو ترا و تم گے کھست
شاستر بوز ژہ یم بنگ کرہ و
سونا پرشتۓ ونیا لوست (۵۵)

کھانے اور کپڑے پہننے سے من قابو میں نہیں ہوتا۔ جنہوں نے جھوٹی
آشا چھوڑ دی - وہی اوپر گئے یعنی گیان حاصل ہوا - شاستر کو پڑھ کر
جنہوں نے اس پر عمل کی چھنوں نے شاستر پر بھروسہ کیا اُن کو ان کی شانتی آسکتی ہے

زل تھمنو ہتوہ ترناون
اردہ گمن پرہ ورزت ژرت
کاٹھ ذینہ دُدھ شرماون
انتہ سکلو کیٹ ژرت (۵۶)

ہلہ پانچ گیان اندری اور ایک من ہلہ تکلیف ہلہ گمراہ کیا ہلہ من کو قابو کرنا ہلہ عمل کرنا ہلہ شانتی

سب نبان کر بھی تو مُور کھ جیسا رہ۔ ادر دیکھ کر بھی تو اندھا جیسا رہ۔ سُن
کر بھی تو بہرہ جیسا[۳] رہ۔ جو جیسا تم کو کہے۔ اُس کو ویسا ہی مان لے۔ د
لوگ اسی طریقے پر عمل کرتے ہیں ؛

اَوچارِ جِی ہا مالہ چھُے پوٗتھِن پَران
یُوتھہٕ طوطہٕ پَران رام پنجرس
گیتا پَران ہیتھا لُبان
پَرم گیتا تہٕ پَران چھُس (۵۱)

بے سمجھ لوگ وچار یعنی عمل کے بغیر ہی کتابیں پڑھتے ہیں۔ جیسے طوطا
پنجرے میں رام پڑھتا ہے۔ وُہ گیتا پڑھ کر دکھاوا کرتے ہیں۔ میں نے
گیتا پڑھی اور مطلب کو جان گئی ؛

آنچار ہا نزرہٕ ہُوند گوم کَنَن
ندرِ چھوہ تہٕ رِہیو ما
ہتہٕ بُوز تہٕ کوٗتم رُود وَتَن
ترے تُون پھوہ تہٕ ترِی نوِ ما (۵۲)

آچار شکتی کی آواز میرے کان میں آئی۔ یہاں سب کچھ ناپائدار ہے۔ مت
خریدو۔ اس میں مت پھنس جاؤ۔ یہ آواز داناؤں نے سُنی۔ اور کہنے لگے۔
لوگو! اگر سمجھنا ہے۔ تو سمجھ لو ؛

آنچار بچارِ وِچار ڈُنُن
پَرانَن تہٕ رُوہِن ہیو ما
پرانس بُزِت مَزا ژُوہُن
نُدرِ چھوہ تہٕ رِہیو ما (۵۳)

(۱) وچار کے بغیر (۲) آچار شکتی (۳) ناپائدار (۴) دانا (۵) پران (۶) ایان (۷) اپاسنا کر

تین بار میں نے جھیل کو بھرا ہُوا دیکھا۔ ایک بار میں نے جھیل کو آکاش پر جگہ دیکھی۔ ایک بار میں نے ہرمکھ سے کونسر ناگ تک پُل دیکھا۔ سات بار میں نے سنسار کو شُون میں لَے ہوتے دیکھا۔

تنتر گلہ تےَ منتر موژرے
منتر گلہ تےَ موژرے چِت
چِت گلہ تےَ کنہہ تِنا کُونہے
شونس شُونہ رمیلت گوُ (٤٨)

تنتر لَے ہونگے صرف منتر ہی رہے گا۔ جب منتر بھی لَے ہونگے۔ تو صرف من ہی رہے گا۔ جب من بھی غائب ہو گا۔ تو باقی کچھ بھی نہیں رہے گا۔ شُونہ رُوپ میں شونہ مِل جائے گا۔

باُن گلُ تےَ پرکاشس آوُ زُوتے
چندر گلُ تےَ موژرِ چِت
چِت گلُ تےَ کنہہ تِنا کُونہے
گےَ بھُو بھوہ سوہ وِسرزِت کِت (٤٩)

جب سُورج غرُوب ہُوا۔ تو چاند نکل آیا۔ جب چاند غرُوب ہوا۔ تو صرف من رہا۔ جب من بھی نہیں رہا۔ تو کچھ نہیں رہا۔ یعنی جگت لَے ہوا۔ زمین، ہوا، آکاش (بھُو۔ بھوہ۔ سوہ) برہم میں لَے ہو گئے۔

موُڑو ڈیشِت تہ پشِت لاگیہ
زُر تہ کلُ شرتو وُوان زڈہ رِچھ اس
یُس یِت دِپیُ تس تیوتھ بُوِل
سُوئ چھُرِ تہ وُدِس ابھیاس (٥٠)

ا سُورج ٢ رہ گیا۔ ٣ لَے ہونا ٤ سُن کر ٥ سچی ودیا۔

رہت یعنی شُدھ ہُوں۔ مجھے کسی کا کیا پریوجن ہے ؛

نابھستھانس چیت زلہٖ وِنی
برہمستھانس ششیرن مکھ
برہمانڈس پھٹے ندٖ وہہ وِنی
توے ترُنُ ہوٗ ہا گوٗ تتوٗ (۴۵)

نابھستھان سے ہی اگنی (ززٹھر) ہوتی ہے۔ برہمستھان سے ٹھنڈک پیدا ہوتی ہے۔ برہمانڈ سے پران اپان رُوپی ندی بہتی ہے۔ اس سب
ہوٗ سرد ہے اور ہا گرم ہے ؛

چدانندس گیان پرکاشس
تمو ژیونی تم زیون تی مکھتی
وشمس سمسارنس پاشس
ابدٗو گنڈٗ شت شت دتی (۴۶)

جنھوں نے گیان رُوپی چدانند کا سچی ودیا سے گیان حاصل کیا۔ جنھوں نے اسی دیہہ میں گیان حاصل کیا۔ وہ جینے اور مرنے سے آزاد ہو گئے۔ یہ سنسار کٹھن رُوپی پھانسی کا جال ہے۔ مُورکھ لوگ ہزاروں گانٹھوں سے اپنے آپ کو اس جال میں باندھتے ہیں ؛

ترہ ہنگہ سرا سری سرس
اکہ ہنگہ سرنوٗ ارشس جائی
ہر مکھ کونسرہ اک ہم سرس
ستہ ہنگہ سرس شنیا کار (۴۷)

۱ گرم ۲ ٹھنڈک۔ ۳ پران اپان رُوپی ندی۔ ۴ پیچیدہ ۵ جال
۶ بے وقوفوں نے ۷ سینکڑوں گانٹھ ۸ تین بار ۹ پل۔

کچھ مٹی کے برابر خیال کیا۔ یعنی دُنیا کو ناپائدار جانا۔

یتھ سَرہ سِر شف پھل ناوِڑے
تتھ سَرہ سکلو پون چھَن
مرگ سرگال گینڈ زل ہستی
زن نازن تہ تتی پن (۴۲)

یہ جھیل اِتنا نازک ہے۔ کہ اِس میں رائی کا دانہ بھی سما نہیں سکتا۔ تو بھی اِس جھیل سے سب جیو پانی پیتے ہیں۔ اِس میں ہرن۔ گیدڑ۔ گینڈا اور سمندری ہاتھی وغیرہ سب کے سب پیدا ہوتے ہی گرتے ہیں یعنی مرتے ہیں۔

ژلہ چتہ وُندس بھیہ مو بر
چان چنت کران پانے اند
ژہ کوہ زان ہیئ کھُدہری کر
کیول تسندوی تورک ناد (۴۳)

ہے چنچل من! تو اپنے دل میں کوئی خوف نہ رکھ۔ پرماتما خود ہی تمہاری فکر کرتا ہے۔ تمہیں کب پہچان آئے گی؟ اور تمہاری بھوک کب ختم ہوگی؟ صرف اُسی (ایشور) کے انوگرہ کا انتظار رہے۔

گال گنڈی نم . بول پڑی نم
دپنم ہتیس یتھ رُژے
سہزہ کسمو پوز کری نم
بہ اُمہ لالہ کس کیاہ موڑے (۴۴)

چاہے کوئی نندا کرے۔ چاہے کوئی نِنداکرے۔ چاہے لوگ اپنے خیالات کے مطابق کچھ بھی کہیں۔ چاہے مجھے پھولوں سے پوجا کریں۔ میں دُکھ سکھ سے

۱ جھیل ۲ رائی کا دانہ ۳ چودہ بھون ۴ نہ بھرنے والا ۵ ایشور ۶ نندا ۷ پھول ۸ دکھ سکھ

میراچِت آیئنے کی طرح نرمل ہوگیا۔ تب مجھے لوگوں کے ابھید بھاؤ کا گیان ہُوا۔ جب میں نے اُسکو (دیوتا) اپنا ہی سرُوپ دیکھا۔ تو میں سمجھ گئی۔ وُہ ہی) سب کچھ ہے اور میں کچھ بھی نہیں +

لَل بو لُوسس ژہانڈان تہ گاران
خَل ہیہ کرمس رَسنے شتی
وُچھُن ہیوتس تَورڈیوٹھمس برَن
ہیہ تہ کل گنے یمَ زوگمس تتیُ (۳۹)

میں (لَل) ایشور کی تلاش کرتے کرتے تھک گئی۔ میں نے اُس کے تلاش کرنے میں بہت ہی یتن کیا۔ میں نے اُسکی تلاش کی۔ لیکن دروازوں کو بند دیکھا مجھے فکر غالب ہُوئی اور وُہیں تاک میں بیٹھی +

لَل وندہِ زولم جگر مورُم
تیلہ لَل ناوُ درام
یلہ ڈُل تروُمس تتیُ (۴۰)

میں نے دِل کی میلائی جلادی اور دِل کے خواہشات مِٹا دئے۔ تب میرا لَل نام مشہور ہوگیا۔ جب میں وُہیں دوزانو ہوکر بیٹھ گئی +

یم لُوبھ تہ مَن مت، مورُو
تمسے مارتِ تہ لوگُن داس
یمی سہزہ ایشور گورُو
تمی سوُرُی وندانُ ساس (۴۱)

جس نے لالچ، خواہشات، اور غرُور کو قابُو کیا۔ اُن کو قابو کرکے اپنے آپ کو داس بھاؤ خیال کیا۔ جس نے پرماتما کا تلاش کیا۔ اُس نے سب

ط۱ تلاش ط۲ یتن کرنے سے ط۳ اگیان کا پردہ ط۴ وُہیں تاک میں بیٹھنا ط۵ جانتا۔

دِن ختم ہوگا اور رات آئیگی - زمین کی سطح آسمان کی طرف پھیلیگی - اماوس کے دِن راہ چندرمہ کو گراس کرتا ہے - اپنے وچار سے آتما کو جان لینا شِو کی سچی پُوجا ہے ◆

داد شاٹُ منڈل یُس یوس تھجی
ناسکِ پوَن اناہت رٚو
سُویَس کلپن انتہ ژُجی
پانےَ دیو تہ اَرژُن کس (۳۶)

جس نے برہم رندر کو شِو کا استھاپن سمجھا - جس نے سانس کے اندر سے باہر آنے کی آواز کو جان لیا - جس کے فضول خیالات خود بخود مِٹ گئے - وُہ خود شِو رُوپ ہے - کون کس کی پُوجا کرے گا ◆

پرتھی ترتھن گژھان سنیاسی
گارہنہ سُدرشن میوُل
چِتا پَرت موٗلشِ پتہ آس
دریشک نیلا وَرمن نیلی (۳۷)

سنیاسی لوگ ہر تیرتھ کو جایا کرتے ہیں - اور پرماتما کو مِلنے کی تلاش کرتے ہیں - ہے من! اپنے چِت رُوپ سے بے خبر نہ رہ - کیونکہ دُور سے نیلا گھاس دِکھائی دیتا ہے ◆

مکھس مَل زَن ژَلم مَنس
آدہ رہہ لبِم مَزنس زان
سُوئی یِلہ ڈیو نِھم نِشے پانس
سوریُ شُوئی تےَ بہ آتو گوئہ نہ (۳۸)

۱ برہمہ رندر ۲ ناک سے سانس لینا ۳ نہ ٹھہرنے والی ۴ بھاگتا ۵ ارپن کرنا ۶ بےخبر ۷ نظر آنا

اچھے اور بُرے اپنے ماتاؤں سے پیدا ہو گئے۔ اُن کے پیٹ کو بہت تکلیف دی۔ سنسار میں پھر کر پھر اُسی جگہ پہونچے۔ شِو کو پراپت کرنا بہت مُشکل ہے۔ اس لئے اس اُپدیش پر دھیان کرو ۔

دماُدم کرُمس دُمن ضخ نالے ہا
پرزلیوم دیپ ننیے یم ذات
اندرِم پرکاشس نبر ژھوٹم
گٹہ رٹُم کرمس تھف (۳۳)

آہستہ آہستہ میں نے اپنے سانس کو اندر ہی روکے رکھا۔ ایسا کرنے سے میری بُدھی چمکی اور اصلیت معلوم ہُوئی۔ میں نے اندر کی روشنی باہر پھیلا دی۔ حتےٰ کہ میں نے اندھیرے میں اُس کو پایا۔ اور پکڑے رکھا ۔

دیُو وٹا ہا دیور وٹا
ہیرہ بون چھی ایکہ واٹ
پُوز کس کرک ہوُنہ بٹا
کرُنس تہ پونس سندگاٹ (۳۴)

مُورتی بھی پتھر کی ہے اور مندر بھی پتھر کا ہے۔ اُوپر اور نیچے ایک ہی ہے۔ ہی مُورکھ پنڈت تم کس کی پُوجا کرو گے؟ تم من اور آتما کو ایک ہی کرو ۔

زِن ٹِھزہ تہ رزن آسے
بُوتل گگنس کُن وِکاسے
چندرئ راہ گرُوسُن ماؤسے
یشو پُوزن گاہ چِت آتمسے (۳۵)

ح۱۔ آہستہ آہستہ ح۲۔ سانس ح۳۔ مورتی ح۴۔ مندر۔ ح۵۔ ایک ہی ہونا ح۶۔ مورکھ پنڈت ح۷۔ ملاپ ح۸۔ ختم ہونا

میرے دِل میں شک ہے ۔

ژِہ نا بُو نا دَے نا دِھیان
گوَ پانٔے سروہ کرٔئے مشتِ
اِنیا ڑِیوٹھک کِنہہ نا اَنُوۂ
گےَ ست ئے پَرَ پشتِ (۳۰)

نا تُم ہو ۔ نا میں ہُوں ۔ نا دھیان ہے اور نا دھیان کی کوئی چیز ہے ۔ سب کریا چھوڑ کر وُہ صرف وُہی پر ماتما ہے ۔ اندھے لوگوں (اگیانی) نے اس کا مطلب نہیں سمجھا ۔ لیکن جب کہ اُن کو بھی گیان ہوا ۔ تو وُہ بھی سنسار پار ہو گئے ۔

ژھانڈان لُوسس پانی پانسَ
ژُھپی رگیانس وَوت نہ کُونہہ
لَے کرمَس واژِس مۓ خانس
بھر بھر بانہہ تہ چوَان نہ کانہہ (۳۱)

میں اپنے آپ کی تلاش کرتے کرتے تھک گئی ۔ اُس پُوشیدہ گیان کو کوئی حاصل نہیں کرتا (جو اُسکی تلاش اپنے سے باہر کرے) جب میں اسی میں لے ہو گئی ۔ تو میں سیدھی امرت کے مقام پہ پہونچی ۔ وہاں پر برتن بھرے ہوئے ہیں ۔ لیکن پیتا کوئی نہیں ہے ۔

زِنہ زالٔیے رِتؔ تےَ کِتی
کرتِ وُنزِ رسَ ہُو کلیشا
فیسرتِ دَوار بزہ نہ ویت تُونی
ییشو چھُونی کرُ وُڈتے زِین اُپدیشا (۳۲)

کنڈیو گرِ ہہ تزِ ہ کنڈیو وَنواس
یِتھوی چھُوک تہ تیو تھی آس
مَنس وَ دھیر رٹھ سَنپنک سُواس
کیاہ چھُوئی مولُون سُورتے ساس (۲۷)

کہیوں نے گھر اور کہیوں نے جنگل چھوڑا - تُم جیسے ہی ہو - وَیسے ہی رہو
من کو قابو میں رکھنے سے ہی مطلب کو پراپت کر سکتے ہو - اِس شریر کو
راکھ اور مٹی ملنے سے کیا فایدہ ہے ✣

گگن ژِ ی بُوتل ژِ یُ
ژ ئی دِن پوَن تہ راٗت
ارِگ ژندُن پوش پوُنِ ژ یُ
ژ ی چھُوک سکل تے لاگزِ ی کیاہ (۲۸)

تُم ہی آکاش ہو - اور تُم ہی پرتھوی ہو - تُم ہی دِن ہو - ہَوا ہو - رات ہو -
تُم ہی ارگ، چندن، پھُول، اور پانی ہو - تُم ہی سب کچھ ہو - میں کیا
تُم کو پُوجا میں استعمال کروں ✣

ناتھ نا پان تہ پَرزو نُم
سدائی بُودم ایکوٗ دِہیہ
ژہ بہ بہ ژہ میول نا زونُم
ژہ کُس بُو کوسہ چھُو سندہیہ (۲۹)

ہے سوامی! میں اپنے آپ کو اور پرائے کو نہیں سمجھی - میں نے ہمیشہ
اِس شریر کی ایکتائی جان گئی - لیکن تُم ہی میں ہُوں - اور میں
ہی تُم ہو - یہ بات میں نہیں سمجھی - تُم کون ہو؟ اور میں کون ہوں - یہی تو

ط ۱ - کہیوں نے - ط ۲ - سب کچھ - ط ۳ - تکلیف دینا - پیار کرنا - ط ۴ - شک -

من پُوش تےئے یژہ پُوشانی
بھاوِک کوسمٔ ناگر بِ پوزِے
شِشرِس گٔڈ ڈزِس زال دانی
ژھوپی منترہ شنکر وُزِے (۲۴)

من روپی مالی اور یژہ ھا روپی مالن ۔ بھاونا روپی پشپ سے پُوجا کرنی چاہیئے۔ اپنے آنند رس سے جَل چڑھانا چاہیئے۔ مون روپی منتر سے ایشور کی پراپتی ہوگی ؛

گورہ شبدس یُس یچھ پژھ بھرے
گیان وگہ رٹہ چت ترگس [۳]
ینِدرےئے شمرتِ آنند کرَے
اَدہ کُس مَرے تہ مارن کس (۲۵)

جو اپنے گورُو کے شبد پر یقین رکھتا ہے۔ جو من روپی گھوڑے کو گیان روپی رگام سے قابو کرلیتا ہے۔ جو یندریوں کو قابو کر کے شانتی پراپت کرتا ہے۔ پھر کون مریگا۔ اور کس کو ماریں گے ؛

کینہہ چھیٔ ننِدرہ ہتی وُذی [۴]
کینشرن وُدِن نِستر پییٔ
کینہہ چھیٔ سنان کرتِ اپُوتی
کینہہ چھیٔ گرہ ستھ [۵] بزنت تہ اکریٔ (۲۶)

کئی گہری نیند میں ہوتے ہوئے بھی پُورے ہوشیار ہیں۔ کئی جاگتے ہُوئے بھی سوئے ہوئے ہیں۔ کئی سنان کرکے بھی اُشدھ ہیں۔ کئی گرہست سیون کرنے پر بھی پوتر ہیں۔ (کریا کے بندھن سے آزاد ہیں) ؛

حدا ۔ آنندہ رس ۔ حد۲ ۔ لگام ۔ حد۳ گھوڑے کو ۔ حد۴ ہوشیار ۔ حد۵ گرہست پالن کرکے

کُس مرِتے کُسو مارن
مارِہ کُس تے مارن کس
یُس ہرِہ ہرِہ تراوِت گھر گھر کرے
اَدہ سُوی مرِہ تے مارن تس (۲۱)

کون مریگا۔ اور کس کو ماریں گے۔ کون ماریگا اور کون مارا جائیگا۔ جو شِو کو چھوڑ کر گھر کے خواہشات بڑھائیگا۔ تب وُہی مریگا۔ اور اُسی کو ماریں گے

کُس پشُش تے کُسہ پوُشانی
کُم کوسم لاگزِس پُوزے
کمہ سرہ گڈ دِزِس زل(۱) دانی
کوہ سنہ منترِہ شنکر وُزے (۲۲)

کون مالی ہے اور کون مالن ہے؟ کونسے پھول اُس اُتم دیو کی پُوجا کے لئے استعمال کروگی۔ کس ویدی سے جل چڑھایا جائیگا۔ کس منتر سے شنکر کی پراپتی ہوگی۔

کمش پوش تِل دیپ زل نا گژھے
یُس ست بھاوٗ گُرہ کت منہ ہیئے(۲)
شمبو ہس سورہ پنہ یِژھے
سُعیٔ دِپزے سہزہ کرٔے (۲۳)

اُس کو کوشا۔ پھول۔ تِل۔ دیپ اور جل وغیرہ کی ضرورت نہیں۔ جس کے دل میں گورُو کے شبد پر پکا بھروسہ ہے۔ جو پریم بھاؤ سے شمبو کا دھیان کرتا ہے۔ اُسی کو سہز پچی کریا کہیں گے۔

(۱) جل کی دھارا۔ (۲) بھروسہ کرے۔

کوہِ چھک وِوان اَنِیتھا پچھ
ترُکئی چھک تہ اندری اَڑھ
شو چھوئی اَت تے گُون موگڑھ
سہزہ کتھ ہیا نہ کرتو پڑھ (۱۸)

تُم کیوں بے فایدہ[1] ہاتھوں سے ٹٹولتے ہو۔ اگر تُم دانا ہو۔ تو اپنے اندر دیکھ شِوا اپنے آپ میں ہی ہے۔ اُسکی تلاش اور کہیں مت کر۔ ہی سہز۔ تُو میری اصلی بات پر یقین کر۔

کُش ہو مالہ تُوس نہ پکان پکان
کُش ہو مالہ تُوسئی نہ ولنگان سمیر
کُش ہو مالہ تُوسئی نہ مران تہ زوان
کُش ہو مالہ تُوسئی نہ کران نندا (۱۹)

ہے منشُ! کون چلتے چلتے نہیں تھکا۔ ہے منشُ! کون سمیرو پہاڑ کو عبور[2] کرتے کرتے نہیں تھکا۔ ہے منشُ! کون مرتے اور پیدا ہوتے نہیں تھکا۔ ہے منشُ! کون لوگوں کی نندا کرتے کرتے نہیں تھکا۔

زَل ہا مالہ تُوسئی نہ پکان پکان
سریہ تُوسئی نہ ولنگان سمیر
چندرمہ تُوسئی نہ مران نہ زوان
منشُ تُوسئی نہ کران نندا (۲۰)

ہے منشُ! پانی چلتے چلتے نہیں تھکا۔ سُورج سمیرو پہاڑ کو عبور کرتے کرتے نہیں تھکا۔ چندرمہ مرتے پیدا ہوتے نہیں تھکا۔ منشُ نندا کرتے کرتے نہیں تھکا۔

---

۱۔ بے فائدہ ۲۔ عبور کرنا

اورِہ تہ پانٔے یورِہ تہ پانٔے
پُتّ وانٔے روزِہ نہ زانہہ
پانٔے گُپت تہٕ پانٔے گیانی
پانٔے پانس مُود نہ زانہہ (۱۵)

اُدھر سے بھی وُہی ہے۔ اور اِدھر سے بھی وُہی ہے۔ وُہ کبھی بھی پیچھے نہیں رہے گا۔ وُہ خُود ہی پُوشیدہ ہے اور خُود ہی سرد ویاپک ہے۔ وُہ خُود کبھی بھی نہ مرا۔ بلکہ امر ہے ۔

اورِہ تہ پانٔے یورِہ تہ پانٔے
پانٔے پانس چھُونہ ہیلان
پرتھم اُتھرِس نہ مُولہ دانی
سُوہۓ آہ مالہ ژٕری آشچر زان (۱۶)

اُدھر سے بھی وُہی ہے اور اِدھر سے بھی وُہی ہے۔ وُہ کبھی بھی خُود ہی نہیں ملتا ہے۔ اُس میں ایک ذرہ بھی نہیں سما سکتا۔ ہے منشُ یہی تو عجیب بات ہے ۔

اومکار یلہ لَیہ اونم
وُہی کرم پَنُن پان
شہ وَتہ ترِاوِتھ ستّ مارگ ژُم
تیلہ لَل بہ واتِس پرکاشس تھان (۱۷)

متواتر جپ کرنے سے میں نے اوُم کو اپنے آپ میں لے کیا۔ اپنے جسم کو جلتے ہوئے کوئلوں کی طرح بسم کیا۔ چھ راستے عبور کرکے میں نے ساتواں یعنی سچائی کا راستہ پالیا۔ تب میں لل سچائی کے مقام پر پہونچی ۔

[illegible] بسم کیا۔ راکھ کے ساتھ مِل جانا۔ ۳ پانچ گیان اندریاں اور من

اندریُ آیس چندری گاراںجۓ
گاران آیس ہِہن رہِہہ
ژِ ییُ ناران ژِہی اتھہ داران
ژِ یئے ماران یِم کم رِوہیہ (۱۲)

میں اندر سے تلاش کرتے کرتے چاند کی تلاش میں باہر نکلی۔ اپنی جیسوں کی تلاش کرتی رہی۔ تم ہی ناران ہو۔ تم ہی ہاتھ پھیلاتے ہو۔ تم ہی مارتے ہو۔ یہ کیسی آپ کی آشچرج لیلا ہے ۞

آسس کوُنی تہ سپنس سٹھاہ
نزدیک آست گیس دوُر
اندر نِبر کوُنوی ڈِیو نیٹھم
گیم کھت چُت ژوونزا چوُر (۱۳)

میں اکیلی تھی اور بہت ہو گئی۔ نزدیک ہو کر میں دُور ہو گئی۔ اندر اور باہر کیول پرماتما کو دیکھا۔ مجھے چوپٹ چور کھا پی کر گئے ۞

اندر آست نِبر ژھونڈم
پوَنن رگن کرِنم ست
دھیانہ کِن دیے زگہ کیول زونم
رنگ گو سنگس مِیلتِ کِت (۱۴)

اگرچہ وہ اندر ہی تھا میں نے اُس کی تلاش باہر کی۔ ہوا سے میری رگوں کو شانتی پہونچی۔ دھیان کرنے سے میں نے جان لیا کہ ایشور سارے جگت میں ویاپک ہے۔ یہ سارا جگت پرماتما میں لے ہو گیا ۞

۱ تلاش کرنا ۲ سنسار۔جگت ۳ برہم۔

چندَس وُچھم ہاُرِ نہ اَ ہتے
ناوِہ تارَس دِمہ کیاتہ بوُ (۹)

میں ٹھیک راستے سے آئی لیکن اُس راستے پر نہیں چلی۔ جب میں سیتھو پر سے چل رہی تھی کہ سُورج ڈُوب گیا۔ میں نے جیب میں ہاتھ ڈالا۔ تو ایک کوڑی بھی نہیں پائی۔ اب میں مُلاّح کو پار لنگانے میں کیا اُجرت دُونگی۔

آگرِ یَ ہلہ مالہ گرزِمُ
ڈُگہ واہ[2] ہنہ ڈُوُر سگُم[1]
اَور کے کرِ پایہ زگت وُنزِم[3]
یورِہ تہ کنہہ ہہ سُرُم نو (۱۰)

میں منبع سے ہی گرجی۔ اور کھیتی کو سیلاب کے پانی سے سیراب کیا پرماتما کی کرِپا سے جگت کا گیان میرے دِل میں پیدا ہوا۔ میں نے اپنی طرف سے کسی چیز کی دھارنا نہیں کی ؂

اَ سِتھے[4] پوندے[5] زوُسے[6] زامے[7]
نہتھی ترِتھن سنان کرَے
وُہر ورَیس ننوُئ آسے
نِشہ چھُوئ تہ پرَزان تن (۱۱)

جو ہنستا ہے۔ چھینکتا ہے۔ کھانستا ہے اور انگڑائی لیتا ہے۔ جو ہمیشہ پُوتر تیرتھوں پر نہاتا ہے۔ جو تمام سال یعنی ہر وقت پرگٹ ہے۔ وہ تمہارے نزدیک ہے۔ پہچان لو۔

ح۱۔ کوڑی۔ ہر کا نام ح۲۔ سیلاب کا پانی ح۳۔ جاننا۔ ح۴۔ ہنسنا

ح۵۔ چھینکنا۔ ح۶۔ کھانسنا۔ ح۷۔ انگڑائی لینا۔

میں سیدھی آئی اور سیدھی واپس جاؤں گی۔ مجھ سیدھی سادھی کا کوئی ٹیڑھا پُرش کیا بگاڑ سکتا ہے۔ میں شروع سے ہی اُس کی (ایشور) واقف تھی۔ وُہ مجھے کیا کریگا۔ جو اُس کی پیاری اور واقف ہے؟

انہ پاگائیتری ہمسہ ہمسہ ریپت
اہم تراوت سُوئی اُدھ رُٹھ
ایم ترودُ اہم سُوئی رُود پانے
بیہہ نہ آسُن چھُوئی اُپدیش (۷)

گائیتری منتر صرف زبان سے ہی نہیں۔ بلکہ دِل سے جپنا چاہیے۔ اپنے آپ کا دُنیا دی تعلقات چھوڑ کر صرف اُسی کو پکڑ (اہم کو چھوڑ کر سُو کا دھیان کر) جس نے اپنا اہم چھوڑا وُہی زندہ رہا اسکے بغیر اور کوئی اُپدیش نہیں۔ یعنی اہم بھاؤ چھوڑنا ہی سچا اُپدیش ہے۔

آئیس کمہ دیشہ تہ کہہ وتے
گژھہ کمہ تہ کوہ زانہ وتھ
انتھہ دائی لگہہ ہہ تتے
چھم چھونس پھکس کو سہہ ست (۸)

میں کس دیش اور راستے سے آئی۔ میں کس دیش میں جاؤں گی اور راستہ کیسے ملیگا؟ آخر میں مجھے وُہیں اچھا اُپدیش ملیگا۔ کیونکہ اس خالی سانس میں کوئی پائداری نہیں۔

آئیس وتے۔ گوئیس نہ وتے
سہہ منز ستھے تُو سُم دُھ

(۱) ہر ایک سانس یعنی ۲۴ گھنٹے میں ۲۱۶۰۰ شواس و شاس کے ساتھ گائیتری کا منتر جپنا چاہیے۔ (۲) اُپدیش۔

مجھے کوئی ہزار گالیاں بھی دے۔ میرے دل میں ہرگز کوئی دُکھ نہ ہوگا۔ اگر میں سچ مچ شنکر کی پریمی ہوں۔ اسی طرح جیسے کہ آئینے کو میل کچھ بھی نہیں بگاڑ سکتی ؞

اچھاں[1] آئے تہ گچھُن گچھے
پکُن گچھے دِن کھو رات
یورئے آئے تور گچھن گچھے
کنہہ نتہ کنہہ نتہ کنہہ نتہ کیاہ (۴)

ہم لامحدود سے آئے ہیں۔ اور وہیں جانا چاہئے۔ دِن اور رات وُہیں (پرماتما کے راستے) جانے کی کوشش کرنی چاہئے۔ جدھر سے آئے اُدھر ہی جانا چاہئے۔ یہ سنسار کچھ بھی نہیں۔ کچھ بھی نہیں۔ کچھ بھی نہیں۔

اسی آسِس تہ اسی آسوَ
اسی دور کرئ پتہ وَت
شوس سورہ نہ زیون تہ مرنُ
رَوس[2] سورہ نہ اتہ گت (۵)

ماضی میں ہم ہی تھے۔ اور مستقبل میں ہم ہی ہونگے۔ ہم ہی نے ہمیشہ سے دور کئے۔ شو کے واسطے جینا و مرنا کبھی ختم نہیں ہوگا۔ سورج کے لئے طلوع اور غروب ہونا بھی کبھی ختم نہیں ہوگا ؞

آیِس تہ سیودی گچھ تہ سیودی
سیدس ہول مہ کرم کیاہ
بہ تس[3] آسس آگرے وزی[4]
ویدِس تہ وندِس[5] کریم کیاہ (۶)

[1] لامحدود۔ بڑھاپا [2] سورج [3] واقف [4] واقف کو [5] پیاری

# واکھیہ للی شوری

اکوئی ادمکار یُس نابھ زرے
کومبئی برہمانڈس سوم گرسے
اکوئی منتر یُس ژِتس اکرے
تس ساس منتر کیاہ زان کرے (۱)

جس نے (برہمانڈ سے لیکر نابھستان تک) ادمکار کے ہی منتر کا دھارن کیا۔ اور اپنے آپ کو برہمانڈ کے برابر خیال کیا۔ جو اسی ایک منتر کے سار کو اپنے دل میں وچار کرے اُس کو ہزار ہا منتر کیا کریں گے ؛

ابھیاسی سوِیکاسُ لَے وتھوُ
گگنس سگُن میوُل سَمہ ژَرُٹا
شوُنہ گول تہ اناَمئے متوُ
یہ ہوُئ اپدیش چھوُی بَٹا (۲)

یوگ کے ابھیاس سے باہر کی تمام چیزیں لے ہوتی ہیں۔ یہ سب شوُنہ رُوپ دکھائی دیتا ہے۔ سوائے برہم کے اور کچھ باقی نظر نہیں آتا ہے۔ ہے منش یہی سچا اُپدیش ہے۔

آسا بول پرنم۔ ساسا
مہ مہنہ وا سا کھید ناہَے
یودوے شنکر بخش آسا
مکرِس ساسا ئل کیاہ پہے (۳)

داہنی تباہی سُنا کر برانگیختہ کر دیا۔ ایک روز لَلی شوری پتن سے پانی کا گھڑا بھر کر کندھے پر رکھ کر گھر کو لوٹ رہی تھی۔ دولھا میاں نے محض چھیڑ خانی کی وجہ سے مٹی کے گاگر پر سوٹی کی ایک ضرب رسید کر دی۔ برتن ٹوٹ کر چور چور ہو گیا۔ مگر پانی جم کر کاندھے پر جما رہا۔ لَلی شوری نے پانی گھر میں لاکر استعمال کیا جو بچا وہ کھڑکی سے باہر پھینک دیا۔ پانی کے گرنے کی دیر تھی۔ کہ وہاں ایک تالاب بن گیا۔ جو کئی صدیوں تک قایم رہا۔ اس واقعہ کے بعد لَلی شوری رُوحانیت کے سمندر میں غوطے کھاتی رہی۔ اور مدارج طے کرتی گئی۔ دُنیا و مافیہا سے بے خبر ہو کر مستانہ وار اپنے پاکیزہ خیالات کا اظہار واکھیوں کی صُورت میں کرتی رہی۔ ویدانت اور الوہیت کے اعلےٰ اصُول عام فہم زبان میں لوگوں کو سُناتی رہی۔ لَلی شوری کے کشف کمالات کے قصّے لاانتہا ہیں۔

آپ کا انتقال بیجبہاڑہ میں آپ کی جسم سے ایک شعلہ بُلند ہو کر خلا میں پھیل گیا۔ ہندو مسلمان دونوں آپ سے عقیدت رکھتے ہیں۔

# سوانحعمری للی شوری

للی شوری - للہ عارفہ تیرہویں صدی میں ہو گذری ہے - اس نیک نہاد دیوی کا جنم پانپور کے قریبی موضع سمپنڈر کے ایک برہمن گھرانے میں ہوا تھا۔ بچپن سے ہی اس میں غور و خوض کی عادت پائی جاتی تھی۔ سن بلوغیت کو پہونچ کر اس کی شادی موضع پانپور کے ایک برہمن نوجوان سے ہوئی۔ باوجود شادی شدہ ہونے کے اس دیوی نے برہمچارنی کی زندگی بسر کی۔ ساس اور پتی کے ہاتھوں اس نے کافی تکالیف برداشت کیں۔ اس کی ساس کافی بہتان تراشتی رہی۔ سسر کو اپنی بہو سے بدظن کرنیکے لئے ساس نے کافی ہتھکنڈے استعمال کئے۔ ساس ہر روز بہو کی تھالی میں ایک گول پتھر رکھ کر چاول پروسا کرتی تھی۔ تاکہ سسر کو یہ گمان ہو۔ کہ اس کی بہو بڑی پیٹو ہے۔ للی دیوی برتن مانجھ کر ہر روز اس پتھر کو ساس کے پاس چپکے سے رکھ چھوڑتی تھی۔ اور کبھی پر اس راز کا انکشاف نہ ہونے دیا۔ ایک روز اتفاقیہ طور پر سسر پر یہ بھید کھلا۔ للی دیوی پتن پر پانی بھرنے جا رہی ہے۔ اسکی ایک ہم عمر پڑوسن اس سے پوچھتی ہے کہو بہن! کل جو تمہارے ہاں ضیافت پکی تھی۔ خود تو خوب مزے سے کھاتے رہے سب مجھے پوچھا تک نہیں۔ للی شوری بولی۔ ہاں بہن۔ دعوت تو ضرور پکی تھی مگر "للہ غلہ؛ ٹھ ترلہ نہ زانہہ"۔ دعوت کوئی کھائے۔ تو میری بلا سے۔ للی کو گول پتھر سے کبھی چھٹکارا نہیں مل سکتا ہے۔ یہ گفتگو اس کے سسر نے سنی جو پتن پر سندھیا کر رہا تھا۔ وہ اس بات کی کھوج میں لگا اور جلدی ہی ساری حقیقت اس پر آشکارا ہو گئی۔ بیوی کو اس نے ڈانٹا۔ مگر اس سے ساس میں اپنی بہو کیلئے انتقام کی آگ اور بھی بھڑک اٹھی۔ اس نے اپنے لڑکے کو اپنی بہو کے خلاف

# تمہید

کشمیر جنت بے نظیر شروع ہی سے پوتر رشیوں، منیوں، مہا تسکیتوں اور دیویوں کا گھر چلا آیا ہے۔ اُن کی مقدس زندگیوں کے تواریخی حالات نے بہت حد تک اہلِ کشمیر کی زندگی پر کافی اثر ڈالا ہے۔ کشمیر میں رُوحانیت کی فضا انہی پوتر ہستیوں سے قایم ہے۔ آج کل ہم دیکھتے ہیں۔ کہ ہماری نئی پود رُوحانی فضا میں پلنے کا موقعہ کم پاتی ہے۔ اس کمی کو پورا کرنے کے لئے ہمیں بے حد ضرورت محسوس ہوئی کہ ایک ایسا سلسلہ قایم کیا جائے جس سے کہ ہمارے نوجوان کشمیر کے رُوحانیت کے شیدائیوں کے جیون چرتر سے بہرہ اندوز ہو جایا کریں۔ چنانچہ کشمیر کی للی شوری (المعروف لل دید) کی مختصر سی سوانح عمری ہم ناظرین کی خدمت میں پیش کرتے ہیں۔ ہمیں آشا ہے۔ کہ اس کا اثر نوجوانوں کے دِلوں پر رُوحانی کیف کے علاوہ علمی دلچسپی کا باعث بھی بنے گا۔ اگرچہ للی شوری کی سوانحعمری طبع ہو چکی ہے۔ لیکن وُہ فارسی زبان میں ہے۔ جس سے کہ عام لوگ خاص کر ہمارے نوجوان فایدہ نہیں اُٹھا سکتے ہیں۔ اس لئے ہم نے بڑی تحقیق کے بعد یہ رسالہ اُردو زبان میں تیار کیا ہے۔ اُمید ہے۔ کہ نکتہ چین اصحاب ہماری ان کوششوں کی داد دینگے۔ اور اپنے مُفید مشوروں سے ہمیں مُستفید بھی فرمائیں گے ❊

اس رسالہ میں للی شوری کے واکھیہ یعنی کلام کی پہلی قسط شایع کرتے ہیں اگلی اشاعتوں میں باقی حصے بھی قدردان اصحاب کی خدمت میں پیش کئے جائیں گے ❊

(مصنف)

# واکھیہ للی شوری

( اُردو ایڈیشن )

## جلد اول

اے۔ کے۔ وانچو۔

1996

پبلشرز :-

ٹرسٹ پبلشنگ ہاوس
حبہ کدل سرینگر

( بمرو کلا پریس سرینگر )

OM

# THE WISE SAYINGS

OF

# LALASHWARI

واکهیہ للي أيشوري

(URDU EDITION)

***Part I.***

BY

P. A. K. WANCHOO.

PUBLISHER

**Trust Publishing House.**

SRINAGAR.

---

پبلشرز
ٹرسٹ پبلیشنگ هاوس
حبہ کدل سرینگر کشمیر

1996.

1,000.

**Price As. 2.**